VISIONIAS

www.visionias.in

PT 365

Classroom Study Material

संस्कृति

JUNE 2016 – FEB 2017

NOTE: March 2017 to 15th May 2017 current affairs for PT 365 Culture will be updated on our website on third week of May 2017.

Copyright © by Vision IAS
All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

विषय सूची

1. नृत्य *8*

1.1. शास्त्रीय नृत्य 8

1.1.1. भारतीय शास्त्रीय नृत्य के बारे में 8

1.1.2. मोहिनीअट्टम 8

1.1.3. कुचिपुड़ी नृत्य 8

1.2. लोक एवं आदिवासी नृत्य 9

1.2.1. गोतिपुआ नृत्य (ओडिशा) 9

1.2.2. छऊ 9

1.2.3. सिक्किम के मठों में किया जाने वाला छाम नृत्य 9

1.2.4. बधाई नृत्य (बुंदेलखंड) 10

1.2.5. पंथी नृत्य (छत्तीसगढ़) 10

1.2.6. पुंगचोलम (मणिपुर) 10

1.2.7. चेराव (मिजोरम का बांस नृत्य) 10

1.2.8. थपेट्टा गुल्लू (आंध्र प्रदेश) 10

1.2.9. रऊफ (जम्मू-कश्मीर) 11

1.2.10 कुड नृत्य 11

1.2.11 जाबरो नृत्य 11

1.2.12. मयूर नृत्य 11

1.2.13. राथवा आदिवासी नृत्य (गुजरात) 11

1.2.14. गोवा का जागोर लोक नृत्य 11

1.2.15. याक नृत्य - अरुणाचल प्रदेश 12

1.2.16. कर्नाटक के लोक नृत्य 12

1.2.17. डोल्लू कुनिथा 12

1.2.18 गोरवा नृत्य 13

1.2.19. कराकट्टम-तमिलनाडु 13

1.2.20 देवरत्तम नृत्य 13

1.2.21.होजागिरि-त्रिपुरा 13

1.2.22. सम्मी नृत्य 13

1.2.23. लावा नृत्य 13

1.2.24. छपेली लोक नृत्य 14

2. संगीत *15*

2.1. पंचवाद्यम 15

2.2. बीण जोगी (हरियाणा) 15

2.3. मंगनियार (राजस्थान के लोक गायक) 15

2.4. पंडवानी (छत्तीसगढ़) 15

2.5. कनियन कूथु 16

VISION IAS

2.6. मोहन वीणा ___ 16

2.7. 'का बोम' ड्रम ___ 16

2.8. किराना घराना ___ 16

2.9. बाउल परम्परा ___ 17

3. चित्रकला ___ 18

3.1. थांगका चित्रकला ___ 18

3.2. कांगड़ा चित्रकला ___ 18

3.3. कलमकारी कला ___ 18

3.4. मिथिला पेंटिंग ___ 19

3.5. चित्रकला की बूँदी शैली ___ 19

3.6. नाथद्वारा पेंटिंग ___ 19

3.7. कोंडाणे गुफाओं में शैल चित्रों की खोज ___ 20

4. विविध कला शैलियां ___ 21

4.1. अल्पना लोक कला ___ 21

4.2. आदिवासी आदिविम्ब ___ 21

4.3. आंचलिक लोक कलाएं ___ 21

4.3.1. बहरूपिया ___ 21

4.3.2.कच्छी घोड़ी नृत्य ___ 21

4.4. जंगम जोगी ___ 22

4.5. चन्नापटना काष्ठकला ___ 22

4.6. काई सिलाम्बम ___ 22

4.7. कोलकल्ली तथा मरगम ___ 22

4.8.काठी सामू और कर्रा सामू ___ 22

4.9. सांगोड्डु ___ 22

4.10. रोगन कला ___ 23

4.11. स्टेचू ऑफ़ यूनिटी ___ 23

4.12. कनिष्क स्तूप ___ 23

4.13. कुटियट्टम ___ 23

4.14. बाजीगर (पंजाब के कलाबाज़) ___ 23

4.15.कलारीपयट्टु (केरल का मार्शल आर्ट) ___ 24

VISION IAS

4.16. बहुरूपिया (राजस्थान के स्वांग कलाकार) 24
4.17. थांग टा (मणिपुर का मार्शल आर्ट) 24
4.18. मलखंब (महाराष्ट्र) 24
4.19. नाडा कुश्ती 24
4.20. फुलकारी 25
4.21. ज़रदोजी 25
4.22. चेत्तीनाड सूती साड़ियाँ 25
4.23. तांगलिया बुनाई 25
4.24. बीदरी शिल्प कला 26
4.25. थेवा शिल्प कला 26
4.26. जोगी आदिवासी कला 26
4.27. कबड्डी विश्व कप 26
5. जनजातियाँ *27*
5.1. अरुणाचल प्रदेश की निशि जनजाति 27
5.2. टोडा जनजाति 27
5.3. असुर जनजाति 27
5.4. बोंडा जनजाति 27
5.5. सिद्दी जनजाति 28
5.6. जारवा जनजाति 28
5.7. नारिकुरावा जनजाति 28
5.8. मेघालय की खासी जनजाति 28
5.9. उड़ीसा की जुआंग जनजाति 29
5.10. हक्की पिक्की 29
6. मूर्ति कला और वास्तुकला *30*
6.1. ऑस्टेलिया ने चोरी की गई प्रतिमाएँ भारत को वापस की 30
6.2. अर्धनारीश्वर 30
6.3. फोर्ट सेंट जॉर्ज चेन्नई 30
6.4. आंध्र प्रदेश में बौद्ध अवशेष प्राप्त किए गए 30
6.5. योग-मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर 31
6.6. वडक्कुन्नाथन मंदिर 31

VISION IAS

6.7. मुजीरिस विरासत परियोजना ____ 32
6.8. बोध गया-आध्यात्मिक राजधानी ____ 32
6.9. अमरावती:आन्ध्र प्रदेश की नयी राजधानी ____ 33
6.10. प्राचीन ताम्र-पत्र पर उत्कीर्ण विषयवस्तु की व्याख्या ____ 33
6.11. चन्देस्वरर की चोल मूर्तिकला ____ 34
6.12. हुमायूँ का मकबरा ____ 34
6.13. तिरूमलई नायक महल ____ 35
6.14. सीढ़ीदार कुएं ____ 35
6.15. केम्पे गौडा काल का मंडप ____ 36
7. प्राचीन भारत ____ 37
7.1.विश्व की प्राचीनतम शैल चित्रकला पाई गई ____ 37
7.2. बुद्धवनम परियोजना ____ 37
7.3. तीन भारतीय स्थल यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल ____ 38
7.3.1 कंचनजंघा नेशनल पार्क (KNP), सिक्किम (कंचनजंघा बायोस्फीयर रिजर्व) ____ 38
7.3.2 चंडीगढ़ का कैपिटल कॉम्प्लेक्स ____ 39
7.3.3.नालंदा महाविहार (नालंदा विश्वविद्यालय), बिहार ____ 39
7.4. हरिकथा ____ 39
7.5. चीनी विद्वान जुआन झांग ____ 39
7.6. सिंधु घाटी सभ्यता का काल निर्धारण ____ 40
7.7. शुल्वसूत्र ____ 40
7.8. प्रागैतिहासिक शैल चित्रकला स्थल की खोज ____ 41
7.9. कर्नाटक में मिले कापालिकों से संबंधित दुर्लभ शिलालेख ____ 41
7.10. प्राचीन धरोहरों को लौटाया गया ____ 41
7.11. मोगाओ गुफाएँ ____ 42
8. कार्यक्रम एवं त्यौहार ____ 43
8.1 तेप्पोत्सवम ____ 43
8.2 अम्बुबाची महोत्सव ____ 43
8.3. मध्व नवमी महोत्सव ____ 43
8.4. साहित्य में 2016 का नोबेल पुरस्कार ____ 43
8.5. राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव ____ 44
8.6 राष्ट्रीय जनजातीय कार्निवल ____ 44

VISION IAS

8.7. जल्लीकट्टू 44

8.8. ओणम महोत्सव 45

8.9. वान्गाला महोत्सव मेघालय 45

8.10. नव वर्ष महोत्सव 45

8.11. लोसर महोत्सव लद्दाख 45

8.12. सजिबू चेइराओबा समारोह मणिपुर 46

8.13. मिजो के चप्चार कुट 46

8.14. नवकलेवर महोत्सव 46

8.15. रम्मन 46

8.16. अन्य त्योहार जो सुर्ख़ियों में रहे 47

8.17.हॉर्नबिल महोत्सव 47

8.18.ओडिशा-डोला जात्रा 47

8.19. भक्ति आंदोलन 47

9. सरकारी पहल 49

9.1. राष्ट्रीय स्मारक तथा पुरावशेष मिशन 49

9.2. अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की रक्षा 50

9.3 गांधी हेरिटेज साइट्स मिशन 50

9.4 स्वच्छ भारत-स्वच्छ स्मारक 50

9.5 केन्द्रीय संस्कृति सलाहकार बोर्ड 50

9.6. कलाकार पेंशन योजना और कल्याण कोष 51

9.7.साहित्य अकादमी 51

9.8. UNESCO का क्रिएटिव सिटी नेटवर्क 51

9.9. भारतवाणी पोर्टल का शुभारंभ 51

9.10. ज्ञानपीठ पुरस्कार 52

9.11. मैग्सेसे पुरस्कार 52

10. पर्यटन और स्थल 53

10.1. पहला राष्ट्रीय पर्यटन सर्किट 53

10.2. एशिया में सर्वश्रेष्ठ 25 संग्रहालयों में शामिल भारतीय संग्रहालय 54

10.3. बेट द्वारका दर्शन सर्किट 55

11. व्यक्तित्व और व्यक्ति 56

VISION IAS

11.1. कनक मूर्ति 56

11.2. चैतन्य महाप्रभु 56

11.3. राष्ट्रीय युवा दिवस 56

11.4. एम एस सुब्बुलक्ष्मी 56

11.5. श्री रामानुज की 1000वीं जन्म शताब्दी 57

11.6. महाश्वेता देवी 57

11.7. तिरोत सिंग 58

11.8. पंडित दीन दयाल उपाध्याय की जन्म शताब्दी 58

11.9. सरदार वल्लभ भाई पटेल के योगदान 58

11.10. पंचतीर्थ : डॉ. बी. आर. अम्बेडकर 58

11.11. तिरुवल्लुवर 59

11.12. राजाजी-सी. राजगोपालाचारी 59

11.13. गया प्रसाद कटियार 59

11.14. भारतविद पुरस्कार: प्रोफेसर यू लांग यू 60

11.15. ओग्येन त्रिनले दोरजी 60

11.16. सावित्रीबाई फुले 60

11.17. गुरु गोबिन्द सिंह की 350 वीं जयंती 61

11.18. अंडमान जेल में वीर सावरकर की पट्टिका 61

11.19. रानी गैडिंल्यू 62

VISION IAS

1. नृत्य

(DANCES)

1.1. शास्त्रीय नृत्य

(Classical Dances)

1.1.1. भारतीय शास्त्रीय नृत्य के बारे में

(About Indian Classical Dance)

- भारतीय शास्त्रीय नृत्य, धार्मिक हिंदू संगीत नाट्य शैलियों में निहित विभिन्न प्रदर्शन कलाओं के लिए एक 'अम्ब्रेला टर्म' है। इनके सिद्धांत एवं क्रियाओं को संस्कृत मूलग्रंथ नाट्य शास्त्र में देखा जा सकता है।
- प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, नृत्य को **तीन रूप: नाट्य, नृत्य और नृत्त** को समाहित करने वाला माना जाता है।
- ✓ नाट्य, नाटकीय तत्व को विशिष्ट रूप से दर्शाता है। वर्तमान में कथकली जैसी नृत्य-नाटक शैलियों के अतिरिक्त अधिकांश नृत्य शैलियां इस रूप को महत्त्व नहीं देती हैं।
- ✓ नृत्य मूलतः अभिव्यंजक होता है तथा यह विशेष रूप से किसी विषय या विचार के अर्थ को व्यक्त करने हेतु प्रस्तुत किया जाता है।
- ✓ दूसरी तरफ नृत्त, शुद्ध नृत्य है। इसमें शरीर की गतियां (movements) किसी भी भाव को अभिव्यक्त नहीं करती हैं, न ही वे किसी भी अर्थ को व्यक्त करती हैं।
- नृत्य और नाट्य को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए नर्तक को **नवरस** को संचारित करने हेतु प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। ये नवरस हैं: श्रृंगार, हास्य, करुण, वीर, क्रोध (रौद्र), भय (भयानक), बीभत्स, अद्भुत और शांत।

1.1.2. मोहिनीअट्टम

(Mohiniyattam)

- मोहिनीअट्टम केरल की शास्त्रीय एकल नृत्य शैली है। यह नृत्य महिलाओं द्वारा किया जाता है।
- इसकी 'मोहिनी' के नृत्य के रूप में व्याख्या की जाती है। भस्मासुर को मारने हेतु भगवान विष्णु द्वारा मोहिनी के रूप में नारी अवतार लिया गया था।
- केरल की इस नृत्य शैली को त्रावणकोर राजाओं, महाराजा कार्तिक तिरुनल और उनके उत्तराधिकारी महाराजा स्वाती तिरुनल (18 वीं -19 वीं शताब्दी) द्वारा वर्तमान के शास्त्रीय स्वरूप में संरचित किया गया था।
- मोहिनीअट्टम के सन्दर्भ, 1709 में मज़ामगलम नारायणन नंपूतिरी द्वारा लिखे गए व्यवहारमाला तथा बाद में महान कवि कुंजन नामबीर द्वारा लिखे गए घोषयात्रा से प्राप्त किए जा सकते हैं।
- इस नृत्य की गतियां (Movements) नंगिआर कुथु तथा महिला लोक नृत्य काइकोट्टिकली एवं तिरुवतिराकली से ली गयी हैं।
- इस नृत्य में हाथों द्वारा 24 मुद्रायें की जाती हैं। ये मुद्रायें मुख्य रूप से हस्तलक्षण दीपिका से अपनायी गई हैं। कथकली नृत्य में हस्तलक्षण दीपिका ग्रन्थ का अनुसरण किया जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ मुद्रायें नाट्यशास्त्र, अभिनयदर्पण और बलरामभारतम से भी ली गयी हैं।
- बिना किसी आकस्मिक झटके या त्वरित छलांग के, आकर्षक, लहराते शरीर की गतियां इसकी विशेषता है।
- यह अभिनय पर जोर देता है, जिसमें नर्तकी रचनाओं में मौजूद चरित्र और भावनाओं से तादात्म्य स्थापित करती है तथा उसे हाथों की मुद्राओं एवं चेहरे के भावों के माध्यम से व्यक्त करती है।

1.1.3. कुचिपुड़ी नृत्य

(Kuchipudi Dance)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- कुचिपुड़ी नृत्य ने उस समय गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकार्ड में स्थान बनाया जब पूरे विश्व से 6117 नर्तकों ने विजयवाड़ा जिले में एक साथ एक कार्यक्रम में प्रदर्शन किया।

VISION IAS

कुचिपुड़ी नृत्य क्या है?

- इस नृत्य का उद्भव आधुनिक आंध्र प्रदेश राज्य के कृष्णा जिले के कुचिपुड़ी गांव में हुआ था। 17वीं सदी में वैष्णव कवि सिद्धेन्द्र योगी द्वारा इसकी कल्पना की गई थी।
- भगवान गणेश की वंदना के साथ इसका आरंभ होता है जिसके बाद नृत्त (गैर-कथात्मक शुद्ध नृत्य), नृत्य (कथात्मक नृत्य) और नाट्य होता है।
- इस नृत्य का प्रदर्शन कर्नाटक संगीत पर किया जाता है जिसमें मृदंगम, वायलिन, बांसुरी और तम्बूरा जैसे संगीत वाद्ययंत्रों का प्रयोग कर गायक का साथ दिया जाता है।

1.2. लोक एवं आदिवासी नृत्य

(Folk and Tribal Dances)

1.2.1. गोतिपुआ नृत्य (ओडिशा)

[Gotipua Dance (Odisha)]

- गोतिपुआ, भगवान जगन्नाथ की प्रशंसा में किये जाने वाले ओडिसी लोकनृत्य की एक पारंपरिक नृत्य शैली है।
- शाब्दिक रूप में गोतिपुआ का उड़िया में अर्थ होता है:- 'एक लड़का'। लेकिन यह नृत्य समूहों में किया जाता है।
- नृत्य कला की इस शैली का उद्भव 16वीं सदी के प्रारंभ में माना जाता है।
- जब महरी (मंदिरों में महिला नर्तकी) नृत्य का ह्रास होने लगा, तो पुरुष नर्तकों ने महिला नर्तकियों के जैसे ही वस्त्रों को धारण कर इस परंपरा को जारी रखा।
- गोतिपुआ में नर्तक स्वयं गाते हैं।

1.2.2. छऊ

(Chhau)

- छऊ नृत्य भारत के सबसे प्रसिद्ध आदिवासी मार्शल नृत्यों में से एक है। इस नृत्य को मुखौटे के साथ प्रदर्शित किये जाने के कारण ही इसका नाम छऊ पड़ा (छाया का अर्थ मुखौटा होता है)।
- छऊ नृत्य पूर्वी भारत की एक परंपरा है। इस नृत्य में महाभारत एवं रामायण सहित अन्य महाकाव्यों, स्थानीय लोककथाओं और काल्पनिक विषयों से संबंधित प्रसंगों का अभिनय किया जाता है।
- इसकी तीन विशिष्ट शैलियों की उत्पत्ति सराइकेला, पुरुलिया और मयूरभंज के क्षेत्रों में हुई है। पहली दो शैलियों में मुखौटे का उपयोग किया जाता है।
- छऊ नृत्य क्षेत्रीय त्योहारों से घनिष्ठता से सम्बद्ध है, विशेषकर वसंत त्यौहार चैत्र पर्व से।
- इस नृत्य में तेज धुन और तीव्र ध्वनि उत्पन्न करने वाले ढोल और मरुई जैसे वाद्यों का प्रयोग होता है।

1.2.3. सिक्किम के मठों में किया जाने वाला छाम नृत्य

(Chaam of Sikkim Monasteries)

- छाम लामाओं के द्वारा त्योहारों के दौरान विभिन्न मठों पर प्रदर्शित किया जाने वाला एक आनुष्ठानिक नृत्य है। रंगीन मुखौटों का प्रयोग इसकी एक प्रमुख विशेषता है।
- रंगीन मुखौटों के साथ पारंपरिक वस्त्रों से सुसज्जित लामाओं द्वारा किए जाने वाले छाम नृत्य में विशेष रूप से प्रयोग होने वाली तलवारें इस नृत्य की विशेष पहचान हैं। ढोल की ध्वनि पर कूद और छलांग, सींग और संगीत इस नृत्य के विशेष आकर्षण हैं।
- छाम नृत्य के विभिन्न रूप प्रचलित हैं, जैसे- पौराणिक शेर को समर्पित सिंघी छाम तथा याकों को समर्पित याक छाम।
- **सिंघी छाम**

✓ यह सिक्किम का एक मुखौटा नृत्य है। इसमें **स्नो लायन** (snow lion) का चित्रांकन किया जाता है। स्नो लायन इस राज्य का सांस्कृतिक प्रतीक है।

✓ नर्तक स्नो लायन का रूप धारण करते हैं। गुरु पद्मसंभव द्वारा स्नो लायन को इस क्षेत्र का संरक्षक देवता घोषित किया गया था।

VISION IAS

1.2.4. बधाई नृत्य (बुंदेलखंड)

[Badhai Dance (Bundelkhand)]

- बधाई, मध्य प्रदेश तथा विशेष रूप से बुंदेलखंड क्षेत्र में प्रचलित सर्वाधिक लोकप्रिय लोक नृत्यों में से एक है।
- बधाई नृत्य शीतला देवी को धन्यवाद देने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए किया जाता है।
- इस नृत्य के अंतर्गत किये जाने वाले धन्यवाद अथवा बधाई के इस विशेष प्रदर्शन के कारण ही इस नृत्य का नाम बधाई पड़ा है।
- बधाई नृत्य में पशु भी हिस्सा लेते हैं और कई गांवों में घोड़ी के द्वारा भी यह नृत्य प्रदर्शित किया जाता है।
- इस नृत्य में ढपला, टिमकी, रंतूला, लोटा और अलगोजा जैसे वाद्ययंत्रो का प्रयोग होता है।

1.2.5. पंथी नृत्य (छत्तीसगढ़)

[Panthi Dance (Chhattisgarh)]

- यह नृत्य शैली सतनामी समुदाय में प्रचलित है। इसका प्रदर्शन अत्यंत भावपूर्ण ढंग से मधुर संगीत की धुनों पर किया जाता है।
- यह मुख्य रूप से पुरुष नर्तकों द्वारा संपन्न किया जाता है। इस नृत्य के प्रदर्शन हेतु शरीर के अधिक लचीलेपन तथा शारीरिक क्षमता की आवश्यकता होती है क्योंकि इस नृत्य में अनेक चुनौतीपूर्ण मुद्राएँ सम्मिलित होती हैं।
- कलाकार इस अवसर के लिए विशेष रूप से स्थापित किये गए एक जैत खम्ब (Jaitk-हम्ब) के चारों ओर नृत्य करते हैं। इस अवसर पर गाया जाने वाला गीत उनके आध्यात्मिक प्रमुख का गुणगान करते हुए कबीर, दादू आदि के द्वारा प्रतिपादित निर्वाण संबधी दर्शन को व्यक्त करता है।
- इस नृत्य में मृदंग, झांझ और ढोल जैसे पारंपरिक वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

1.2.6. पुंगचोलम (मणिपुर)

[Pungcholom (Manipur)]

- यह नृत्य कला मार्शल आर्ट और पारंपरिक मेइबी जागोई नृत्य के सम्मिलन से विकसित हुई है। यह सत्रहवीं सदी से चली आ रही परंपरा का अंग है।
- पगड़ी, धोती और तुलसी के बीज से निर्मित माला इस नृत्य में धारण की जाने वाली पारंपरिक वेशभूषा के अंग होते हैं।
- यह मणिपुर में विवाह, उपासना और यहां तक कि अंत्येष्टि के दौरान भी किया जाता है।
- एक पुंग, (ढोल के लिए मणिपुरी नाम), प्रत्येक नर्तक के गले में लटका हुआ होता है। एक बार नृत्य के लय में आने के उपरांत नर्तक ऊँची कूद लगाते हैं और हवा में उछलते हैं।

1.2.7. चेराव (मिजोरम का बांस नृत्य)

[Cheraw (Bamboo Dance of Mizoram)]

- यह माना जाता है कि इस नृत्य का अस्तित्व पहली शताब्दी ईस्वी से ही है, जब मिजो लोग वर्तमान मिजोरम में अपने प्रवास से पूर्व चीन के यूनान प्रान्त में निवास करते थे।
- एक दूसरे की ओर मुख करके बैठे पुरुष क्षैतिज और तिरछे रूप से लम्बे बांस के डंडे हाथ से पकड़ते हैं। आकर्षक धुन पर ये बांस के डंडे लयबद्ध रूप से समीप और दूर ले जाये जाते हैं।
- पुआनचेई (Puanchei) कावरचेई (Kawrchei) वकिरिया (Vakiria) तथा थिहना (Thihna) जैसी रंगीन मिजो वेशभूषा में लड़कियां कर्णप्रिय धुन पर लयबद्ध रूप से बांस के अन्दर और बाहर नृत्य करती हैं।
- यह नृत्य अब लगभग सभी उत्सवों के दौरान किया जाता है। घंटा और ढोल इस नृत्य के प्रमुख वाद्ययंत्र हैं।

1.2.8. थपेट्टा गुल्लू (आंध्र प्रदेश)

[Thapetta Gullu (Andhra Pradesh)]

- यह आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम जिले की एक नृत्य शैली है।
- इस नृत्य में दस से अधिक लोग स्थानीय देवी की स्तुति में गीत गाते हुए भागीदारी करते हैं।
- नर्तक अपनी गर्दन में लटक रहे ढोल का उपयोग विविध लयों को उत्पन्न करने में करते हैं।
- कमर के चारों ओर लटकती खनकती घंटिया नर्तकों की वेशभूषा के विशिष्ट अंग होते हैं।
- परंपरागत रूप से इस नृत्य का प्रदर्शन केवल पुरुषों के द्वारा किया जाता है।
- इस नृत्य की विषयवस्तु रामायण और महाभारत से ली गई है।

VISION IAS

1.2.9. रऊफ (जम्मू-कश्मीर)

[RAUF (J&K)]

- यह कश्मीर के सबसे लोकप्रिय पारंपरिक नृत्यों में से एक है।
- इस खूबसूरत नृत्य शैली का प्रदर्शन लगभग सभी उत्सवों और विशेष रूप से ईद और रमजान के मौके पर किया जाता है।
- यह नृत्य दो पंक्तियों में एक-दूसरे की ओर अभिमुख सुन्दर वेशभूषा में सुसज्जित महिलाओं के समूह द्वारा किया जाता है।
- इस नृत्य में सरल कदमताल का प्रयोग होता है जिसे स्थानीय भाषा में चकरी कहा जाता है।
- नृत्य अक्सर अच्छे मौसम का जश्न मनाने के लिए बसंत के मौसम में किया जाता है।

1.2.10 कुड नृत्य

(KUD dance)

- यह **जम्मू-कश्मीर** की मध्य पर्वत श्रृंखलाओं की एक लोकप्रिय नृत्य शैली है।
- इसका प्रदर्शन राज्य में सबसे ज्यादा पूजे जाने वाले देवताओं में से एक - **लोक के देवता** के सम्मान में किया जाता है।
- 20 से 30 सदस्य इस नृत्य का एक साथ प्रदर्शन कर सकते हैं।

1.2.11 जाबरो नृत्य

(Jabro Dance)

- यह **लद्दाख क्षेत्र** की उच्च पहाड़ियों में तिब्बती मूल के खानाबदोश लोगों का एक सामुदायिक नृत्य है।
- यह लोसर (तिब्बती नव वर्ष त्योहार) समारोह के भाग के रूप में पुरुषों और महिलाओं द्वारा किया जाता है।
- संगीत वाद्ययंत्रों में शामिल हैं - बांसुरी और बांधिया (गिटार की तरह तांत या तार वाला वाद्य यंत्र)
- प्रदर्शन कम गति के साथ शुरू होता है जिसकी गति धीरे-धीरे बढ़ती जाती है और विशेष रूप से चांदनी रात में घंटों इसका प्रदर्शन किया जाता है।

1.2.12. मयूर नृत्य

(Mayur Dance)

- यह नृत्य उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र में लोकप्रिय है।
- मयूर या मोर नृत्य राधा और कृष्ण के प्रेम संदेशों पर आधारित है।
- एक संक्षिप्त वियोग की स्थिति में व्यथित राधा मयूर के रूप में ही कृष्ण की छवि देख कर स्वयं को सांत्वना देती हैं।
- अंततः वह राधा के आत्म निवेदन से प्रभावित होकर मयूर के छद्म वेश में स्वयं ही उपस्थित हो कर प्रिय राधा के साथ नृत्य में भागीदारी करते हैं।

1.2.13. राथवा आदिवासी नृत्य (गुजरात)

[Rathwa Tribal Dance (Gujarat)]

- गुजरात के दक्षिणी भाग के पहाड़ी क्षेत्र रथ-विस्तार में निवास करने वाले राथवा द्वारा राथवा नि घेर नृत्य का प्रदर्शन होली के अवसर पर किया जाता है।
- घेर (संगीत के साथ नृत्य) का प्रदर्शन धुलेंडी के दिन आरंभ होता है, जो वास्तव में 'रंगीन धूलों के उड़ने का दिन' होता है।
- पुरुष और महिला दोनों एक साथ 20 या 25 के समूह में नृत्य करते हैं।
- सभी राथवा नृत्य जो विभिन्न अवसरों पर किये जाते हैं, मौसम चक्र के साथ संबद्ध होते हैं। राथवा नि घेर को रंगीन और शानदार नृत्य के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

1.2.14. गोवा का जागोर लोक नृत्य

(Jagor folk dance of Goa)

- यह हिंदुओं और ईसाइयों द्वारा संयुक्त रूप से प्रदर्शित की जाती है। यह गोवा की एक नृत्य-नाटिका है जो किसी सतत कथा पर आधारित नहीं होती है।
- जागोर का शाब्दिक अर्थ **"जागरण"** होता है। यह दृढ़ विश्वास है कि रात भर का प्रदर्शन वस्तुतः वर्ष में एक बार देवताओं को जगाता है और वे पूरे वर्ष गांव की रखवाली के लिए जागते रहते हैं।
- **पर्णी जागोर** जोकि एक प्राचीन मास्क डांस (मुखौटा नृत्य) है, मुख्यतः गोवा का एक नाटक है। अच्छी तरह से तैयार की गई चित्रित लकड़ी के मास्क का प्रयोग, विभिन्न पशुओं, पक्षियों, अलौकिक शक्ति, देवताओं, राक्षसों और सामाजिक पात्रों को प्रदर्शित करते हुए पर्णी परिवारों द्वारा इसका प्रदर्शन किया जाता है।
- **गौडा जागोर**, सामाजिक जीवन की एक छाप है जो मानव व्यक्तित्व की सभी मौजूदा मनोदशाओं और रंगों को प्रदर्शित करता है।

VISION IAS

- इसका प्रदर्शन गोवा के लोक वाद्ययंत्र नगाड़ा/दोब, घुमट, मदाले (Nagara/Dobe, Ghumat, Madale) आदि का प्रयोग कर किया जाता है।

1.2.15. याक नृत्य - अरुणाचल प्रदेश

(Yak Dance-Arunachal Pradesh)

- याक नृत्य अरुणाचल प्रदेश की बौद्ध जनजातियों (महायान संप्रदाय) के प्रसिद्ध मुखौटा नृत्यों में से एक है।
- इसका प्रदर्शन लोसर महोत्सव के दौरान किया जाता है।
- व्यक्तियों द्वारा याक की वेशभूषा एवं मुखौटे पहने जाते हैं और वे याक का सम्मान करने के लिए याक नृत्य का प्रदर्शन करते हैं।
- मुखौटा पहने हुए नर्तक उस परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधित्व करतें हैं जिसने लोकमान्यता के अनुसार कई वर्ष पूर्व जादुई पक्षी की सहायता से याक की खोज की थी।
- याक को धन और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है।

1.2.16. कर्नाटक के लोक नृत्य

(Folk Dances of Karnataka)

- गणतंत्र दिवस पर कर्नाटक राज्य की झांकी में राज्य के लोक नृत्यों का प्रदर्शन किया गया।

1.2.17. डोल्लू कुनिथा

(Dollu Kunitha)

- **डोल्लू कुनिथा, कुनिथा नृत्य की एक शैली है। इसका एक अन्य प्रकार सुग्गी है।**
- यह नृत्य फसल के मौसम के दौरान व्यापक रूप से प्रदर्शित किया जाता है।
- मुख्य रूप से **गड़रिया समुदाय** (जिसे **कुरुबा** के रूप में जाना जाता है) द्वारा प्रदर्शित किया जाने वाला यह नृत्य नगाड़ों की धुन पर किया जाता है।
- इस नृत्य में प्रयोग किये जाने वाले गीतों में आम तौर पर धार्मिक और युद्ध उत्साह निहित होता है।
- बड़े आकार वाले ढोल रंगीन कपड़ों से सजाये जाते हैं जिसे पुरुष अपनी गर्दन में लटकाते हैं।
- पैरों की त्वरित और हल्की गति पर मुख्य जोर दिया जाता है।
- डोल्लू कुनिथा कर्नाटक के डोडावासी (dodavāsīs) के धार्मिक नृत्यों का एक भाग है।

1.2.17.1. बयालता नृत्य

(Bayalata Dance)

- यह दक्षिणी कर्नाटक का एक लोक नृत्य है जो फसल कटाई मौसम के अंत को इंगित करता है।
- यह नाटक और संवाद को सम्मिलित करने वाला एक धार्मिक नृत्य है।

1.2.17.2. यक्षगान नृत्य

(Yakshagana Dance)

- यक्षगान नृत्य और नाटक का मिश्रण है।
- रामायण, महाभारत महाकाव्यों और पुराणों से चित्रित कथाओं को मंच पर प्रदर्शित किया जाता है।
- एक कथावाचक कहानी कहता है और साथ ही संगीतकारों द्वारा पारंपरिक वाद्ययंत्र बजाए जाते हैं एवं अभिनेताओं द्वारा कहानी का अभिनय किया जाता है।

1.2.17.3. नागमंडल नृत्य

(Nagamandala Dance)

- यह दक्षिणी कर्नाटक के क्षेत्रों में सम्पन्न किया जाने वाला रात्रिपर्यन्त चलने वाला अनुष्ठान होता है।
- इसमें जनन क्षमता का प्रतीक माने जाने वाले नागों को प्रसन्न करने का पारंपरिक कर्मकांड समाविष्ट होता है।
- यह नृत्य रूप पुरुष नर्तकों (जिन्हें वैद्य कहा जाता है) द्वारा प्रदर्शित किया जाता है, जो मादा सर्पों (नागकन्याओं) जैसी वेषभूषा धारण करते हैं।
- नर्तक पवित्र भूमि पर चित्रित की गई अल्पना, जो सर्प आत्मा का प्रतिनिधित्व करती है, के चारों ओर नृत्य करते हैं।

VISION IAS

1.2.18 गोरवा नृत्य

(Gorava Dance)

- गोरवा नृत्य या 'गोरवारा कुनिता' उत्तरी कर्नाटक क्षेत्र में लोकप्रिय नृत्य शैली है।
- इसका प्रदर्शन गोरवा जनजाति द्वारा किया जाता है जो शैव सम्प्रदाय से सम्बंधित हैं।
- गोरवा गवैया जनजाति हैं जो गहरे धार्मिक मूल्यों की कहानियों का वर्णन करते हैं।
- नृत्य में प्रयुक्त सामग्री - एक हाथ में छोटे डोलू, दूसरे में बांसुरी, भालू के बाल से बनी टोपी आदि।

1.2.19. कराकट्टम-तमिलनाडु

(Karakattam-Tamil Nadu)

- करागम के रूप में भी पहचाने जाने वाले इस लोकप्रिय लोक नृत्य की उत्पत्ति तंजावुर से हुई और वहां से यह समीपवर्ती क्षेत्रों में प्रसारित हुई।
- यह अगस्त के महीने में संपन्न किया जाने वाला एक कर्मकांडीय नृत्य है जिसमें कलाबाजी के करतब सम्मिलित होते हैं। यह स्वास्थ्य और वर्षा की देवी मरिअम्मन के प्रति समर्पित होता है।
- इसे एक व्यक्ति या दो व्यक्तियों द्वारा किया जाता है।

1.2.20 देवरत्तम नृत्य

(devarattam Dance)

- यह कंबला नायक समुदाय द्वारा प्रस्तुत किया जाने वाला तमिलनाडु का लोक नृत्य है।
- देवरत्तम का शाब्दिक अर्थ है "देवताओं का नृत्य" और लोकप्रिय धारणा यह है कि कंबला नायक समुदाय के सदस्य देवताओं या देवों के वंशज हैं।
- सम्मिलित संगीत वाद्ययंत्र - उरूमी (ड्रम की तरह दोहरे सिरे वाला वाद्य यंत्र), लंबी बांसुरी।

1.2.21.होजागिरि-त्रिपुरा

(Hojagiri-Tripura)

- यह त्रिपुरी लोगों के रियांग कबीले द्वारा किया जाने वाला एक लोक नृत्य है।
- यह होजागिरि त्योहार (लक्ष्मी पूजा) के दौरान सम्पन्न किया जाता है। लक्ष्मी पूजा, दुर्गा पूजा के बाद आने वाली पूर्णिमा तिथि को आयोजित की जाती है।
- यह नृत्य केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है जबकि पुरुष सदस्य गायन एवं संगीत वाद्ययंत्र का वादन करते हैं।
- नर्तकियाँ बलिंग, बेंत की बनी चावल की सफाई करने वाली विस्तृत वृत्ताकार वस्तु, घड़े या कलश, बोतल, घरेलू पारंपरिक दीपक, साधारण थाली और रूमाल जैसी रंगमंच सामग्रियों का उपयोग करती हैं।

1.2.22. सम्मी नृत्य

(Sammi Dance)

- यह पंजाब का एक लोक नृत्य है। यह नृत्य पंजाबी जनजातीय महिलाओं द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।
- नर्तकियां चमकीले रंग के कुर्ते, लहंगे तथा चांदी के आभूषण पहनती हैं।

1.2.23. लावा नृत्य

(Lava Dance)

- यह लक्षद्वीप का पारंपरिक लोक नृत्य है।
- यह आम तौर पर पुरुष सदस्यों द्वारा किया जाता है (उनमें से कुछ ड्रम लिए रहते हैं)।

VISION IAS

- नर्तक लाल पतलून, कमर के आस-पास सफेद स्कार्फ, काले और सफेद हेड गियर (जिसे स्थानीय रूप से 'Bolufeyle' नाम से जाना जाता है) पहनते हैं।
- यह नृत्य मालदीव के लोक नृत्य- 'Maldive Bileh dhafi negun' के समान है।

1.2.24. छपेली लोक नृत्य

(Chhapeli Folk Dance)

- यह उत्तराखंड के कुमाऊं का लोक नृत्य है।
- यह क्रमशः प्रेमी और प्रेमिका के रूप में पुरुष और महिला द्वारा साथ-साथ किया जाता है।
- यह विभिन्न वाद्य यंत्रों जैसे हर्का, मंजीरा और बांसुरी के संगीत की धुन पर किया जाता है।

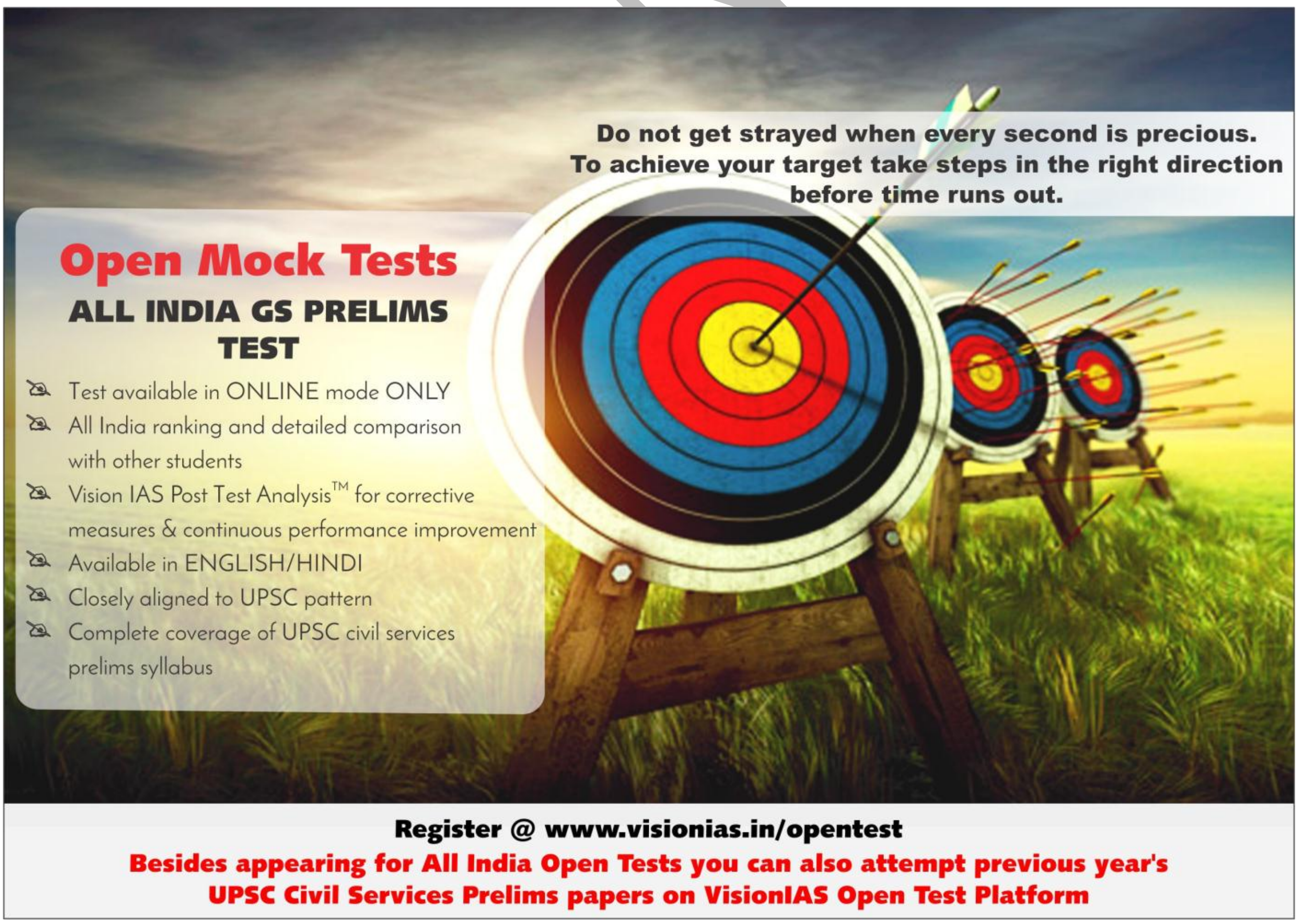

2. संगीत

(MUSIC)

2.1. पंचवाद्यम

(Panchavadyam)

- पंचवाद्यम का सामान्य अर्थ होता है- पांच वाद्ययंत्रों की एक ऑर्केस्ट्रा। यह मंदिर कला का एक रूप है, जिसका विकास केरल में हुआ है।
- इसके पाँच उपकरणों में से चार -- तिमिला (timila,), मद्दलम (maddalam), इलाथलम (ilathalam) और इदक्का (idakka) – थाप देकर बजाने वाले यंत्र हैं, जबकि पांचवा अर्थात कौम्बू (kombu) फूंक कर बजाया जाने वाला वाद्ययंत्र है।
- पंचवाद्यम पिरामिड जैसा एक लयवद्ध ध्वनि समूह है जिसकी आवाज लगातार बढ़ती जाती है। इसकी थाप बीच-बीच में आनुपातिक रूप से घटती भी है।
- ये वाद्य किसी धार्मिक अनुष्ठान से जुड़े नहीं हैं और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें कलाकार अपनी रूचि के अनुसार थाप देकर तिमिला, मद्दलम और इडक्का की ध्वनियों में बदलाव कर सकता है।

2.2. बीण जोगी (हरियाणा)

[Been Jogi (Haryana)]

- जोगी हरियाणा के पारंपरिक लोक गायक हैं जो अपने लोकगीत और संस्कृति के कई पहलुओं को प्रतिबिंबित करते हैं।
- वे उत्कृष्ट गाथा गीतों, भक्ति गीतों, कहानियों, कविताओं और कुछ सांत्वना गीतों का भी गायन करते हैं।
- उनकी कला मरणासन्न है तथा इसके विलुप्त होने का भी खतरा है।
- वे बीन के माध्यम से अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं, जिसे सपेरों के द्वारा भी प्रयोग किया जाता है।
- कलाकार सामान्यतः संतों या योगियों के समान भगवा वस्त्र पहनते हैं।

2.3. मंगनियार (राजस्थान के लोक गायक)

[Manganiar (folk singers of Rajasthan)]

- मंगनियार पश्चिमी राजस्थान के मुख्यतः तीन जिलों अर्थात् जोधपुर, बाड़मेर और जैसलमेर के ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाला एक छोटा सा आदिवासी समुदाय है।
- उनके गीत रेगिस्तान के एक मौखिक इतिहास के रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित किए जाते हैं।
- इस समुदाय द्वारा बजाया जाने वाला धनुषाकार वाद्ययंत्र कमैचा वस्तुतः स्थानीय सामग्री से निर्मित होता है और देखने में इसकी संरचना सरल और अधूरी सी जान पड़ती है, किन्तु इसके द्वारा उत्पन्न किए जाने वाले संगीत की प्रकृति अत्यंत जटिल होती है।
- इसमें संगीत उत्पन्न करने के लिए मुख्य तार के अतिरिक्त सहायक तार या ड्रोन तार भी होता है जिसे झरे (Jhare) या झरे-की-तार (Jhare-ke-taar) भी कहा जाता है, जो वाद्य यंत्र के मुख्य भाग पर आश्रित होता है तथा यह अधिक ध्वनि उत्पन्न करता है।
- इनके द्वारा प्रयुक्त अन्य उपकरणों में ढोलक और खड़ताल शामिल हैं।
- मंगनियार के द्वारा कल्याणी, कमायची आदि रागों को प्रस्तुत किया जाता है जिनकी हमारे शास्त्रीय संगीत से बहुत कम समानता है।

2.4. पंडवानी (छत्तीसगढ़)

[Pandavani (Chhattisgarh)]

- यह छत्तीसगढ़ में प्रचलित एक लोक गीत है जिसमें पांडवों की कहानी का वर्णन किया जाता है।
- परंपरागत रूप से यह पुरुषों द्वारा प्रदर्शित किया जाता था, लेकिन अब महिलाएं भी इसका प्रदर्शन करती हैं।
- इसमें एक मुख्य कलाकार और कुछ सहायक गायक और संगीतकार होते हैं।
- मुख्य कलाकार एक के बाद एक प्रकरण प्रस्तुत करता है तथा परिदृश्य में पात्रों को अपने अभिनय के माध्यम से जीवंत करता चला जाता है, कभी-कभी वह बीच में नृत्य भी प्रस्तुत करता है।
- प्रदर्शन के दौरान वह अपने हाथ में पकड़े हुए इकतारे की लय पर अपना गीत प्रस्तुत करता है।
- पंडवानी गायन की दो शैलियाँ प्रचलित हैं: वेदमति और कापालिक।

VISION IAS

2.5. कनियन कूथु

(Kaniyan Koothu)

- कनियन कूथु तमिलनाडु में मंदिर त्योहारों के अवसर पर प्रदर्शित की जाने वाली एक पारंपरिक कला है जिसमे केवल पुरुष भाग लेते हैं।
- कनियन कूथु नाम वस्तुतः इसके कलाकारों के समुदाय कनियन से लिया गया है। कनियन एक अनुसूचित जनजाति है।
- कनियन कूथु कम से कम 300 वर्ष पुरानी कला है एवं 17वीं शताब्दी से इसके संकेत मिलते हैं।

कनियन जनजाति

- कनियन तमिलनाडु के तिरुनेलवेली जिले में रहने वाला एक आदिवासी समुदाय है।
- इनकी आबादी 750 से भी कम है और वर्तमान में केवल लगभग 200 लोग ही इस कला का प्रदर्शन करते हैं।

वाद्य यंत्र

- वाद्य यंत्रः मगुदम या फ्रेम ड्रम मुख्य वाद्य यंत्र है। इसमें वृत्ताकार फ्रेम पर नए चमड़े को इमली के बीज से बने गोंद से चिपकाकर स्थायित्व दिया जाता है।
- मुख्य गायक अन्नावी (annavi) कहलाता है जो मंडली का नेतृत्व भी करता है। सामान्यतः नृत्य मंडली में छः सदस्य होते हैं।
- यह कला केवल मनोरंजन के लिए नहीं है बल्कि इसका अत्यधिक धार्मिक महत्व भी है।
- नृत्य मंडली कभी भी विवाह, अंतिम संस्कार या घरों में होने वाले समारोहों में इस नृत्य का प्रदर्शन नहीं करती है।
- इसके कलाकार कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं करते हैं। गायक अपने पिता को सुनकर ही गीत और कहानियां सीख लेते हैं।
- कनियन कूथु में पौराणिक कहानियों जैसे- मार्कंडेय और हरिश्चंद्र पुराण और स्थानीय देवताओं के अतिरिक्त रामायण तथा महाभारत की कथाओं का प्रदर्शन किया जाता है।

2.6. मोहन वीणा

(Mohan Veena)

- **मोहन वीणा** दो विशिष्ट भारतीय शास्त्रीय तार वाद्य-यंत्रों से संदर्भित है।
- पहला प्रकार सुप्रसिद्ध सरोद वादक राधिका मोहन मैत्रा द्वारा निर्मित संशोधित सरोद और दूसरा विश्व मोहन भट्ट द्वारा निर्मित संशोधित *हवाईयन गिटार* (Hawaiian Guitar) है।
- भट्ट की मोहन वीणा गोद में रखकर बजाया जाने वाला अत्यधिक संशोधित स्वर-संगति से युक्त चापाकार शीर्ष वाला तार वाद्य-यंत्र है।
- इसमें उन्नीस तार होते हैं और वे अत्यधिक तने होते हैं। तारों का कुल तनाव 500 पौण्ड से अधिक हो सकता है।
- *चतुरंगुई, हंस वीणा* और *शंकर वीणा* मोहन वीणा के कुछ प्रकार हैं।

2.7. 'का बोम' ड्रम

('Ka Bom' Drum)

- यह मेघालय के **खासी समुदाय** का एक पारम्परिक ड्रम है।
- पूर्वोत्तर परिषद के 65वें पूर्ण सत्र में मेघालय की अपनी यात्रा पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस ड्रम को बजाया ।

2.8. किराना घराना

(Kirana Gharana)

- किराना घराना सर्वाधिक सृजनात्मक पाकिस्तानी और हिन्दुस्तानी ख्याल घरानों में से एक है।
- संगीत की इस शाखा का नाम उत्तर प्रदेश के शामली जिले के किराना या कैराना से उत्पन्न हुआ है, जो इस घराने की स्थापना करने वाले उस्ताद अब्दुल करीम खान और उस्ताद वहीद खान जैसे दिग्गजों का गृहनगर है।
- इस घराने को स्वरों के उत्कृष्ट उच्चारण (स्वर-शैली) में अग्रणी माना जाता है। किराना शैली में चिन्तन का केन्द्रीय विषय 'स्वर' है, जिसमें सटीक ट्यूनिंग और विभिन्न स्वरों की अभिव्यक्ति पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
- किराना गायकी में राग के एकल स्वरों को केवल स्वर पैमाने पर बिखरे हुए स्वर बिन्दुओं के रूप में न देखकर क्षैतिज विस्तार में सक्षम संगीत के एक स्वतंत्र विभाग के रूप में देखा जाता है।

VISION IAS

- कर्नाटक के अधिकतर हिन्दुस्तानी संगीतज्ञ किराना घराने के प्रतिनिधि हैं। इसका श्रेय उस्ताद अब्दुल करीम खान (1872-1937) को जाता है। इन्होंने कर्नाटक शैली की अनेक विशेषताओं को आत्मसात कर लिया है।
- कर्नाटक और महाराष्ट्र के साथ लगा हुआ सीमावर्ती क्षेत्र किराना शैली की गायकी के लिए प्रसिद्ध है।

2.9. बाउल परम्परा

(BAUL Tradition)

- बाउल पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश के लोगों का एक समूह है।
- बाउल सामान्यतः वैष्णव हिन्दू और सूफी मुस्लिम होते हैं।
- इन्हें बहुधा इनके विशिष्ट पहनावे और वाद्य यंत्रों से पहचाना जा सकता है।
- हालांकि ये बंगाली जनसंख्या का बहुत छोटा हिस्सा हैं, फिर भी बंगाली संस्कृति पर इनका प्रभाव उल्लेखनीय है।
- वर्ष 2005 में, UNESCO द्वारा बाउल परम्परा को *मास्टरपीस ऑफ़ दि ओरल सॉग एंड इनटैंजिबल हेरिटेज ऑफ़ ह्यूमैनिटी* की श्रेणी में शामिल किया गया।
- **बाउल संगीत (Baul music)**

✓ इनके गीतों में हिंदू भक्ति आंदोलनों और सूफ़ी गीतों का प्रभाव प्रतीत होता है। सूफी गीतों में कबीर के गीतों का उदाहरण दिया जाता है।

✓ इनके द्वारा प्रयुक्त वाद्य यंत्र इकतारा, दोतारा, खमक, डुग्गी, ढोल और खोल हैं।

3. चित्रकला

(PAINTINGS)

3.1. थांगका चित्रकला

(Thangka painting)

- थांगका पारंपरिक तिब्बती धार्मिक कला का एक रूप है, जिसका उद्भव भारत में हुआ है। इस चित्रकला के विषय-वस्तु में बुद्ध, बोधिसत्व, ध्यानमग्न देवता, महान गुरु, और मंडल शामिल हैं।
- अधिकांश थांगका वस्तुतः स्क्रॉल चित्र हैं, जिन्हें रंगीन जरीदार कपड़े पर उकेरा गया है। इसके सामने की सतह को कवर करने के लिए एक पतले सिल्क के परदे का प्रयोग किया जाता है।
- यह विशिष्ट रूप से एक तिब्बती कला है, जिसकी प्रकृति अत्यधिक धार्मिक है तथा इसकी शैली अपने आप में अनूठी है।
- यद्यपि सदैव ये धार्मिक प्रकृति के होते हैं, किन्तु थांगका चित्रकला की विषय-वस्तु विविध और विस्तृत है।
- इनमें से अधिकांश कपड़े या कागज पर चित्रित हैं। सफेद कपड़े को पहले एक फ्रेम पर लगाया जाता है तत्पश्चात जल मिश्रित कोलाइड चॉक का इसके सतह पर लेपन किया जाता है। इसके सूख जाने के पश्चात टैल्क का प्रयोग करके पॉलिश की जाती है।
- इसके अतिरिक्त अनेक थांगका चित्रों की कशीदाकारी रेशम, रेशम टेपेस्ट्री, या पिपली के धागों का प्रयोग कर की गई है। थांगका कढ़ाई बहुरंगी रेशम धागों के द्वारा की जाती है।

3.2. कांगड़ा चित्रकला

(Kangra painting)

- कांगड़ा चित्रकला वस्तुतः एक पहाड़ी चित्रकला शैली है, जिसे 17वीं और 19वीं शताब्दी के मध्य राजपूत शासकों का संरक्षण प्राप्त हुआ।
- जयदेव के गीत गोविंद के आगमन के उपरांत इस चित्रकला शैली को विशेष लोकप्रियता प्राप्त हुई। उल्लेखनीय है कि गीत गोविंद के अनेक प्रसिद्ध पांडुलिपि चित्र काँगड़ा चित्रकला के विशिष्ट उदाहरण हैं।
- इन चित्रों में भगवान कृष्ण के जीवन से संबंधित घटनाओं और भक्ति से संबंधित अन्य विषयों और दृश्यों को चित्रित किया गया है।
- इसके अतिरिक्त महिला सौंदर्य, परिदृश्य, ग्रामीण इलाकें, नदियां, वृक्ष, पक्षी, पशु, फूल आदि इन चित्रों की विषय-वस्तु हैं।
- कांगड़ा चित्रकार वानस्पतिक और खनिज अर्क से बने रंगों का प्रयोग किया करते थे। उन्होंने सादे और ताजे रंगों का प्रयोग किया।

3.3. कलमकारी कला

(Kalamkari art)

- इस शब्द की उत्पत्ति फ़ारसी शब्द कलम तथा कारी (शिल्प कौशल) से हुई है, जिसका आशय 'कलम से चित्रकारी करना' है।

- आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले में पेदाना (pedana) कस्बा अपनी कलमकारी के लिए विख्यात है।
- इन चित्रों को कपड़ों पर उकेरा जाता है। ये चित्र कपड़ों पर हाथ से बनाए जाते हैं, साथ ही साथ कपड़ों पर वेजिटेबल डाई (वनस्पति रंग) का प्रयोग कर ब्लॉक प्रिंटिंग भी की जाती है।
- कपड़ों पर वानस्पतिक रंगों का उपयोग करने वाली यह चित्रकला पद्धति भारत के कई भागों में प्रचलित है लेकिन कलमकारी कला का विकास मुख्यतः कलाहस्ती और मसुलीपटनम में हुआ है।
- वस्तुतः 15वीं सदी में विजयनगर के शासकों के संरक्षण में विकसित इस कला के अंतर्गत मंदिरों के आतंरिक भागों को चित्रित कपड़ों की पट्टिकाओं (panels) से सजाया जाता था।
- ये चित्र अत्यधिक टिकाऊ, आकार में परिवर्तनशील और विभिन्न विषयों के अनुसार बनाये जाते हैं।

 ©Vision IAS

- इसके विषय मुख्यतः रामायण, महाभारत और हिन्दू पौराणिक कथाओं पर आधारित होते हैं।
- इनमें कपड़ों पर चित्रकारी की प्रक्रिया में कोई रासायनिक उत्पाद प्रयुक्त नहीं होता और इनके धोने से नदियों में प्रवाहित होने वाले रंग भी जल को प्रदूषित नहीं करते।

दो विशिष्ट शैलियाँ

- भारत में कलमकारी कला की दो विशिष्ट शैलियाँ प्रचलित हैं। प्रथम, श्रीकलाहस्ती शैली और द्वितीय मसुलीपटनम शैली। दोनों शैली की निर्माण प्रक्रियाओं में अंतर पाया जाता है।
- कलमकारी की मसुलीपटनम शैली फ़ारसी कला से प्रभावित है। इसमें सामान्यतः पेड़-पौधे, पत्तियाँ, फूल आदि को ठप्पों द्वारा मुद्रित (ब्लाक प्रिंटिंग) किया जाता है।
- श्रीकलाहस्ती शैली का विकास अधिकतर मंदिरों में हिन्दू शासकों के संरक्षण में हुआ है। इस प्रकार यह मुख्यतः धार्मिक पहचान रखती है। इस शैली में कलम के प्रयोग से मुक्तहस्त चित्र (फ्रीहैण्ड ड्राइंग) बनाये जाते हैं और उनमें हाथ से रंग भरे जाते हैं।

3.4. मिथिला पेंटिंग

(Mithila Painting)

- इसे **मधुबनी पेंटिंग** के रूप में भी जाना जाता है, इसकी विशेषता चमकदार रंगों से भरा रेखा आरेख है।
- चित्रकारी उंगलियों, टहनियों, कूची, निब-कलम और माचिस की तीलियों से की जाती है।
- ज्यामितीय पैटर्न इनकी विशिष्ट विशेषता है।
- यह चित्रकारी खनिज रंजकों से की जाती है।
- मूल रूप से यह चित्रकारी ताजा पलस्तर वाली दीवारों या मिट्टी की दीवारों पर की जाती थी।
- वाणिज्यिक प्रयोजनों के लिए इसे अब कागज, कपड़े और कैनवास पर किया जाता है।

3.5. चित्रकला की बूँदी शैली

(Bundi School of Painting)

सुर्खियों में क्यों?

- राजस्थान सरकार द्वारा सार्वजनिक स्थलों को सजाने के लिए प्रयुक्त कला शैलियों में से एक बूँदी चित्रकला शैली भी है।
- कोटा रेलवे स्टेशन को सजाने के लिए इस कला का प्रयोग किया गया है।

बूंदी स्कूल ऑफ पेंटिंग के बारे में कुछ जानकारी

- बूँदी चित्रकला शैली भारतीय मिनिएचर (लघुचित्र) पेंटिंग की राजस्थानी शैली है जो 17वीं से 19वीं सदी तक प्रचलित थी।
- इसका अस्तित्व मुख्य रूप से बूंदी और पड़ोसी रियासत कोटा में था।
- बूंदी शैली की विशेषताओं में मुख्यतः हरे भरे पेड़-पौधे, काली रात और अलग तरीके से पानी में हल्की उथलपुथल का चित्रण शामिल है।
- बूंदी शैली का मुगल शैली के साथ करीबी संबंध है।
- बूंदी शैली में कृष्ण की जीवन लीला, शिकार दृश्य, जुलूस, प्रेम दृश्य, पशु पक्षियों इत्यादि के चित्रण पर बल दिया जाता है।

3.6. नाथद्वारा पेंटिंग

(Nathdwara Painting)

- राजस्थान के नाथद्वारा के कलाकारों द्वारा विकसित एक शैली है।
- नाथद्वारा पेंटिंग मेवाड़ शैली की एक उपशैली मानी जाती है, जिसे 17वीं से 18वीं सदी के मध्य एक महत्वपूर्ण शैली का रूप माना जाता था।
- इन चित्रों की कई उपशैलियाँ है जिसमें पिछवाई चित्रकला सबसे लोकप्रिय है।
- पिछवाई चित्रकला को कपड़े पर बनाया जाता है, जिसे हिन्दू भगवान श्रीनाथजी की मूर्ति के पीछे लगाया जाता है।
- पिछवाई कला में भगवान कृष्ण की विभिन्न मुद्राओं का चित्रण किया जाता है।

3.7. कोंडाणे गुफाओं में शैल चित्रों की खोज

(Rock Paintings Discovered in Kondane Caves)

- हाल ही में महाराष्ट्र के पश्चिमी क्षेत्र के रायगढ़ जिले की कोंडाणे गुफाओं में 40 शैल चित्रों की खोज की गई है।
- प्राकृतिक एवम् मानव निर्मित दोनों तरह की गुफाओं में ये चित्र पाए गए हैं।
- यहाँ से दो मानव निर्मित गुफाओं में एक अधूरा बौद्ध चैत्य और एक विहार पाया गया हैं। विहार का अर्थ मठ (रहने का स्थान) होता है।
- ऐसा बौद्ध प्रार्थना सभागार जिसके एक छोर पर स्तूप हो, चैत्य कहलाता है।
- इन बौद्ध गुफाओं में चट्टानों को काटकर की गई वास्तुकला बौद्ध धर्म के हीनयान सम्प्रदाय से संबंधित है।
- यह एक महत्वपूर्ण खोज है क्योंकि इससे पहले हमें महाराष्ट्र के इस क्षेत्र में शैल-उत्कीर्ण चित्रकला के अस्तित्व के बारे में पता नहीं था।
- इन गुफाओं में एक विचित्र पौराणिक आकृति का चित्र पाया गया है, जो संभवतः एक दानव का है।अन्य चित्र रोजमर्रा की जिंदगी और आखेटों, जैसे कि, हिरण के शिकार को दर्शाते हैं।
- इन चित्रों की शैली और अभिव्यक्ति यह प्रदर्शित करती है कि वे दूसरी शताब्दी ई.पू. व उसके उपरांत बनाए गए थे।

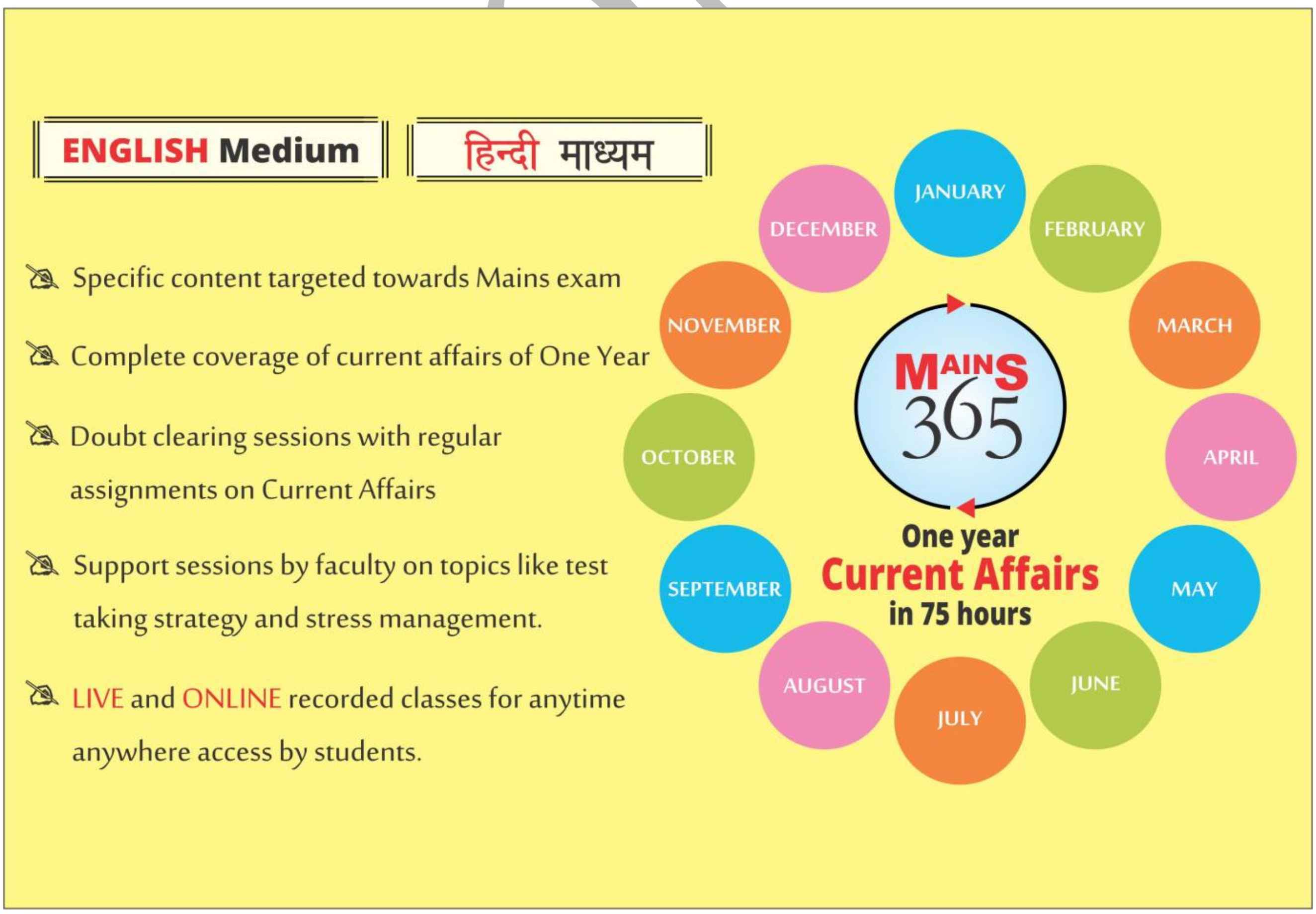

4. विविध कला शैलियां

(MISCELLANEOUS ART FORM)

4.1. अल्पना लोक कला

(Alpana Folk Art)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज (INTACH) ने बंगाल की विलुप्त लोक कला- अल्पना को पुनर्जीवित करने के लिए दरीचा फाउंडेशन के साथ हाथ मिलाया है। INTACH अल्पना के माध्यम से बालिकाओं के लिए राजस्व वृद्धि के तरीके भी तलाश कर रही है।

अल्पना क्या है?

- अल्पना बंगाल की एक लोक कला है, जिसे मुख्य रूप से घरों की फर्श और दीवारों पर बनाया जाता है।
- पेंटिंग हाथ से (उंगलियों का उपयोग ब्रश के रूप में करके) की जाती है और पेंट मुख्य रूप से चावल के आटे को मिलाकर बनया गया पेस्ट होता है।
- बनाये गए रूपांकन विधि-विधान संबंधी चित्र होते हैं जो पौराणिक कथाओं और शास्त्रों से लिए जाते हैं।
- घर की महिलाओं द्वारा सामान्यतः सूर्यास्त से पहले अल्पना बनाया जाता है।
- इसे बुरी आत्माओं से बचाव करने वाला माना जाता है और विशेष रूप से त्योहारों या शादियों जैसे विशेष अवसरों पर बनाया जाता है।

4.2. आदिवासी आदिविम्ब

(Adivasi Adivimb)

- यह नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा द्वारा आयोजित तीन दिवसीय आदिवासी नृत्य संगीत और नाट्य उत्सव है।
- इस उत्सव में विभिन्न क्षेत्रों की आदिवासी कलाओं के विविध रूपों का प्रदर्शन किया जाता है, जैसे-

✓ घुमरा - उड़ीसा
✓ आदि सोलुंग नर्तक - अरुणांचल प्रदेश
✓ मिशिंग बिहू तथा गुमराग - आसाम
✓ होजागिरी नर्तक - त्रिपुरा

4.3. आंचलिक लोक कलाएं

(Fringe Folk Arts)

4.3.1. बहरूपिया

(Beheroopiya)

- किसी समय में यह कला अभिजात्य वर्ग के मनोरंजन का साधन हुआ करती थी।
- यह किसी चरित्र अभिनय एवं हाज़िरजवाबी के माध्यम से मनोरंजन करने की एक कला है। इसमें विशेष सतर्कता तथा चातुर्य की आवश्यकता पड़ती है।
- यह कला अब विलुप्त होती जा रही है। बहुत कम लोग ही इस कला को अपना रहे हैं तथा उसमें भी अधिकांशतः भिक्षावृत्ति हेतु इसका प्रयोग करते हैं।

4.3.2.कच्छी घोड़ी नृत्य

(Kachchhi Ghori Dance)

- यह एक लोक नृत्य है। इस नृत्य का उद्भव स्थल राजस्थान का शेखावाटी क्षेत्र है।
- यह पुरुषों द्वारा प्रदर्शित किया जाने वाला नृत्य है। इसमें नकली घोड़ो का प्रयोग किया जाता है।
- यह बांसुरी तथा ढोल की धुन पर किया जाने वाला नृत्य है।
- चूंकि इस नृत्य के कलाकार बिना किसी मंच के खुले आकाश के नीचे अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं, अतः ये कलाकार 'मैदानी कलाकार' के रूप में जाने जाते हैं।

©Vision IAS
VISION IAS

4.4. जंगम जोगी

(Jangam Jogi)

- ये हरियाणा और पंजाब के क्षेत्रों से संबद्ध लोक गायक हैं।
- यह भगवान शिव को समर्पित भक्ति संगीत की एक शैली है।
- इस संगीत कला में डफली, खंजरी तथा खरताल जैसे छोटे तथा आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाए जा सकने वाले वाद्य यंत्रो का प्रयोग किया जाता है, चूंकि इसके कलाकार यात्रा करते रहते हैं।

4.5. चन्नापटना काष्ठकला

(Channapatna Woodcraft)

- चन्नापटना कर्नाटक की पारंपरिक काष्ठकला है।
- इस कला का प्रयोग खिलौने बनाने हेतु किया जाता है। इन खिलौनों में कोई भी तीक्ष्ण किनारा नहीं होता है तथा केवल जैविक रंगों के प्रयोग के कारण यह बच्चों के लिए पूरी तरह सुरक्षित होते हैं।
- इन खिलौनों को WTO के तहत GI दर्जा प्राप्त है।
- चन्नापटना कला भारत की प्राचीनतम शिल्प कला से भी सम्बंधित है।

4.6. काई सिलाम्बम

(Kai Silambam)

- यह पुदुचेरी की पारंपरिक लोक कला है।
- यह केरल के कलारिपयाट्टू और श्रीलंका की अंगमपोर कला से अत्यंत निकटता से संबंधित है।
- **सिलाम्बम** का आशय बांस के लट्ठ से है (इस शैली में प्रयुक्त मुख्य हथियार)।
- यह वर्तमान में मलेशिया में भी प्रचलित है।

4.7. कोलकल्ली तथा मरगम

(Kolkali and Margam)

- कोलकाली केरल में प्रदर्शित की जाने वाली एक लोक कला है।
- यह कला कलारिपयाट्टू कला से प्रभावित है।
- केरल के सीरियाई ईसाई समुदायों द्वारा इसे पुनर्जीवित किया गया है।
- मरगम नृत्य भी केरल का एक लोक नृत्य है।

4.8.काठी सामू और कर्रा सामू

(Kathisamu and Karrasamu)

- यह आंध्र प्रदेश की एक मार्शल आर्ट (युद्ध कला) है, जिसका उद्भव विजयनगर साम्राज्य में हुआ।
- **काठी सामू** और **कर्रा सामू** इस कला में प्रयुक्त हथियारों का नाम है।
- इस युद्ध कला में विभिन्न हथियारों का उपयोग किया जाता है जैसे-

✓ चाकू युद्ध (बाकू सामू)
✓ तलवार युद्ध (कट्टी सामू)
✓ लाठी युद्ध (कर सामू)

4.9. सांगोड्ड

(Sangodd)

- यह त्योहार गोवा में 29 जून को मानसून के मौसम के दौरान मनाया जाता है।
- सुबह पुजारियों के द्वारा मछुआरों के द्वारा प्रयोग किये जाने वाले सुपारी के डंडों (पोल) तथा सांगोड्ड को आशीर्वाद देने और भव्य भोज के बाद **सांगोड्ड** उत्सव दोपहर में प्रारंभ होता है
- सांगोड्ड 2 नावों को साथ बांधना है जो विश्वास के बंधन का प्रतीक है।

4.10. रोगन कला

(Rogan Art)

- रोगन कपड़े पर पेंटिंग की कला है। इसकी उत्पत्ति फारस में हुई तथा यह भारत के कच्छ क्षेत्र में लोकप्रिय है।
- इस कला में प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है। इन्हें वनस्पतियों से निर्मित रंजको को एरंड के तेल (कैस्टर आयल) के साथ मिश्रित करके निर्मित किया जाता है।
- यह पेंटिंग छड़ी, रॉड या धातु ब्लॉक के उपयोग के द्वारा बनायी जाती है।
- इसमें पीले, नीले तथा लाल रंगों का सर्वाधिक प्रयोग किया जाता है।

4.11. स्टेचू ऑफ़ यूनिटी

(Statue of Unity)

- यह स्मारक गुजरात के नर्मदा जिले में सरदार पटेल को श्रद्धांजलि देने हेतु बनाया जा रहा है।
- निर्माण पूर्ण हो जाने पर यह दुनिया की सबसे ऊँची प्रतिमा होगी।
- सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय एकता ट्रस्ट (SVPRET) तथा गुजरात सरकार द्वारा गठित स्पेशल परपज व्हीकल (SPV) द्वारा इस परियोजना का कार्यान्वयन किया जा रहा है।

4.12. कनिष्क स्तूप

(Kanishka Stupa)

सुर्खियों में क्यों?

- पाकिस्तान सरकार ने पेशावर में स्थित कनिष्क के स्तूप को दुनिया के 8वें आश्चर्य के रूप में शामिल करने का आग्रह किया है।

कनिष्क स्तूप के बारे में

- यह दूसरी शताब्दी ईस्वी में कुषाण राजा कनिष्क द्वारा स्थापित किया गया था।
- यह प्राचीन इतिहास की शायद सबसे ऊंची इमारत रही होगी।
- इसके बौद्ध अवशेष माडले पहाड़ी, बर्मा में स्थानांतरित कर दिए गए थे।

4.13. कुटियट्टम

(Kutiyattam)

- कुटियट्टम प्राचीन काल से प्रचलित रंग मंच कला का एक रूप है इसकी उत्पत्ति दो हजार वर्ष पूर्व हुई थी । भारत के प्रख्यात संस्कृत नाटकों से भी इसकी उत्पत्ति को संबद्ध किया जा सकता है।
- हाल ही में, कुटियट्टम को यूनेस्को द्वारा "मानवता की मौखिक और अमूर्त विरासत की कृतियों में उत्कृष्ट" के रूप में घोषित किया गया है।
- कुटियट्टम पुरुष अभिनेताओं जिन्हें चक्यार (Chakyars) तथा महिला कलाकारों जिन्हें नागिआर (Nangiars) कहा जाता है के एक समुदाय द्वारा किया जाता है। इस कला में ढ़ोल बजाने वालों को नाम्बियार्स कहा जाता है, रंगशालाओं को कुट्टमपालम (Kuttampalams) कहा जाता है।
- कुटियट्टम संस्कृत के शास्त्रीय स्वरुप और केरल की स्थानीय प्रकृति के संश्लेषण का प्रतिनिधित्व करता है।
- अभिनेताओं को इस कला में महारत प्राप्त करने के लिए दस से पंद्रह वर्ष के कठोर प्रशिक्षण से गुजरना होता है तभी वे अपनी श्वास पर नियंत्रण करने तथा चेहरे और शरीर की पेशियों द्वारा सूक्ष्म भावों की प्रस्तुति को रंगमंच के अनुसार परिवर्तित करने में समर्थ हो पाते हैं।

4.14. बाजीगर (पंजाब के कलाबाज़)

[BAZIGAR (Acrobats of Punjab)]

- ये भारत और पाकिस्तान में फैली पंजाब की अनुसूचित जातियों का एक समुदाय है।
- मूल रूप से खानाबदोश प्रकृति का यह समुदाय मूलतः अपने आपको राजस्थान के राजपूतों से संबद्ध करता है। इन्होंने पिछली 3 शताब्दियों से उत्तर पश्चिम भारत में बसना शुरू किया।
- इनका मुख्य पेशा बाजी (कूदना और कलाबाजियाँ करना) है किन्तु वर्तमान में समुदाय के अधिकांश व्यक्ति अनियमित श्रमिक के रूप में कार्य करते हैं।

- बाजी के पेशे के अस्थायी प्रकृति के होने के कारण इनकी आर्थिक स्थिति दयनीय है।

4.15.कलारीपयट्टु (केरल का मार्शल आर्ट)

(KALARIPAYATTU)

- कलारीपयट्टु पांच सौ से अधिक वर्षों से प्रचलित केरल का स्वदेशी मार्शल आर्ट है।
- यह गुरु-शिष्य परम्परा के माध्यम से सदियों से सुरक्षित है।
- यह एक समग्र कला है जिसमें दूसरों पर आक्रमण के साथ ही उससे बचाव की तकनीक भी शामिल है।
- इसके तीन क्षेत्रीय रूप हैं जिनमें उनकी आक्रामक और रक्षात्मक शैलियों के आधार पर विभेद किया जाता है।
- कलारीपयट्टु तकनीक कदम (चुवातु) और मुद्रा (वादिवु) का संयोजन है।
- तमिल और मलयालम में कलारी का अर्थ है- स्कूल या प्रशिक्षण हाल जहां मार्शल आर्ट सिखाई जाती है।

4.16. बहुरूपिया (राजस्थान के स्वांग कलाकार)

[Bahurupiya (mimicry artists from Rajasthan)]

- बहुरूपिया शब्द का उद्भव संस्कृत भाषा के बहु (कई) और रूप (प्रकार) शब्दों के संयोग से हुआ है।
- वर्तमान में बहुरूपिया कला के प्रदर्शन को केवल भांडो का कार्य मान लिया गया है किन्तु अतीत में ब्राह्मण सहित विभिन्न जातियों के सदस्य, गांवों के साथ ही दरबारों में भी इस कला का प्रदर्शन करते थे।
- लोगों को प्रचलित चरित्रों के रूप से अधिकतम समरूपता (impersonation) का अनुभव करा देने की क्षमता बहुरूपिया की कला का मुख्य तत्व है।
- एक बहुरूपिया के छद्म रूप को भेष कहा जाता है, जो संस्कृत में कपड़ों या वेशभूषा के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

4.17. थांग टा (मणिपुर का मार्शल आर्ट)

[Thang Ta (martial art form of Manipur)]

- मणिपुर के मेइती समुदाय में मार्शल आर्ट का एक विशिष्ट रूप प्रचलित है जिसे थांग-टा कहा जाता है, जिसमें एक थांग (भाला) और एक टा (तलवार) प्राथमिक हथियार के रूप में प्रयुक्त होते हैं।
- यह जीवन एक पद्धति है। व्यायाम, गतिशीलता, लड़ने की तकनीकों के माध्यम से अनुशासन पैदा करने के साथ ही इससे आत्म-विश्वास में वृद्धि, महिलाओं की रक्षा, बड़ों का सम्मान या राज्य की रक्षा की जा सकती है।
- अरम्बाई (arambai) (यह एक छोटा नुकीला भाला होता है जिसका अग्र भाग पारंपरिक विष से लेपित होता है), 'थांग' और चुन्गोई (chungoi) तथा अन्य कई शस्त्र थांग-टा को प्रभावशाली मार्शल आर्ट बनाते हैं।

4.18. मलखंब (महाराष्ट्र)

[Mallakhamb (Maharashtra)]

- मलखंब जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है कुश्ती के खेल में अपने कौशल का अभ्यास करने के लिए पहलवानों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला एक खम्भ (pole) है।
- लेकिन अब प्रवृत्ति में बदलाव आ गया है और इसे एक विशेष पहचान मिली है। मलखंब में एकाग्रता, गति और लचीलेपन की आवश्यकता होती है। यह हमारे शरीर और विशेष रूप से रीढ़ की हड्डी के लिए एक अच्छा व्यायाम है।
- मलखम्ब का प्रारंभिक उल्लेख 12 वीं सदी में देखा जा सकता है।
- मलखंब का प्रदर्शन तीन तरीकों से किया जा सकता है। एक स्थिर खंभ पर, लटकते हुए खंभ पर या रस्सी पर। तीन दशक पहले, खंभ मलखंब के स्थान पर रस्सी आधारित मलखंब अधिक प्रचलित हो गया है।

4.19. नाडा कुश्ती

(Nada Kusti)

- यह मैसूर के लोगों में अत्यधिक प्रचलित कुश्ती का एक पारंपरिक रूप है।
- इस खेल को 17 वीं सदी के प्रारंभ से ही शाही संरक्षण प्राप्त हो चुका था। नाडा कुश्ती निम्न मध्यम वर्ग और ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के बीच अत्यधिक लोकप्रिय है।
- अब यह खेल केवल एक ग्रामीण मनोरंजन के रूप में ही बचा है और काफी हद तक दशहरा उत्सव तक ही सीमित है।

VISION IAS

4.20. फुलकारी

(Phulkari)

- इस कला का प्रमाण 15वीं शताब्दी से मिलता है।
- यह शिल्प का एक रूप है जिसमें शॉल और दुपट्टे पर सरल और बिखरी हुई डिजाइन में कढ़ाई की जाती है।
- जहां डिजाइन पर बहुत बारीक काम किया गया हो और पूरे वस्त्र पर कढ़ाई की गयी हो, वहां इसे बाग (फूलों का बगीचा) कहा जाता है।
- इसमें प्रयुक्त सिल्क के धागे को पट (pat) कहा जाता है।

4.21. ज़रदोजी

(Zardozi)

- ज़रदोजी धातु से की जाने वाली एक सुंदर कढ़ाई है, जो भारत में राजाओं और शाही परिवारों के व्यक्तियों की पोशाक के लिए इस्तेमाल की जाती थी। फारसी शब्द ज़र (ZAR) का अर्थ सोना और दोजी (Dozi) का अर्थ कढ़ाई होता है।
- इसमें सोने और चांदी के धागे का उपयोग करके विस्तृत डिजाइन बनाए जाते हैं। साथ ही, कीमती पत्थर, हीरे, पन्ने और मोती का प्रयोग भी किया जाता है।
- उपयोग: शाही टेंट की दीवारों, म्यानों, दीवार के पर्दे और शाही हाथी और घोड़ों के वस्त्रों को सजाने के लिए।
- ज़रदोजी कशीदाकारी कार्य वस्तुतः लखनऊ, भोपाल, हैदराबाद, दिल्ली, आगरा, कश्मीर, मुंबई, अजमेर और चेन्नई जैसे शहरों की विशेषता रही है।
- 2013 में भौगोलिक संकेतक रजिस्ट्री (GIR) द्वारा लखनऊ ज़रदोजी को भौगोलिक संकेतक (GI) पंजीकरण प्रदान किया गया। ज़रदोजी उत्पाद लखनऊ और 6 अन्य निकटवर्ती जिलों (बाराबंकी, उन्नाव, सीतापुर, रायबरेली, हरदोई और अमेठी) में निर्मित किये जाते हैं।

4.22. चेत्तीनाड सूती साड़ियाँ

(Chettinad cotton saris)

- इन साड़ियों को यह नाम तमिलनाडु के शिवगंगा जिले के एक छोटे से शहर चेत्तीनाड से मिला है।
- चेत्तीनाड की पारंपरिक साड़ियों को कानडंघी (Kandanghi) कहा जाता है जो सूत से बनी होती हैं।
- चेत्तीनाड साड़ियों को चटकीले रंगो जैसे मस्टर्ड रंग, ईंट जैसा लाल, नारंगी, बसन्ती और भूरे रंग के चेक (checks) का प्रयोग करके तैयार किया जाता है।
- चेक और टेंपल बॉर्डर चेत्तीनाड साड़ियों में प्रयोग किए जाने वाले पारंपरिक पैटर्न हैं।

4.23. तांगलिया बुनाई

(Tangalia Weaving)

तांगलिया बुनाई क्या है?

- यह 700 वर्ष प्राचीन स्वदेशी शिल्पकला है, जो सूती या ऊनी धागों का प्रयोग करके कुछ बिंदुओं से लेकर अधिकाधिक विस्तृत व्यवस्था वाले 'दानों' (danas) या 'मोतियों' (beads) से निर्मित थीम समाविष्ट करने वाली विशिष्ट बुनाई तकनीक का उपयोग करती है।
- इसका अभ्यास **केवल** गुजरात के **सुरेंद्रनगर जिले** में **डांगसिया (Dangasia) समुदाय** द्वारा किया जाता है।
- तांगलिया परिधान का प्रयोग सामान्यत: **भारवाड़ गड़रिया समुदाय** की महिलाओं द्वारा शॉल के रूप में और लपेटे जाने वाले घाघरे के रूप में किया जाता है।
- तांगलिया शॉल को केन्द्र सरकार द्वारा **2009** में **भौगोलिक संकेतक (GI)** की मान्यता प्रदान की गई है।

डांगसिया समुदाय

- डांगसिया शब्द डांग शब्द से व्युत्पन्न हुआ है। स्थानीय भाषा में डांग का अर्थ छड़ी होता है। यह गड़रियों द्वारा अपने भेड़ों के झुंड को नियंत्रित करने के लिए उपयोग की जाने वाली छड़ी का वाचक है।
- डांगसिया **हिंदू धर्म** का अनुपालन करते हैं। वे **देवी पार्वती** के एक रूप **चामुंडा देवी** में विश्वास करते हैं एवं नवरात्रि मनाते हैं।
- वे सभी प्रमुख हिंदू त्यौहारों जैसे होली, दीवाली, उत्तरायण और जन्माष्टमी मनाते हैं और साथ ही साथ अन्य स्थानीय त्यौहारों एवं मेलों में सक्रिय भागीदारी करते हैं।
- वे **भारवाडों** के साथ सहजीवी संबंध साझा करते हैं, जहाँ भारवाड़ ऊन प्रदान करते हैं और डांगसिया उनके लिए वस्त्र बुनते हैं।

4.24. बीदरी शिल्प कला

BIDAR-WARE. FLOWER VASES

(Bidri Craft)

- यह कर्नाटक के बीदर जिले की एक धातु हस्तशिल्प है।
- इस शिल्प कला की उत्पत्ति फारस में हुई तथा 14वीं शताब्दी में यह भारत पहुंची। भारत में यह कला बहमनी साम्राज्य के अंतर्गत फली फूली।
- बीदरी कला में मुख्यतः जस्ता धातु का इस्तेमाल होता है।
- इस कला से निर्मित बीदरी पात्रों की विशेषता इसकी काली चमक है। यह चमक बीदरी में पायी जाने वाली विशेष मिट्टी के प्रयोग के कारण आती है।

4.25. थेवा शिल्प कला

(Thewa Craft)

- थेवा शिल्प कला आभूषण बनाने की एक अनोखी कला है। थेवा-आभूषणों के निर्माण में विभिन्न रंगों के शीशों (कांच) को चांदी के महीन तारों से बने फ्रेम में डाल कर उस पर सोने की बारीक कलाकृतियां उकेरी जाती हैं।
- इसका उद्भव लगभग 400 वर्ष पूर्व राजस्थान के प्रतापगढ़ जिले में हुआ था।
- थेवा शब्द दो शब्दों से बनता है: थारना तथा वाडा- जिसमें थारना का अर्थ है 'हथौड़ा' और वाडा का अर्थ है 'चांदी का तार'।
- इसके उद्भव का श्रेय सोनार नाथुजी सोनी को दिया जाता है। इन्हें प्रतापगढ़ के राजा सावंत सिंह ने राजसोनी की उपाधि प्रदान की थी।
- उपाधि और शिल्प दोनों ही पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होते रहे हैं।

4.26. जोगी आदिवासी कला

(Jogi Tribal Art)

जोगी आदिवासी कला क्या है?

- जोगी कला आदिवासी कला का एक रूप है जिसमें लाइनों और डॉट्स का प्रयोग किया जाता है।
- इसमें मुख्यतः सफेद और काले रंग का प्रयोग किया जाता है, परंतु हाल ही में जयपुर में किए गए चित्रों के प्रदर्शन में चमकीले रंगों का प्रयोग किया गया है।
- यह राजस्थान के सिरोही जिले के रियोदर तहसील के मगरीवाड़ा के कलाकारों द्वारा बनायी जाती है।
- दिलचस्प बात यह है कि वर्तमान में यह चित्रकला सिर्फ एक ही परिवार द्वारा बनाई जाती है।
- राजस्थान सरकार ने पूरे जयपुर में जोगी आदिवासी कला के चित्रों को प्रदर्शित किया है। सरकार द्वारा यह कदम लोगों को जागरूक करने और पारंपारिक कलाओं को जीवित रखने के लिए उठाया गया है।

4.27. कबड्डी विश्व कप

(Kabaddi World Cup)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- भारत ने कबड्डी विश्व कप 2016 के फाइनल में ईरान को हराकर लगातार तीसरी बार ख़िताब जीता।

कबड्डी

- कबड्डी एक संपर्क खेल (contact sport) है जिसकी उत्पत्ति प्राचीन भारत में हुई।
- इसका उल्लेख भारतीय पौराणिक कथाओं में भी किया गया है।
- यह भारतीय उप-महाद्वीप के विभिन्न भागों में विभिन्न क्षेत्रीय नामों से जाना जाता है।
- इसे तमिलनाडु में सडूगुडू, कर्नाटक में कबड्डी, बंगाल में हदुदु, मालदीव में भावतिक, पंजाब क्षेत्र में कौड्डी और आंध्र प्रदेश में चेडुगुडु के रूप में जाना जाता है।
- इसलिए आधुनिक कबड्डी विभिन्न नामों के तहत कबड्डी के विभिन्न रूपों का एक संश्लेषण है।
- भारत में मुख्य रूप से कबड्डी के चार प्रकार प्रचलित हैं: संजीवनी कबड्डी, गामिनी शैली, अमर शैली और पंजाबी कबड्डी।
- भारतीय कबड्डी संघ 1950 में स्थापित किया गया था।
- 1936 के बर्लिन ओलंपिक खेलों के दौरान इस खेल ने अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की।

VISION IAS

5. जनजातियाँ

(TRIBES)

5.1. अरुणाचल प्रदेश की निशि जनजाति

(Nyishis Tribe of Arunachal Pradesh)

- यह जनजाति अरुणाचल प्रदेश की सर्वाधिक जनसंख्या वाली (लगभग 3 लाख) जनजाति है।
- इस जनजाति के सदस्यों की आजीविका स्लैश एवं बर्न कृषि (स्थानांतरित कृषि) तथा शिकार एवं मत्स्यन पर आधारित है।
- निशि जनजाति की सबसे अनूठी विशेषता इस जनजाति के पुरुषों द्वारा धारण किया जाने वाला ग्रेट इंडियन हार्नबिल की चोंच से सज्जित बांस निर्मित हेलमेट है।
- चावल इनकी मुख्य खाद्य फसल है जिसके साथ अधिकांशतः मछली आहार के रूप में प्रचलित है।
- इस जनजाति के लोग अपने पौराणिक पूर्वज के रूप में आभू थांई (AABHU THANYI) की पूजा करते हैं।
- परंपरागत रूप से ये शिकारी थे, किंतु अब बढ़ती जागरूकता के साथ प्रकृति से अपनी निकटता के कारण ये वनों एवं वन्य जीवन के संरक्षक बन गए हैं।

5.2. टोडा जनजाति

(TODA tribe)

- **विस्तार:** दक्षिण भारत के नीलगिरि पठार।
- पिछली सदी के दौरान 700 से 900 के बीच जनसंख्या वाला एक चरवाहा समुदाय।
- अपने रूप-रंग, शिष्टाचार और रीति-रिवाज़ में अपने पड़ोसियों से अलग होने के कारण वे अपनी ओर अधिक ध्यान आकर्षित करते हैं।
- टोडा भूमि अब नीलगिरि बायोस्फीयर रिजर्व का हिस्सा है। नीलगिरि UNESCO के अंतर्राष्ट्रीय जैवमंडल निचय के नेटवर्क में आता है जिसे अब (UNESCO द्वारा) विश्व विरासत स्थल भी घोषित कर दिया गया है ।
- उनका एकमात्र व्यवसाय पशु-पालन और दुग्ध उत्पादन है ।
- **धर्म:** भैंस पर केन्द्रित
- **खतरा:** कुछ टोडा चारागाह भूमि बाहरी लोगों द्वारा कृषि अथवा तमिलनाडु सरकार द्वारा वनीकरण के कारण कम हो गई है।

5.3. असुर जनजाति

(ASUR Tribe)

- इस जनजाति के सदस्य झारखंड, बिहार के कुछ हिस्सों, पश्चिम बंगाल और कुछ अन्य राज्यों में रहते हैं।
- 2011 की जनगणना के अनुसार, झारखंड में 22,459 और बिहार में 4,129 असुर जनजाति के लोग रहते हैं।
- असुर जनजाति के लोग महिषासुर (एक महिष-दानव जिसे देवी दुर्गा ने नौ रातों तक चलने वाले एक विकट युद्ध के बाद मार गिराया था) के वंशज होने का दावा करते हैं। हिंदू धर्म में इसी पौराणिक कथा को नौ दिवसीय दुर्गा पूजा के रूप में मनाया जाता है। लेकिन असुर जनजाति के लोग इसे 'महिषासुर दशैं' (Mahishasur Dasain) के रूप में मनाते हैं, जिसमें वह शोक की अवधि के दौरान काफी हद तक घर के अंदर रहते हैं।
- परंपरागत रूप से, असुर जनजाति के लोग लौह धातु गलाने वाले व स्थानांतरित कृषि करने वाले रहे हैं। इस प्रकार, वे खानाबदोश थे।
- एक मत के अनुसार, मगध साम्राज्य को असुरों द्वारा बनाए गए हथियारों से बहुत लाभ हुआ।
- यूनेस्को द्वारा असुर भाषा को "अनिवार्यतः लुप्तप्राय" (definitely endangered) के रूप में सूचीबद्ध किया गया है क्योंकि इसके केवल 7000 बोलने वाले शेष रह गए हैं।

5.4. बोंडा जनजाति

(BONDA Tribe)

- यह जनजाति ओडिशा, छत्तीसगढ़ और आंध्र प्रदेश के संधि-स्थल (जंक्शन) के पास दक्षिण-पश्चिमी ओडिशा के मलकानगिरी जिले के विलगित (isolated) पहाड़ी क्षेत्रों में रहती है। उनकी वर्तमान जनसंख्या 12,000 है ।

- बोंडा का बाहर की दुनिया से लगभग कोई संबंध नहीं है। केवल 6% बोंडा साक्षर हैं।
- बोंडा समाज में महिलाओं को विशेषाधिकार प्राप्त होता है।
- बोंडा जनजाति की लड़कियाँ मोटे तौर पर ऐसे लड़कों से शादी करती हैं जो उनकी तुलना में कम से कम पांच से दस वर्ष छोटी उम्र के होते हैं। इस प्रकार जब पति की उम्र बढ़ती है तब लड़कियाँ अपने पतियों का ध्यान रखती हैं और बाद में जब लड़कियाँ बूढ़ी हो जाती हैं तो उनके पति उनका ध्यान रखते हैं।
- बोंडा जनजाति में महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में काफी अधिक है।

5.5. सिद्दी जनजाति

(SIDDI Tribe)

- सिद्दी जिन्हें शीदी, हब्शी या मकरानी के रूप में भी जाना जाता है, भारत और पाकिस्तान में रहने वाला एक नृजातीय समूह है।
- वे उत्तर-पूर्व और पूर्वी अफ्रीका में रहने वाले अफ्रीकियों के वंशज हैं, जो दास, सैनिक या नौकर के रूप में भारत लाए गए थे। सिद्दी दक्षिण पूर्व अफ्रीका के बंतू लोगों के वंशज हैं। इनमें से कुछ व्यापारी, नाविक, अनुबंधित नौकर और भाड़े के सैनिक थे।
- विस्तार: भारत में कर्नाटक, गुजरात और हैदराबाद तथा पाकिस्तान में मकरान तथा करांची इनकी जनसंख्या के मुख्य केन्द्र माने जाते हैं।
- धर्म: सिद्दी मुख्य रूप से सूफी मुसलमान हैं, हालाकि इनमें से कुछ हिंदू और रोमन कैथोलिक ईसाई भी हैं।
- गुजरात में रहने वाले सिद्दी, गिर वन राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य के आस-पास रहते हैं।

5.6. जारवा जनजाति

(Jarawa Tribe)

- अंडमान द्वीप समूह की जनजातियों - जारवा, ग्रेट अंडमानी, ओन्गे और सेंटीनली का निवास अंडमान निकोबार द्वीप समूह में पिछले 55000 वर्षों से माना जाता है।
- धरती पर सबसे एकाकी मानी जाने वाली जारवा जनजाति मुख्यतः शिकार पर निर्भर रहती है। यह जनजाति अंडमान के घने जंगलों में बाहरी दुनिया से पूरी तरह से कटी हुई रहती है।
- हालांकि, बाहरी लोगों के बढ़ते अंतर्प्रवाह के कारण जारवा विलुप्ति के खतरे का सामना कर रहे हैं।वर्तमान में, जनजाति के लगभग 400 सदस्य 40-50 के समूह में अपने निवास स्थान चाद्धा (chaddhas) में रहते हैं।
- जारवा द्वारा वचाही (vachahi) और हाथो (hatho) वृक्ष की पत्तियाँ गर्भ निरोधक के रूप में प्रयोग की जाती हैं।

5.7. नारिकुरावा जनजाति

(Narikurava Tribe)

- वे हाल ही में केंद्र सरकार द्वारा अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में शामिल किये गये है।
- उनमें क्रमिक परिवर्तन देखने को मिल रहे है जैसे हाल ही में इस समुदाय के एक युवा ने पहली बार इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त की है।
- नारिकुरावा तमिलनाडु राज्य का एक समुदाय है।
- यह भारत में सामाजिक और शैक्षिक रूप से सबसे अधिक पिछड़े समुदायों में से एक है।

5.8. मेघालय की खासी जनजाति

(Khasi Tribe of Meghalaya)

- प्राक ऐतिहासिक काल से संबंधित महापाषाणिक पत्थर की संरचनाएं और लोहे की सामग्रियां मेघालय के री-भोई (Ri-Bhoi) जिले के 1.5 किमी क्षेत्र में फैली एक पर्वतश्रेणी में पायी गई हैं।
- इन महापाषाणिक पत्थर की संरचनाओं और उपकरणों की रेडियोकार्बन डेटिंग से पता चलता है कि खासी जनजाति ने लगभग 1200 ई. पू. में मेघालय को अपना निवास स्थल बनाया था।
- लुम्मावबुह (Lummawbuh) का यह खुदाई स्थल मेघालय का पहला नवपाषाण स्थल है।

खासी जनजाति के बारे में

- खासी एक देशज जनजाति है, इनकी अधिकांश जनसँख्या मेघालय में निवास करती हैं।

- अन्य जनजातियों से अलग इस जनजाति में संतति (वंशज) पिता से नहीं मां से होती है; अर्थात यह जनजाति मातृवंशीय प्रणाली का पालन करती है।
- वे अपने जीविकोपार्जन के लिए स्थानांतरित **कृषि (झूम) करते हैं।**

5.9. उड़ीसा की जुआंग जनजाति

(Juang Tribe of Orissa)

- **उड़ीसा के जाजपुर जिले में नगादा पहाड़ियों पर पिछले 3 महीनों में 19 जुआंग** बच्चों की मृत्यु ने इस जनजाति में कुपोषण की समस्या के प्रति सरकार को सचेत किया है।

जुआंग जनजाति

- जुआंग, मुंडा नृजातीय समूह के लोगों का जनजातीय (आदिवासी) समूह हैं।
- ये मुख्य रूप से उड़ीसा के क्योंझर, ढेंकनाल, अंगुल और जाजपुर जिलों में रहते हैं।
- ये जुआंग भाषा बोलते हैं जिसे ऑस्ट्रो-एशियाटिक भाषा परिवार की एक शाखा के रूप में स्वीकार किया जाता है।
- इस जनजाति की विशेष रूप से **सुभेद्य जनजातीय समूह (PVTGs)** के रूप में पहचान की गई है।

5.10. हक्की पिक्की

(Hakki Pikki)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- कर्नाटक सरकार ने हक्की-पिक्की समुदाय के सदस्यों का स्थायी रूप से पुनर्वास करने का निर्णय लिया है।

हक्की-पिक्की समुदाय के संबंध में

- यह जनजाति मुख्य रूप से भारत के दक्षिणी भाग में पाई जाती है और इसकी प्रकृति (स्वभाव) अर्द्ध-यायावर है।
- कहा जाता है कि इस जनजातीय समुदाय का संबंध राणा प्रताप से है और ये क्षत्रिय कुल से संबंधित हैं।
- ये जनजाति मातृसत्तात्मक नियमों का पालन करती हैं और इनमें सगोत्र विवाह कठोरतापूर्वक वर्जित है।
- इनका मुख्य व्यवसाय शिकार करना है, किन्तु ये कृषि और पुष्प सज्जा में अधिक रुचि प्रदर्शित करते हैं।
- ये अपनी स्थानीय बोली वाघरी, कन्नड़, तमिल और हिंदी के अच्छे जानकार हैं और इनमें से कुछ मलयालम और तेलुगु भी बोलते हैं।
- ये दीवाली, शिवरात्रि, युगादि, गणेश चतुर्थी इत्यादि विभिन्न त्योहार मनाते हैं एवं पशुबलि की प्रथा का पालन करते हैं।

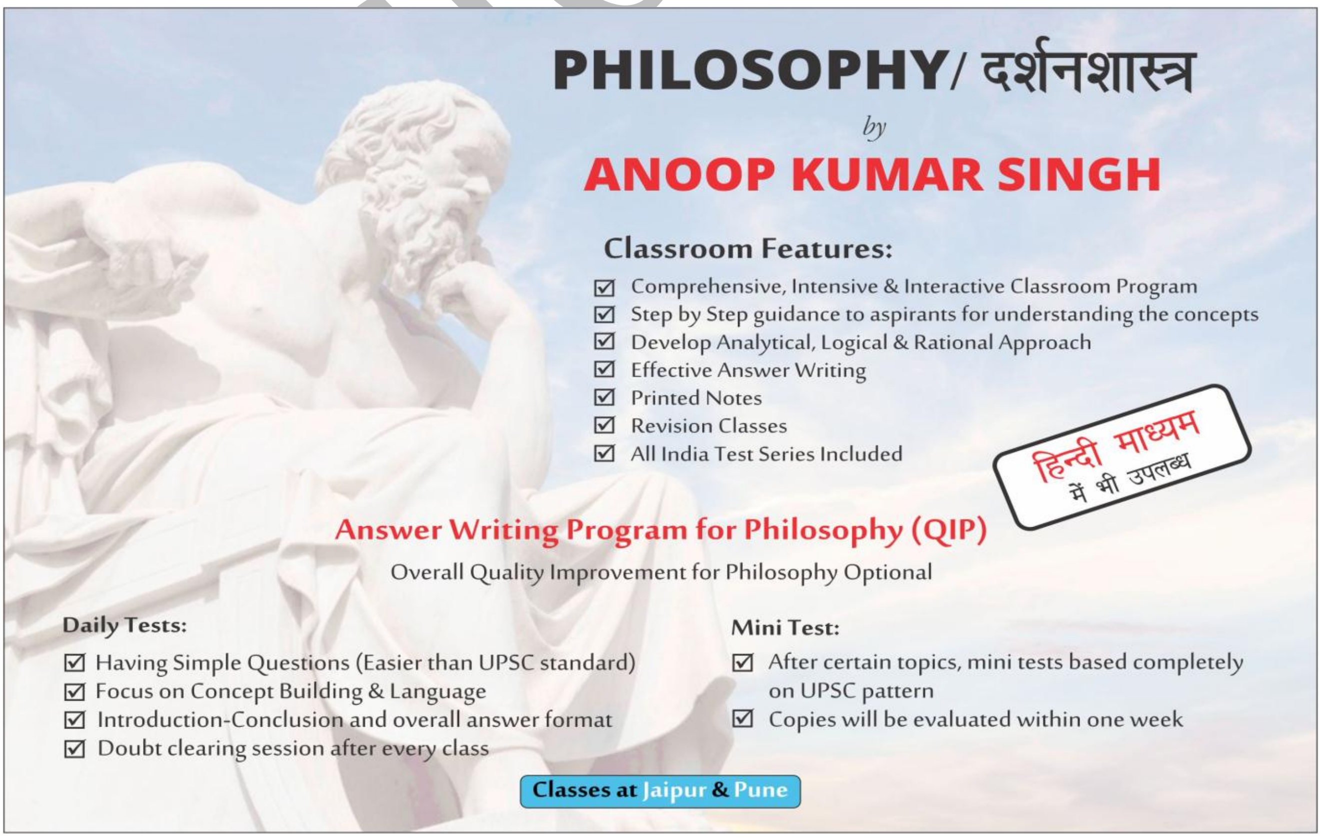

6. मूर्ति कला और वास्तुकला

(SCULPTURE AND ARCHITECTURE)

6.1. ऑस्ट्रेलिया ने चोरी की गई प्रतिमाएँ भारत को वापस की

(Australia Returns Stolen Sculptures to India)

सुर्खियों में क्यों?

- ऑस्ट्रेलिया ने भारत को तीन प्राचीन प्रतिमाएँ वापस की हैं जिन्हें तस्करों द्वारा भारत से ले जाया गया था।

ये क्या हैं?

- वापस की गई प्रतिमाओं में से एक तीसरी सदी की है जो चट्टान पर की गयी नक्काशी से बनी है। इसका मूल्य 8,40,000 डॉलर आँका गया है। अन्य प्रतिमाओं में एक 900 वर्ष प्राचीन देवी प्रत्यंगीरा की मूर्ति और दूसरी बैठे हुए बुद्ध की प्रतिमा है।

6.2. अर्धनारीश्वर

(Ardhanariswara)

- यह मूर्ति उभयलिंगी स्वरुप में है। मध्य में से विभाजित इस मूर्ति के दायें अर्ध भाग में शिव तथा बाएं अर्ध भाग में पार्वती हैं।
- पौराणिक कथाओं के अनुसार शिव का यह रूप तब अस्तित्व में आया जब पार्वती (शक्ति के रूप में) के कठोर तप से प्रसन्न शिव ने उन्हें स्वयं का अंश बनने का वरदान दिया।
- इस रूप में शिव की पूजा का सार यह है कि यदि व्यक्ति के आंतरिक स्तर पर उसके अन्दर के स्त्रीत्व एवं पुरूषत्व का मिलन हो जाए तो वह शाश्वत परमानंद की अवस्था में रहेगा।
- एलिफैंटा में अर्धनारीश्वर की विख्यात प्रतिमा शिव के इस रूप का उत्कृष्ट निरूपण है।

6.3. फोर्ट सेंट जॉर्ज चेन्नई

(Fort St. George Chennai)

- **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** ने सेना और लोक निर्माण विभाग के साथ चेन्नई में फोर्ट सेंट जॉर्ज के निकट स्थित खाई का जीर्णोद्धार किया।
- 2.3 किमी लंबी खाई 1760 के दशक में फ्रांसीसी हमले के दौरान बनाई गई थी।
- वर्तमान में, खाई का एक बड़ा भाग अपशिष्ट जल प्रकोष्ठ (waste water chamber) बन गया है।
- कई वर्ष पहले ये जलमार्ग बंद कर दिए गए थे तथा ये मार्ग बंद ही रहे। परिणाम स्वरुप खाई एक सूखे मार्ग में बदल गयी, जिसका उपयोग केवल अतिरिक्त वर्षा जल को संग्रहित करने हेतु किया गया।

6.4. आंध्र प्रदेश में बौद्ध अवशेष प्राप्त किए गए

(Buddhist Remains Unearthed in Andhra Pradesh)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले में 'एर्नाम्मा पल्लू डिब्बा (Ernamma Pallu Dibba)' नामक एक टीले पर से बौद्ध अवशेष प्राप्त हुए है।
- इन अवशेषों की प्राप्ति विजयवाड़ा और अमरावती के सांस्कृतिक केंद्र की एक पहल "भावी पीढ़ी के लिए विरासत का संरक्षण" (प्रिज़र्व हेरिटेज फॉर पास्टेरिटी) अभियान के तहत की गई खुदाई में हुई।

यह क्या है?

- अवशेषों (चूना पत्थर के स्तम्भ) पर अर्द्ध-कमल पदक (half-lotus medallions), दो चूना पत्थर फ़लक, बुद्ध की प्रतिमा का एक अंश तराशे गए हैं।
- शैली और वास्तुकला के आधार पर, ये अवशेष आरम्भिक तीसरी शताब्दी ईसवी (AD) अर्थात् इक्ष्वाकु काल के हैं।

VISION IAS

6.5. योग-मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर

(Yoga-Intangible Cultural Heritage of Humanity)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- अदीस अबाबा, इथियोपिया में आयोजित अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा के लिए अंतर सरकारी समिति की 11वीं बैठक में मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरों की UNESCO की सूची में एक तत्व के रूप में योग को सूचीबद्ध किया गया है।
- योग, भारत से अभी तक सूचीबद्ध होने वाला 13वां अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर बन गया है।

UNESCO की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की सूची के संबंध में

- यह सूची में 2008 में स्थापित की गई थी जब *'कन्वेंशन फॉर सेफगार्डिंग ऑफ़ द इन्टैन्जबल कल्चरल हेरिटेज'* प्रभाव में आया।
- इसमें विश्व भर की महत्वपूर्ण अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर सम्मिलित हैं। इसके दो भाग हैं:
- ✓ मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरों की प्रतिनिधि सूची। (Representative List of Intangible Cultural Heritage of Humanity)
- ✓ त्वरित संरक्षण की आवश्यकता वाली अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरों की सूची (List of Intangible Cultural Heritage in Need of urgent Safeguarding)।
- इस सूची में 814 सांस्कृतिक स्थल, 203 प्राकृतिक तथा 35 प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक दोनों प्रकार के स्थल सम्मिलित हैं।

इससे पहले भारत की ओर से सूचीबद्ध सांस्कृतिक धरोहरें

सांस्कृतिक धरोहर का नाम	स्थान	वर्ष जिसमें सूचीबद्ध किया गया
जांडियाला गुरु के ठठेरों के बीच बर्तन बनाने का पारंपरिक पीतल और तांबे का शिल्प।	पंजाब	2014
संकीर्तन- अनुष्ठानिक गायन, ढोल वादन और नृत्य	मणिपुर	2013
लद्दाख का बौद्ध कीर्तन या भजन-हिमालय पार लद्दाख क्षेत्र में पवित्र बौद्ध ग्रंथों का सस्वर पाठ।	जम्मू-कश्मीर	2012
कालबेलिया लोक गीत और नृत्य	राजस्थान	2010
छऊ नृत्य	पूर्वी भारत	2010
मुदीयेट्टु- अनुष्ठानिक रंगमंच और नृत्य नाटिका	केरल	2010
रम्मन-धार्मिक त्योहार और अनुष्ठानिक रंगमंच	उत्तराखंड	2009
नवरोज़– 21 मार्च को वर्ष का आरंभ चिह्नित करता है	भारत	2009
रामलीला-रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन	उत्तर भारत	2008
वैदिक जप की परंपरा।		2008
कुटियट्टम (कूडियाट्टम) - संस्कृत रंगमंच	केरल	2008

6.6. वडक्कुन्नाथन मंदिर

(Vadakkunnathan Temple)

- केरल के श्री वडक्कुन्नाथन मन्दिर को सांस्कृतिक विरासत संरक्षण के लिए इस वर्ष के यूनेस्को एशिया-प्रशांत पुरस्कारों के अंतर्गत उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त हुआ है।
- यह पुरस्कार इस पवित्र स्थल से संबंधित संरक्षण के उल्लेखनीय प्रयास के लिए दिया गया था जिसमें वास्तु शास्त्र (स्थापत्य एवं निर्माण पर केन्द्रित एक पारंपरिक/प्राचीन भारतीय विज्ञान) से उद्धृत युगों, पुरानी प्रथाओं एवं संरक्षण तकनीकों का इस्तेमाल किया गया है।
- यह त्रिशूर जिले में स्थित है और वास्तुकला की केरल शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
- मंदिर में महाभारत के कुछ विषय एवं कला के कुछ अन्य स्वरूपों सहित कई सजावटी भित्ति चित्र विद्यमान हैं।

पार्वती नंदन गणपति मंदिर, पुणे, महाराष्ट्र

- इसका उल्लेख सांस्कृतिक विरासत संरक्षण के लिए यूनेस्को एशिया-प्रशांत पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं की सूची में किया गया है।
- छत्रपति शिवाजी की मां जीजाबाई के द्वारा 17 वीं सदी में इस मंदिर का जीर्णोद्धार कराया गया।
- मंदिर महाराष्ट्र के मुख्य देवता भगवान गणेश को समर्पित है।
- मंदिर में एक गर्भगृह (आतंरिक भाग) 'मंडप' (बाहरी अहाता), सभामन्ड़प (एकत्रित होने के लिए बना विशाल स्थल), 'शिखर' (छत) और मुख्य प्रवेश द्वार है।

- सांस्कृतिक विरासत संरक्षण कार्यक्रम से संबंधित यूनेस्को एशिया-प्रशांत पुरस्कार निजी व्यक्तियों और संगठनों जिनके द्वारा किसी क्षेत्र में संरचनाओं और सांस्कृतिक विरासतों से संबद्ध भवनों के पुनरोद्धार और संरक्षण का कार्य सफलतापूर्वक संपन्न किया गया है, के प्रयासों को मान्यता प्रदान करता है।
- प्रयासों को मान्यता प्रदान करने वाला यह पुरस्कार अन्य संपत्ति मालिकों को सांस्कृतिक विरासतों के संरक्षण के लिए अपने समुदाय के भीतर या तो स्वतंत्र रूप से या सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से संरक्षण परियोजनाओं को शुरू करने के लिए, प्रोत्साहित करना चाहता है।

6.7. मुजीरिस विरासत परियोजना

(Muziris Heritage Project)

- राष्ट्रपति द्वारा मुजीरिस विरासत परियोजना का उद्घाटन किया गया। यह परियोजना केरल सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा कार्यान्वित की जा रही है तथा इसे भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय के द्वारा सहयोग प्रदान किया जा रहा है
- मुजीरिस विरासत परियोजना जोकि छह वर्ष पहले शुरू की गई थी, एक महत्वाकांक्षी परियोजना है जिसमें
  - ✓ चेन्नामंगलम महलों, चेरामन परंबु,
  - ✓ उत्तर परावूर के यहूदी उपासनागृह और बंदरगाह/ तटीय नगर भाग,
  - ✓ गोथुरुथु स्थित प्रदर्शन केंद्र,
  - ✓ पल्लीपुरम के एक संग्रहालय, आदि के विकास के कार्यों को शामिल किया गया है।
- इस परियोजना में ऐसे पुरातात्विक स्मारकों के संरक्षण की परिकल्पना भी की गई है जोकि त्रिशूर और एर्नाकुलम जिलों के आस-पास 125 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैले हुए हैं।
- मुजीरिस केरल के पश्चिमी समुद्री तट पर प्राचीन काल का बड़ा बंदरगाह था, जिससे मसालों से लेकर कीमती पत्थरों तक सभी वस्तुओं का व्यापार किया जाता था।
- मुजीरिस संस्कृतियों, धर्मों और जातियों के लिए भारत में एक द्वार के समान था।अरब, मिस्र, यूनानी, रोमन और चीन आदि देशों के समुद्री व्यापारियों के बड़े जहाज, अक्सर दुनिया भर से यहां दौरा किया करते थे।
- परियोजना का अगला चरण 'मसाला मार्ग पहल'(Spice Route Initiative)' है।इस प्रयास के अंतर्गत उन अंतरराष्ट्रीय संबंधों और संपर्कों की खोज करेगा जो पूर्व में मालाबार तट के माध्यम से दुनिया के अनेक हिस्सों के साथ स्थापित थे।
- इस चरण को यूनेस्को और संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन के सहयोग से लागू किया जाएगा। केरल पर्यटन ने 'विरासत और संस्कृति' में वर्ष 2015 का पैसिफिक एशिया ट्रैवेल एसोसिएशन (PATA) पुरस्कार जीता है।

6.8. बोध गया-आध्यात्मिक राजधानी

(Bodh Gaya – Spiritual Capital)

- भारत सरकार ने भारत तथा शेष विश्व के बौद्धों को साझी सभ्यता के सूत्र में बाँधने के उद्देश्य से बोधगया को एक आध्यात्मिक राजधानी के रूप में विकसित करने का निर्णय लिया है।
- बोधगया सम्पूर्ण विश्व में बौद्ध धर्म का पवित्रतम स्थल है।
- निरंजना नदी (वर्तमान में फल्गु नदी) के तट पर स्थित यह स्थल बुद्ध के समय में उरुवेला नाम से जाना जाता था।
- बोधगया का मुख्य बौद्ध मठ बोधिमंड-विहार (पाली में) के नाम से जाना जाता था। अब यह महाबोधि मंदिर के नाम से जाना जाता है।

VISION IAS

बोधगया

- यहीं पर एक वट वृक्ष, जिसे बोधि वृक्ष कहा जाता है, के नीचे गौतम ज्ञान प्राप्त करके बुद्ध (जिसे बोध हो चुका हो) कहलाये।
- यह मंदिर कई शताब्दियों, संस्कृतियों और धरोहरों का एक वास्तु शिल्पीय मेल है।
- इसकी वास्तुकला गुप्त युग का एक विशिष्ट प्रतीक है, एवं इसमें आगे की शताब्दियों के शिलालेख भी हैं जिनमें 7 वीं से 10 वीं शताब्दियों के बीच श्रीलंका, चीन व म्यांमार से आने वाले यात्रियों का विवरण दिया गया है।
- बोधगया में लगभग सभी प्रमुख बौद्ध देशों के मठ हैं।

महाबोधि मंदिर के बारे में

- यह उस स्थान को दर्शाता है जहां बुद्ध को आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई थी।
- यह मंदिर पूर्वी भारत में ईंटों की सबसे पुरानी संरचनाओं में से एक है। कई शताब्दियों तक इस मंदिर ने ईंट वास्तुकला के विकास को प्रभावित किया।
- यह तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व में सम्राट अशोक द्वारा बनवाया गया प्रथम मंदिर है। हालांकि, वर्तमान मंदिर 5 वीं-6वीं शताब्दी ईसवी के हैं, जो गुप्तोत्तर काल से संबंधित हैं।

वेसाक के बारे में

- वेसाक पोया अथवा बुद्ध पूर्णिमा और बुद्ध जयन्ती, दक्षिण एशियाई और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में विभिन्न दिवसों में बौद्धों द्वारा पारंपरिक रूप से मनाया जाने वाला पवित्र दिन है।
- थेरवाद या दक्षिणी परंपरा में यह दिन गौतम बुद्ध के जन्म, आत्मज्ञान (निर्वाण) और मृत्यु (परिनिर्वाण) की स्मृति में मनाया जाता है।
- इस संस्कार का नाम अप्रैल-मई में पड़ने वाले हिंदू कैलेंडर के एक माह 'वैशाख' को दर्शाता है।
- इस अवसर पर अनुयायी एकत्र होते हैं तथा पवित्र त्रिरत्न : बुद्ध, धम्म (उनकी शिक्षाएं), और संघ (उनके शिष्यों) का स्तुतिगान करते हैं।

6.9. अमरावती:आन्ध्र प्रदेश की नयी राजधानी

(Amravati: New Capital of Andhra Pradesh)

- अमरावती को आंध्र प्रदेश की आगामी राजधानी के रूप में अनुमोदित किया गया है।
- कृष्णा नदी के तट पर अवस्थित यह नगर प्राचीन काल में सातवाहन शासकों के साम्राज्य की राजधानी थी।
- आंध्र प्रदेश मंत्रिमंडल ने सिंगापुर सरकार द्वारा तैयार किए गए मास्टर प्लान के पहले चरण को स्वीकृति भी दे दी है।
- भगवान अमरेश्वर के मंदिर के नाम पर इस शहर का नाम अमरावती रखा गया था। इसे 'दक्षिण की काशी' भी कहा जाता है। बौद्ध धर्म में भी इस शहर की महत्ता है।
- आंध्र मूर्ति कला सामान्यतः अमरावती शैली के नाम से ही जानी जाती है। अमरावती में स्तूप एक विशेष प्रकार के सफेद हरे संगमरमर के बने थे।

6.10. प्राचीन ताम्र-पत्र पर उत्कीर्ण विषयवस्तु की व्याख्या

(Decoding of text on an ancient Copper Plate)

दक्षिण एशिया की पांडुलिपियों और दुर्लभ ग्रंथों का सबसे बड़े संग्रह-स्थल भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट (BORI), के शोधकर्ताओं ने एक ताम्र-पत्र की व्याख्या की है।

ताम्र-पत्र से प्राप्त निष्कर्ष

- चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय के हाथों सम्राट हर्षवर्धन के पराजित होने का काल 618 ईस्वी निर्धारित किया गया है।
- पहले यह माना जाता था कि यह लड़ाई 612 ईसवी से 634 ईसवी के बीच किसी समय हुई थी। लेकिन अब, यह निश्चित रूप से बताया जा सकता है कि यह लड़ाई 618-619 ईसवी को सर्दियों में हुई थी।
- ताम्रपत्र 610-611 ईसवी में पुलकेशिन द्वितीय के राज्याभिषेक का विवरण को निर्धारित करने में भी उपयोगी है।

हर्षवर्धन और पुलकेशिन द्वितीय के बीच युद्ध

- यह युद्ध नर्मदा तट पर हुआ था।
- चालुक्य राजधानी बादामी के राजा पुलकेशिन ने हर्ष के विजय अभियान को चुनौती दी।
- हर्ष दक्षिण में एक शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वी के अस्तित्व को बर्दाश्त करने को तैयार नहीं था, वह एक बड़ी सेना के साथ कन्नौज से निकल पड़ा।

- वस्तुतः पुलकेशिन द्वितीय द्वारा नर्मदा नदी के दर्रों की सुरक्षा इतने कुशल तरीके से की गई थी कि हर्ष नदी को सीमा बिंदु के रूप में स्वीकार करने के लिए विवश हो गया और अत्यधिक संख्या में अपने हाथियों को खोने के बाद युद्ध के मैदान से वापस लौट गया।

6.11. चन्देस्वरर की चोल मूर्तिकला

(Chola Sculpture of Chandesvarar)

10वीं सदी ईसवी की मानी जाने वाली चंदेस्वरर की एक मूर्ति तमिलनाडु के त्रिची में उम्मैयलपूरम के निकट सुंडईक्कई गांव में प्राप्त हुई है।

मूर्तिकला का विवरण

- इस मूर्ति के सिर के बालों को 'जटाभरा' (एक प्रकार का हेयर स्टाइल, जिसे शिव धारण करते थे) के रूप में व्यवस्थित किया गया है, जिसे सामान्यतः वृहत संख्या में चोटियों के झुण्ड के रूप में धारण किया गया है।
- कूल्हे की पोषाक छोटी और लहराती हुई अवस्था में है, जो कमर के चारों ओर अच्छी तरह से लिपटे हुए एक वस्त्र से सुरक्षित है, जिसे 'इडाक्कात्तु (idaikkattu) कहा जाता है।
- यह मूर्ति सुहासन (suhasana)' की मुद्रा में है, जहाँ एक पैर मुड़ा हुआ और आसन पर टिका हुआ है, जबकि दूसरा पैर मूर्तितल पर है।

चन्देस्वरर के बारे में

- चन्देस्वरर शैव संप्रदाय के 63 नयनार संतों में से एक हैं और इन्हें मंदिरों में सबसे पहले जगह मिली थी।
- इन्हें इष्टदेव के समक्ष सभी शैव मंदिरों के उत्तरी किनारे पर एक अलग मंदिर में स्थापित किया गया है।
- चन्देस्वरर का सबसे प्रतिष्ठित मंदिर तंजावुर के राजराजेस्वरम में राजराजा प्रथम द्वारा बनवाया गया था।

नयनार:

- 7वीं से 9वीं सदी के दौरान, दक्षिण भारत में नयनार (शिव को समर्पित संत) और अलवार (विष्णु को समर्पित संत) संतों (जो "अछूत" माने जाने वाली जातियों सहित सभी जातियों से संबंधित थे) के नेतृत्व मे नए धार्मिक आंदोलन देखने को मिलते हैं।
- वे बौद्ध और जैन सम्प्रदायों की आलोचना किया करते थे तथा मोक्ष के मार्ग के रूप में शिव या विष्णु की आराधना/भक्ति का प्रचार करते थे।
- उन्होंने संगम साहित्य में प्रदर्शित प्यार और वीरता के आदर्शों से सीख लिया तथा उन्हें भक्ति के मूल्यों के साथ मिश्रित किया।
- नयनारों की कुल संख्या 63 थी, तथा वे विभिन्न जातिगत पृष्ठभूमि से ताल्लुक रखते थे, जैसे- कुम्हार, अछूत, मजदूर, किसान, शिकारी, सैनिक, ब्राह्मण और प्रमुख।
- उनमें से अप्पार, संबंदर, सुन्दरर और मानिक्कावसगर सर्वाधिक लोकप्रिय थे ।
- उनके गीतों के संकलन के दो संग्रह/खंड हैं – तेवरम और तिरुवाककम।

6.12. हुमायूँ का मकबरा

(Humayun's Tomb)

- विशेषज्ञों के एक दल ने औद्योगिक परिशुद्धता के साथ पारंपरिक शिल्प कौशल का इस्तेमाल करते हुए 2 वर्ष पहले एक तूफान में क्षतिग्रस्त हुए 16वीं सदी के हुमांयू के मकबरे पर स्वर्ण स्तूपिका को फिर से स्थापित किया।
- पिछली बार इस स्तूपिका की सन 1912 में अंग्रेजो द्वारा तोड़ कर मरम्मत की गयी थी। उन्होंने इसका दस्तावेजीकरण भी किया था।

मकबरे के बारे में

- यह मकबरा उसकी विधवा बेघा बेगम द्वारा दिल्ली में बनवाया गया था।
- यह ईमारत लाल बलुआ पत्थर द्वारा बनाई गयी थी जिसके किनारों पर संगमरमर का प्रयोग किया गया था।

- यह भव्य समाधि स्थल फारसी स्थापत्य कला और भारतीय परंपराओं का संश्लिष्ट रूप है। यह सीरियन और पूर्ववर्ती इस्लामी मॉडल से प्रेरित है।
- इसने शाहदरा लाहौर में स्थित जहांगीर की समाधि एवं साथ ही आगरा के ताजमहल के लिए एक वास्तुशिल्प प्रेरणा के रूप में कार्य किया।
- यह मकबरा एक वर्गाकार बाग़ के केंद्र में अवस्थित है जो पक्की सड़कों (चारबाग) द्वारा चार भागों में विभाजित है, जिसके केंद्र में उथली जल धारा बहती है।
- धनुषाकार मेहराबदार ताखा, गलियारे और उच्च दोहरे गुंबद के साथ ही कियोस्क (छतरियां) दूर से इसे एक पिरामिड का आकार देते हैं।

6.13. तिरूमलई नायक महल

(Trinumalai Nayak Palace)

- 17वीं सदी में 20 एकड़ भूमि पर बने इस महल में राजा तिरूमलई नायक ने दक्षिण भारत की भव्यता का प्रदर्शन किया था।
- यह महल द्रविड और राजपूत शैली का शास्त्रीय संगम है।
- 1636 में निर्मित यह महल अपने 248 खंभों के लिए प्रसिद्ध है।
- वर्तमान में मूल संरचना का सिर्फ एक चौथाई अंश ही बाकी है।
- स्वतंत्रता पश्चात इस महल को राष्ट्रीय स्मारक घोषित कर दिया गया।

6.14. सीढ़ीदार कुएं

(Step Wells)

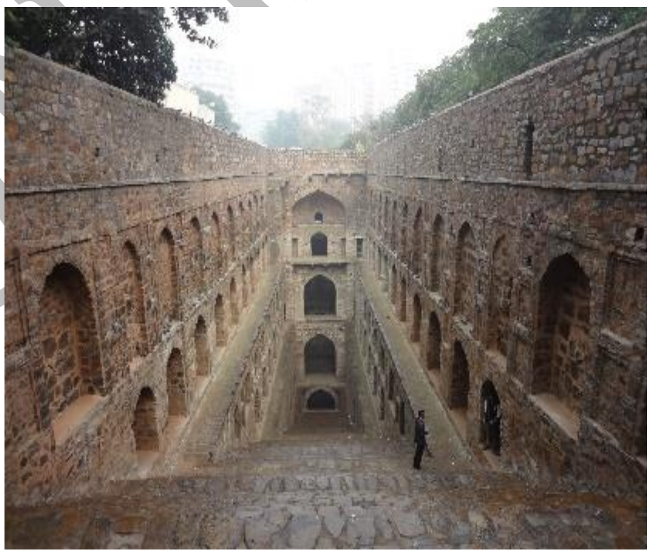

सुर्ख़ियों में क्यों?

- दिल्ली सरकार का 2017 का कैलंडर ,दिल्ली में बावलियों के इतिहास को महिमामंडित करता है।
- ASI के अनुसार, दिल्ली में 16 बावलियां हैं और उनमें से अधिकांश अत्यंत ख़राब अवस्था में हैं।

बावलियों के संबंध में

- सीढ़ीदार कुएं ऐसे कुएं या तालाब होते हैं जिसमें जल तक कई सीढ़ीयां उतरकर पहुँचा जा सकता है।
- सीढ़ीदार कुओं के सभी रूप कई प्रकार के भंडारण और सिंचाई कुण्डों का उदाहरण हैं जिनका, जल की उपलब्धता में मौसमी उतार चढ़ाव का सामना करने के लिए विकास किया गया था।
- सीढ़ीदार कुओं का वास्तुकलात्मक महत्व है।
- ये पश्चिमी भारत में बहुत आम हैं और पाकिस्तान सहित दक्षिण एशिया के अन्य अधिक शुष्क विस्तृत क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
- **सीढ़ीदार कुओं** तथा **कुण्डों** एवं **कुओं** के बीच मूलभूत अंतर लोगों की भूजल तक पहुंच आसान बनाना था और कुओं का भलीभांति अनुरक्षण और प्रबंधन करना था।

संक्षिप्त इतिहास

- सीढ़ीदार कुओं को धोलावीरा और मोहनजोदड़ो जैसे सिंधु घाटी सभ्यता के स्थलों में देखा जा सकता है।
- मोहनजोदड़ो में ईंट के अस्तर वाले बेलनाकार कुएं थे जो संभवत: सीढ़ीदार कुओं के पूर्ववर्ती थे।
- भारत में चट्टानों को काटकर बनाए गए पहले सीढ़ीदार कुओं की तिथि 200-400 ईस्वी है।
- सीढ़ीयों वाले स्नानागार सदृश तालाबों का प्रारंभिक उदाहरण जूनागढ़ की अपरकोट गुफाओं में पाया जाता है।
- राजकोट जिले के ढांक में सीढ़ीदार कुओं की उपस्थिति का काल 550-625 ईस्वी है।
- भीनमाल (राजस्थान) के सीढ़ीदार तालाबों की उपस्थिति का काल 850-950 ईस्वी है।

6.15. केम्पे गौडा काल का मंडप

(Kempe Gowda ERA Mantapa)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में बेंगलुरू में होसकेरेहल्ली झील में अवगादन(desilting) कार्य के दौरान केम्पे-गौडा काल के माने जाने वाले ऐतिहासिक अवशेष का उत्खनन किया गया, जिसे मंडप (mantapa) कहा जाता है।
- यह धूसर-काले ग्रेनाइट का बना हुआ है।

मंडप

- यह चार स्तम्भों वाली संरचना होती है, जिसमें छत एवं फर्श दोनों सम्मिलित होते हैं, जो वस्तुत: पाषाण पट्टिकाएँ होती हैं।
- यह पुष्प नक्काशियों से सुसज्जित होता है, जबकि छत पर एक गड्ढा होता है जो पालने (क्रेडल) जैसा प्रतीत होता है।
- स्थानीय रूप से इसे गंगाम्माना थोट्टिलु (गंगा जी का पालना) के नाम से जाना जाता है।

केम्पे गौडा कौन थे?

- ये विजयनगर साम्राज्य के अंतर्गत एक सामंत थे, जिन्होंने 16 वीं शताब्दी के दौरान कर्नाटक के अधिकांश भाग पर शासन किया।
- ये बेंगलुरु नगर के संस्थापक माने जाते हैं। एक कथा के अनुसार, इन्होंने 16 वीं शताब्दी में होसकेरेहल्ली झील का निर्माण किया।

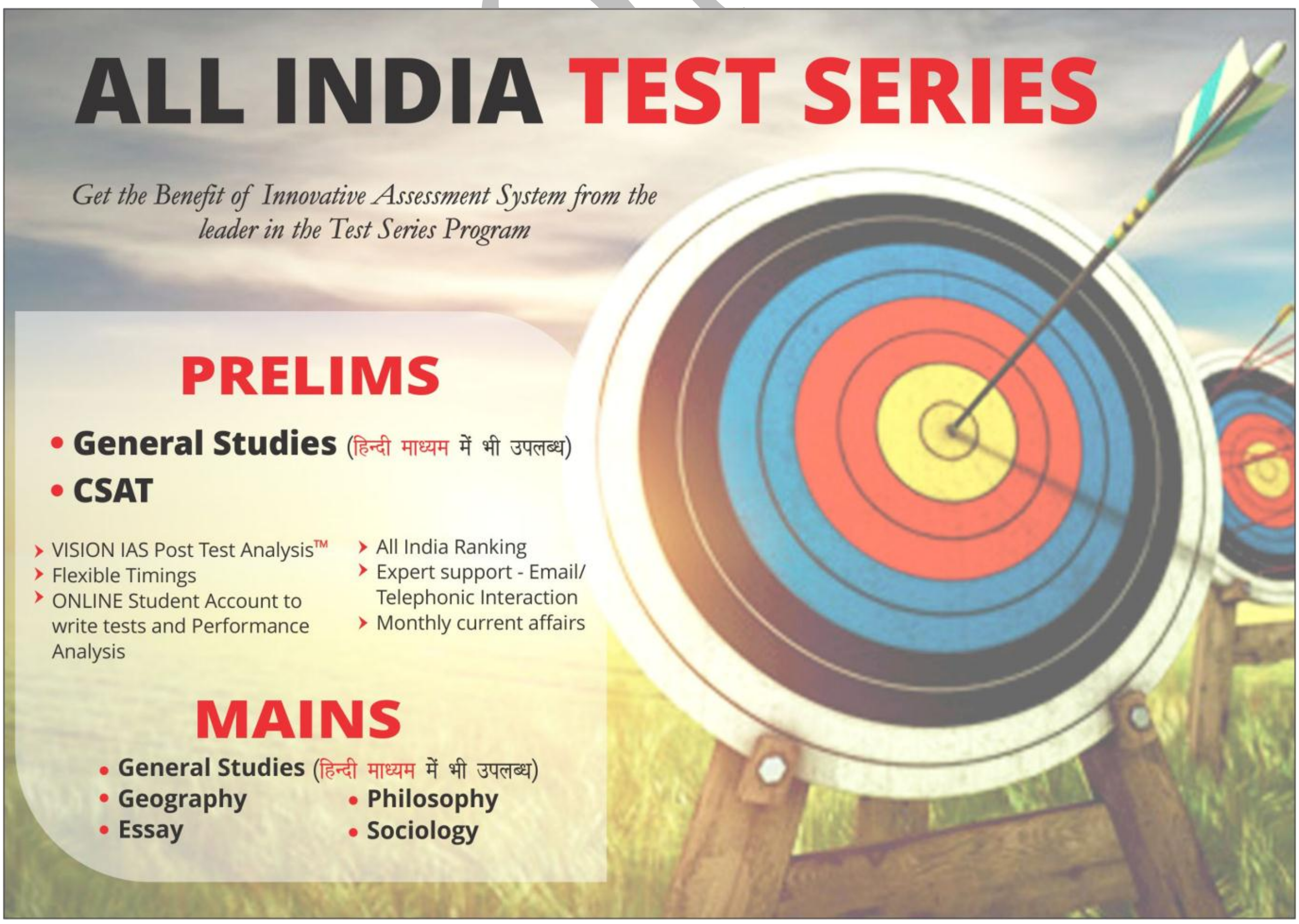

7. प्राचीन भारत

(ANCIENT INDIA)

7.1.विश्व की प्राचीनतम शैल चित्रकला पाई गई

(World's Oldest Rock Art Found)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- मध्य प्रदेश में स्थित एवं विश्व विरासत स्थल की मान्यता प्राप्त भीमबेटका के शैलाश्रयों एवं मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले में भानपुरा के निकट धराकी-चट्टान (पहाड़ी) के शैलाश्रयों में प्रागैतिहासिक चित्रकला (शिलोत्कीर्णन/Petroglyphs) पाई गई हैं। ये 2-5 लाख वर्ष पुरानी हैं।

सभागार (ऑडिटोरियम) गुफा, भीमबेटका

- दस प्यालिकाएँ (कप जैसी संरचनाएँ) पायी गयी हैं, जो एश्युलियन काल (Acheulian period) के अवशेषों से ढकी हुई थी।
- इन शिलोत्कीर्णनों को अत्यधिक पुन:क्रिस्टलित (recrystallized), अत्यधिक कठोर क्वाट्ज़ाइट पर निर्मित किया गया था जिनका निम्न पुरापाषाण युग (lower Palaeolithic) के दौरान बड़े पैमाने पर खनन किया गया था।
- ये प्यालिकाएँ गैर-प्रकार्यात्मक कप के आकार के गड्ढों जैसी हैं। ये बार-बार मानव द्वारा डाले गए आघातों (उठने-बैठने) से बनी हैं।

धराकी-चट्टान शैलाश्रय

मध्य प्रदेश की भानपुरा तहसील के निकट इन्द्रगढ़ पहाड़ी में द्वितीय पुरा पाषाण युगीन स्थल धराकी चट्टान, जो एक लघु, संकीर्ण और गहरी गुफा हैं। यहाँ पर 498 प्यालिकाओं से सघनतापूर्वक बने गड्ढों से युक्त दो ऊर्ध्वाधर पैनल पाए गए थे। ये निम्न पुरापाषाण युगीन *चोपिंग टूल कल्चर* (chopping tool culture) काल के हैं।

शिलोत्कीर्णन क्या है?

प्रागैतिहासिक काल में, 'शिलोत्कीर्णन' पद का प्रयोग किसी शैल सतह पर खरोंचकर, उत्कीर्णन द्वारा, तराशकर, नक्काशी कर या इसी प्रकार की किसी अन्य विधि से बनाई गई छवि को अंकित करने के लिए किया जाता है। (इसे अंग्रेजी में petroglyphs कहते हैं जो ग्रीक शब्द "petra" अर्थात पत्थर और "glyphein" अर्थात नक्काशी करना से मिलकर बना है।)

शिलोत्कीर्णन और शैल चित्रकला में अंतर

शिलोत्कीर्णन एक पत्थर पर की गयी महीन कारीगरी होती है जबकि "शैल चित्रकला" एक व्यापक शब्दावली है जो तीन प्रकार की कलाओं को समाविष्ट करती है: (1) शिलोत्कीर्णन; (2) चित्रालेख, जिसमें गुफा चित्रकलाएँ या चित्रमय प्रतीक के कई अन्य रूप सम्मिलित होते हैं; और (3) महापाषाण कला (Megalithic Art), या पेट्रोफॉर्म, जिसमें पत्थर को विशिष्ट क्रम में व्यवस्थित किया जाता है।

7.2. बुद्धवनम परियोजना

(Buddhavanam Project)

- यह तेलंगाना राज्य पर्यटन विकास निगम (TSTDC) का एक बुद्धिस्ट हेरिटेज थीम पार्क है। इस थीम पार्क पर 2005 में विचार किया गया था।
- ऐतिहासिक रूप से, यह वह स्थान था जहाँ आचार्य नागार्जुन ने विश्वविद्यालय की स्थापना की। यह अन्य देशों में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए मुख्य केंद्र था।
- यह बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाओं का चित्रण करने वाले कई विषयगत क्षेत्रों को समाविष्ट करने वाली देश में अपनी तरह की पहली परियोजना है।

आचार्य नागार्जुन (द्वितीय बुद्ध/ चिकित्सक बुद्ध के रूप में भी प्रसिद्ध) के संबंध में

- वह महायान बौद्ध धर्म के माध्यमिक (मध्य मार्ग) संप्रदाय के दार्शनिक और संस्थापक थे।
- वह स्वयं बुद्ध के बाद सबसे प्रभावशाली बौद्ध विचारक थे।
- उन्हें आयुर्वेद के प्राचीन विद्वानों और शिक्षकों में से एक माना जाता है।

VISION IAS

7.3. तीन भारतीय स्थल यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल

(Three Indian Sites Gets Into World Heritage List)

सुर्ख़ियों में क्यों ?

- **यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज कमिटी ने अपनी 40वीं बैठक में तीन भारतीय स्थलों को विश्व विरासत सूची में शामिल करने** की अधिसूचना जारी की है।

- इन स्थलों में **चंडीगढ़ में स्थित भव्य कैपिटल कॉम्प्लेक्स, कंचनजंघा पर्वत** और बिहार के **नालंदा महाविहार (नालंदा विश्वविद्यालय) में स्थित पुरातात्विक स्थल** शामिल हैं।
- ऐसा पहली बार हुआ है कि भारत में स्थित किसी **मिश्रित श्रेणी वाले स्थल (मिक्स्ड साइट)** को विरासत स्थल का दर्जा मिला है। एक *मिक्स्ड साइट* ऐसा स्थल होता है जो प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक महत्व एक साथ धारण करता है।
- साथ ही यह भी पहली बार हुआ है कि किसी भी देश के तीन स्थलों को एक ही सत्र में विश्व विरासत स्थलों के रूप में अधिसूचित किया गया हो।

भारत में अवस्थित विरासत स्थल :

- वर्तमान में भारत में कुल **35 विश्व विरासत स्थल** हैं जिनमें से **27 सांस्कृतिक, 7 प्राकृतिक** और **1 मिश्रित श्रेणी** के हैं।

7.3.1 कंचनजंघा नेशनल पार्क (KNP), सिक्किम (कंचनजंघा बायोस्फीयर रिजर्व)

(Khangchendzonga National Park (KNP), Sikkim (Kanchenjunga Biosphere Reserve)

- यह भारत में पहला और एकमात्र ऐसा मिश्रित स्थल है जिसे विश्व विरासत स्थल के रूप में अधिसूचित किया जाना है।
- इस पार्क में सिक्किम का 25 प्रतिशत भू-भाग सम्मिलित है तथा यह पार्क **विश्व के सर्वाधिक दुर्गम तुंगता वाले संरक्षित क्षेत्रों में से एक** है।
- यह बर्फ से ढके पहाड़ों और खड़ी घाटियों की एक अद्वितीय स्थलाकृति है। यहाँ विश्व की तीसरी सर्वाधिक ऊंची पर्वत चोटी- कंचनजंघा स्थित है।
- यह दुर्लभ स्थानिक और थ्रेटन्ड (threatened) पौधों एवं जन्तु प्रजातियों का निवास स्थल है। यहाँ कस्तूरी मृग, हिम तेंदुए और हिमालयी तहर निवास करते हैं।
- यह बौद्ध धर्म की धार्मिक और सांस्कृतिक प्रथाओं के लिए महत्त्वपूर्ण स्थल है तथा साथ ही इसका पारिस्थितिक महत्व भी है। इसीलिए इसे एक मिश्रित स्थल (मिक्स्ड साइट) के रूप में अधिसूचित किया गया है।
- यहाँ ज़ेमु ग्लेशियर सहित कई ग्लेशियर भी मौजूद हैं।
- इस पार्क में कुछ लेपचा जनजातियों की बस्तियां भी उपस्थित हैं। लेपचा सिक्किम का एक स्थानीय आदिवासी समुदाय है। इनकी जनसंख्या 30,000 से 50,000 के बीच है।

विश्व विरासत स्थल क्या है?

- एक विश्व विरासत स्थल ऐसा स्थान (जैसे कि कोई इमारत, शहर, कॉम्प्लेक्स, रेगिस्तान, जंगल, द्वीप, झील, स्मारक, या पहाड़) होता है जिसे उसके सांस्कृतिक या भौतिक महत्व के कारण यूनेस्को द्वारा अधिसूचित किया जाता है।
- यूनेस्को द्वारा 1972 में 'कन्वेंशन कंसर्निंग द प्रोटेक्शन ऑफ़ द वर्ल्डस कल्चरल एंड नेचुरल हेरिटेज' अपनाया गया था।
- विश्व विरासत स्थलों की सूची यूनेस्को की विश्व विरासत समिति (वर्ल्ड हेरिटेज कमिटी) द्वारा अनुरक्षित की जाती है। यह समिति महासभा द्वारा निर्वाचित 21 सदस्य देशों से मिलकर बनती है।

7.3.2 चंडीगढ़ का कैपिटल कॉम्प्लेक्स

(Chandigarh's Capitol Complex)

- इस कैपिटल कॉम्प्लेक्स में तीन भवन, तीन स्मारक और एक झील सम्मिलित है।
- इसे 1950 के दशक में फ्रांसीसी वास्तुकार ली कार्बुजिए द्वारा डिजाइन किया गया था।
- यह परिसर फ्रांस और भारत सहित 7 देशों में उपस्थित ली कार्बुजिए के उन 17 कार्यों में से एक है जिन्हें एकल प्रविष्टि (single entry) के रूप में एक साथ सूची में शामिल किया गया है।
- कैपिटल कॉम्प्लेक्स में विधान सभा सचिवालय, उच्च न्यायालय, ओपन हैण्ड मोन्यूमेंट, जियोमेट्रिक हिल और टॉवर ऑफ़ शैडो शामिल हैं।
- ली कार्बुजिए एक स्विस-फ्रेंच आर्किटेक्ट और अर्बन प्लानर थे तथा उन्हें आधुनिक वास्तुकला के अग्रदूतों में से एक के रूप में जाना जाता है।
- उन्हें "फाइव पॉइंट्स फॉर मॉडर्न आर्कीटेक्चर" के लिए जाना जाता है और उन्हें एक *फंक्शनलिस्ट (functionalist) और रेशनलिस्ट (rationalist)* भी कहा जाता है।

7.3.3.नालंदा महाविहार (नालंदा विश्वविद्यालय), बिहार

(Nalanda Mahavihara (Nalanda University), Bihar)

- यह भारत का प्राचीनतम विश्वविद्यालय है।
- यह 800 वर्षों तक अनवरत, ज्ञान के सुनियोजित प्रसारण में संलग्न रहा है।
- इस स्थापत्य में तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से तेरहवीं शताब्दी ईसा पूर्व के बीच निर्मित एक मठ और शैक्षिक संस्था के पुरातात्विक अवशेष शामिल हैं।
- इसमें स्तूप, धार्मिक स्थल, विहार शामिल हैं तथा साथ ही प्लास्टर, पत्थर और धातु की महत्वपूर्ण कलाकृतियां भी शामिल है
- इस स्थल का ऐतिहासिक विकास, बौद्ध परंपरा के एक धर्म के रूप में विकास और मठवासी परंपराओं के उत्कर्ष को प्रमाणित करता है।

7.4. हरिकथा

(Harikatha)

- हरिकथा का मुख्य उद्देश्य लोगों के हृदय में धर्म और सत्य की भावना को आत्मसात कराना है।
- इसकी जड़ें महाराष्ट्र की कीर्तन परंपरा में विद्यमान है।
- इसमें संगीत, कहानी, नृत्य, नाटक और दर्शन शामिल है।
- इसकी मुख्य विशेषता मजाकिया शैली में 'उपकथाओं' (उप-कहानियों) का आख्यान करना है।
- यह एक धर्मनिरपेक्ष कला नहीं है एवं यह अनिवार्य रूप से धार्मिक और शिक्षाप्रद है।

7.5. चीनी विद्वान जुआन झांग

(Chinese scholar Xuan Zang)

- चीनी विद्वान जुआन झांग (जिसे हुआन त्सांग या हुएनसांग भी कहा जाता है) ने लगभग 640 ईस्वी में अमरावती और नागार्जुनकोण्डा के विहारों का भ्रमण करने हेतु आन्ध्रदेश (आन्ध्र प्रदेश) की यात्रा की थी।
- आमतौर पर यह माना जाता है कि अभिधम्म पिटक की प्रतिलिपि बनाने और अध्ययन करने हेतु वह बेजवाडा (वर्तमान विजयवाड़ा) में ठहरा था। पाली सिद्धांत को संस्थापित करने वाले त्रिपिटकों ('पिटक' टोकरी के लिए पाली शब्द है) में से अंतिम पिटक अभिधम्म पिटक है। ये बौद्ध धर्म की थेरवाद शाखा के ग्रन्थ हैं।
- जुआन झांग ने इस क्षेत्र में "पूर्वी और पश्चिमी" दो बौद्ध मठों के बारे में बताया है।
- एक अन्य पुरातत्वविद् के अनुसार, जुआन झांग द्वारा उल्लिखित मठ वास्तव में विजयवाड़ा में स्थित मुगलराजपुरम गुफाएं और अक्कन्ना मदन्ना गुफाएं हैं।

VISION IAS

7.6. सिंधु घाटी सभ्यता का काल निर्धारण

[Indus Valley Civilization (IVC) Age]

- भारतीय शोधकर्ताओं ने पशुओं के अवशेषों और मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े पर कार्बन डेटिंग तकनीक का इस्तेमाल कर यह निष्कर्ष निकाला है कि सिंधु घाटी सभ्यता 8,000 वर्ष पुरानी हो सकती है, जबकि अभी तक इसे 5500 वर्ष पुरानी माना जाता है।
- यदि इस शोध के निष्कर्ष सही पाए गए तो सिंधु घाटी सभ्यता मेसोपोटेमिया और मिस्र की सभ्यताओं से भी पुरानी हो जाएगी।

अध्ययन की मुख्य विशेषताएं

- यह अध्ययन हरियाणा के भिर्राना में किया गया।
- इस स्थल पर प्राक्-हड़प्पाई हकरा चरण तथा आरंभिक विकसित हड़प्पा से लेकर पूर्ण विकसित हड़प्पा चरण तक के सभी सांस्कृतिक स्तरों के संरक्षण का पता चलता है।
- शोधकर्ताओं ने **ऑप्टिकली स्टिम्युलेटेड लूमनेसन्स** (Optically Stimulated Luminescence) नामक तकनीक का इस्तेमाल किया है।
- शोधकर्ताओं के अनुसार, जैसा कि पूर्व में माना जाता रहा है, उससे कहीं अधिक बड़े क्षेत्रफल में यह सभ्यता भारत में फैली हुई थी।

सिन्धु घाटी सभ्यता के पतन का कारण:

- शोधकर्ताओं ने इस सभ्यता के पतन के लिए एक नया कारण प्रस्तुत किया है।
- अध्ययन में यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि यद्यपि जलवायु परिवर्तन ने एक भूमिका निभायी थी परन्तु फसल पद्धति और खाद्यान्न भंडारण की तकनीक में परिवर्तन के कारण इस सभ्यता का पतन हुआ।
- शोधकर्ताओं का कहना है कि आरंभ में गहन मानसून की अवधि में गेहूं और जौ जैसे बड़े-बीज वाले खाद्यान्नों की खेती की जाती थी।
- परंतु बाद में मानसून के दौरान वर्षा की मात्रा कम होती गई और इस अवधि में लोग छोटे दाने वाले मोटे अनाजों जैसी सूखा प्रतिरोधी फसलों की खेती करने लगे।
- अब चूंकि बाद में उगाए जाने वाले इन फसलों की पैदावार आम तौर पर कम होने लगी, अतः पूर्ण विकसित हड़प्पा काल की विशाल भंडारण व्यवस्था को त्याग दिया गया।
- इसके चलते छोटे-छोटे और अधिक संख्या में एकल परिवार आधारित फसल प्रसंस्करण और भंडारण व्यवस्था का जन्म हुआ।
- इसने हड़प्पा सभ्यता के वि-नगरीकरण में उत्प्रेरक के तौर पर कार्य किया, न कि इसके अचानक पतन का कारण बना।

ऑप्टिकली स्टिम्युलेटेड लूमनेसन्स (Optically Stimulated Luminescence) वस्तुतः एक डेटिंग तकनीक है जिसका उपयोग यह पता लगाने में किया जाता है कि क्वाट्र्ज या फेल्डस्पार अवसाद आखिरी बार किस कालावधि में प्रकाश के संपर्क में आए थे। इसका मापन आयनीकृत विकिरण के माध्यम से किया जाता है।

7.7. शुल्वसूत्र

(Sulbasutras)

- कई संस्कृत ग्रंथों **को सामूहिक रूप से शुल्वसूत्र** कहा जाता है जिन्हें वैदिक हिंदुओं द्वारा 600 ईसा पूर्व से पहले लिखा गया था। वे उत्तर वैदिक संस्कृत में लिखे गए हैं।
- चार प्रमुख **शुल्वसूत्र** हैं- बौधायन, मानव, आपस्तम्ब और कात्यायन जिनमें बौधायन को सबसे पुराना माना जाता रहा है।
- **शुल्वसूत्र** में शुल्व का अर्थ रस्सी या चेन से है। शुल्व द्वारा ज्यामितीय निर्माण कार्य किये जाते हैं जिनमें विभिन्न त्रिज्याओं और केन्द्रों वाले चाप बनाए जाते थे।
- ये ग्रंथ कल्पसूत्र वंश के वैदिक परिशिष्ट हैं और इनमें ज्वाला वेदी निर्माण से संबंधित ज्यामिति शामिल है।

- अनुष्ठानों की सफलता के लिए वेदी का मापन अत्यंत सटीक होना चाहिए इसलिए यहाँ गणितीय शुद्धता महत्वपूर्ण हो जाती है।
- ऐसा माना जाता था कि परमेश्वर द्वारा विशिष्ट उपहार प्राप्त करने हेतु विशिष्ट प्रकार की यज्ञ वेदी का निर्माण किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए स्वर्ग प्राप्ति की इच्छा रखने वालों को बाज के आकार की वेदी का निर्माण करवाना चाहिए।
- इतिहासकारों के लिए इस बात का अनुमान लगा पाना मुश्किल है कि शुल्वसूत्र की गणितीय जानकारी क्या तत्कालीन व्यक्तियों ने यूनानियों के समान सिर्फ अपने लिए रखी थी या फिर यह सिर्फ धार्मिक अनुष्ठानों के लिए थी।
- कुछ नियम जैसे एक आयत के समान क्षेत्रफल वाला एक वर्ग बनाने के नियम सटीक है लेकिन एक वृत के बराबर क्षेत्रफल वाला एक वर्ग बनाने के नियम अनुमान पर आधारित हैं।
- अपनी कृति 'दि ओरिजिन ऑफ़ मैथमैटिक्स' में **ए. सीडेनबर्ग (A Seidenberg)** ने बताया कि प्राचीन बेबीलोन के पास पाइथागोरस प्रमेय का ज्ञान था, यह अत्यंत बुनियादी ज्ञान था, लेकिन बाद में केवल शुल्वसूत्र में ही इसका स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है।

7.8. प्रागैतिहासिक शैल चित्रकला स्थल की खोज

(Prehistoric Rock Art Site Discovered)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- पुरातत्वविदों ने केरल के **वायनाड जिले में सुल्तान बाथरी तालुक** स्थित गांव में **अंबुकुथी पहाड़ियों** की तलहटी में प्रागैतिहासिक शैल चित्रकला स्थल की खोज की है।

इस स्थल के संबंध में और अधिक जानकारी

- इस स्थल पर एडक्कल गुफाओं एवं थोवारी पहाड़ियों के समान ही शिलोत्कीर्णन एवं शिलालेख पाए गए हैं।
- शिलोत्कीर्णन एवं शिलालेख आमतौर पर शैलाश्रयों में पाए जाते हैं लेकिन अंबुकुथी में वे झील के किनारे स्वतंत्र रूप से स्थित 6 छोटे ग्रेनाइट खण्डों पर पाए गए हैं।
- इनकी शैली, रूपांकन और कारीगरी आश्चर्यजनक रूप से थोवारी के समान हैं। इनमें एडक्कल गुफाओं की भाँति गतिशील मुद्रा में मनुष्यों या पशुओं का चित्रण नहीं किया गया है।

एडक्कल गुफाएं

- एडक्कल गुफाएं 1895 में मालाबार राज्य के एक पूर्व पुलिस अधिकारी फ्रेड फॉसेट द्वारा खोजी गईं थीं।
- ये केरल के वायनाड जिले के सुल्थन बैथरी तालुका में अवस्थित हैं।
- इन गुफाओं का निर्माण प्राकृतिक रूप से तीन विशालकाय पत्थरों के विचित्र विन्यास से हुआ है।
- एडक्कल गुफाएं निओलिथिक पेट्रोग्लिफ्स (नवपाषाणकालीन शिलोत्कीर्णन) के लिए जानी जाती हैं।

थोवारी पहाड़ी

- 1984 में थोवारी पहाड़ी में शिलोत्कीर्णनों की खोज की गई।

7.9. कर्नाटक में मिले कापालिकों से संबंधित दुर्लभ शिलालेख

(Rare Stone Inscription on Kapalikas Found in Karnataka)

- रायचूर, कर्नाटक में कापालिकों से संबंधित लगभग हजार वर्ष पुराने शिलालेख पाए गए हैं।
- शिलालेख दिनांकित नहीं हैं, लेकिन लेख की प्रकृति के आधार पर दिनांक का अनुमान लगाया गया है।
- कापालिक परंपरा भारत की एक **गैर-पौराणिक तांत्रिक शैव परंपरा** है।
- कापालिक **भैरव** के भक्त होते हैं। भैरव, भगवान शिव का ही एक रूप है। वे एक रहस्यमयी पंथ के अनुयायी थे जिसमें संभवत: मानव बलि का प्रचलन था।
- वे मानव खोपड़ी युक्त दण्ड धारण करते थे इसलिए उन्हें कापालिक या खोपड़ी धारण करने वाला व्यक्ति कहा जाता है।
- ये शिलालेख एक 'कंकाल गोरव' (kankal gorava) को भी संदर्भित करते हैं जिसने 'सोम सिद्धांत' या कापालिक सिद्धांत पर निपुणता प्राप्त की थी।

7.10. प्राचीन धरोहरों को लौटाया गया

(Antiquities Returned)

- हाल ही में, संयुक्त राज्य अमेरिका ने 200 से अधिक चुराई गई कलाकृतियाँ भारत को वापस देने की प्रक्रिया आरंभ की है।
- वापस की जा रही कलाकृतियाँ अमेरिकी अधिकारियों द्वारा बरामद की गई उन 3000 कलाकृतियों का केवल एक छोटा सा अंश हैं जिन्हें अंततः भारत को वापस कर दिया जाएगा।

VISION IAS

पृष्ठभूमि

- यूनेस्को कन्वेंशन ऑन ओनरशिप ऑफ़ कल्चरल प्रॉपर्टी, 1970, सांस्कृतिक पुरावशेषों सहित सांस्कृतिक संपत्ति के अवैध हस्तांतरण एवं स्वामित्व के व्यापार को प्रतिबन्धित करता है।
- चुराई गई वस्तु का किसी अन्य देश में पता चलने पर उसे वापस प्राप्त करने की प्रक्रिया उस देश में भारतीय मिशन द्वारा संचालित की जाती है।
- CBI की आर्थिक अपराध शाखा पुरावशेषों संबंधी अपराधों से निपटती है। तमिलनाडु में अत्यधिक मात्रा में कलाकृतियां हैं इसलिए यहां एक CID की मूर्ति शाखा (Idol Wing-CID) है।

चुराई गई कलाकृतियां

- 2013 में 10वीं शताब्दी की 400 किग्रा वजनी वृषानन योगिनी की एक मूर्ति पेरिस से वापस लाई गई थी।
- 2014 में, ऑस्ट्रेलिया ने नटराज और अर्धनारीश्वर की मूर्तियाँ भारत को वापस लौटायी थी।
- वर्ष 2015 में तीन मूर्तियाँ भारत को वापस की गयीं- कनाडा से तोते वाली महिला (Parrot Lady) , जर्मनी से महिषासुरमर्दिनी और सिंगापुर से उमा परमेश्वरी।
- इससे पहले इस वर्ष, बलुआ पत्थर से निर्मित तीर्थंकर ऋषभनाथ की 10वीं शताब्दी की शिला तथा 8वीं शताब्दी के अश्वारोही देवता रेवन्त एवं उसके दल का चित्रण करता कई मिलियन डॉलर मूल्य का एक अति दुर्लभ बलुआ पत्थर पैनल अमेरिका में खोजा गया था।

7.11. मोगाओ गुफाएँ

(Mogao Caves)

- चीन के गान्सू प्रांत के दूनहुआंग ओएसिस (मरुस्थल के बीच हरित भूमि) के दक्षिण-पूर्व में, शुष्क गोबी मरुस्थल के बीच में दचुआन नदी (Dachuan River) के ऊपर चट्टानों में सैकड़ों की संख्या में मोगाओ गुफाएँ खुदी हुई हैं।
- ये बौद्ध भिक्षुओं के ध्यान और आश्रय के लिए बनायी गई थीं। इनमें भित्ति चित्र, चित्रित मूर्तियाँ, प्राचीन वास्तुकला, चल सांस्कृतिक अवशेष और उनके विन्यास हैं। ये गुफाएँ बौद्ध धर्म की यात्रा का विवरण देती हैं।
- बौद्ध गुफा कला का उद्भव तीसरी शताब्दी में भारत में हुआ था। यह कला भारत से दूनहुआंग तक पहुँची। दूनहुआंग सिल्क रोड एवं बामियान,कूचा-किज़िल, तुरफान का एक प्रमुख मिलन बिंदु था।
- ये गुफाएं मध्ययुगीन राजनीति, अर्थशास्त्र, संस्कृति, कला, धर्म, जातीय संबंधों और पश्चिमी चीन में दैनिक पोशाक आदि विभिन्न पहलुओं का चित्रण करने वाले प्रचुरता में जीवंत तथ्य प्रदान करती हैं।
- ये हान चीनी कलात्मक परंपरा का प्राचीन भारतीय एवं गांधार के रीति-रिवाजों तथा तुर्क, प्राचीन तिब्बतियों एवं अन्य चीनी प्रजातीय अल्पसंख्यकों की कलाओं के साथ एक मिश्रण है।
- मोगाओ गुफ़ाएँ 1987 में विश्व विरासत सूची (वर्ल्ड हेरिटेज लिस्ट) में सम्मिलित की गई हैं। एक पक्षकार देश (स्टेट पार्टी) के रूप में चीन ने सभी विश्व विरासत स्थलों को शीर्ष स्तर के संरक्षण के तहत रखा है।

8. कार्यक्रम एवं त्यौहार

(EVENTS AND FESTIVALS)

8.1 तेप्पोत्सवम

(Teppotsavam)

- यह तेलंगाना में आयोजित एक 5 दिवसीय वार्षिक नौका त्यौहार(float festival) है। यह चैत्र के महीने में मनाया जाता है।
- इस त्यौहार में एक हंसवाहनम (हंस के आकार की नाव) द्वारा भगवान राम और उनकी पत्नी सीता की मूर्तियों की शोभायात्रा गोदावरी नदी में प्रवाहित की जाती है।

8.2 अम्बुबाची महोत्सव

(Ambubachi Festival)

- यह असम के गुवाहाटी मे स्थित कामाख्या मंदिर के सर्वाधिक महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है।
- यह महोत्सव प्रत्येक वर्ष मानसून ऋतु के दौरान मनाया जाता है और इसी समय अम्बुबाची मेला भी आयोजित किया जाता है।
- कामाख्या मंदिर को देवी शक्ति के 52 शक्ति पीठों में से एक माना जाता है।
- यह तांत्रिक पंथ से सम्बद्ध है तथा यह महोत्सव "पूर्व के महाकुंभ" के रूप में भी जाना जाता है।

8.3. मध्व नवमी महोत्सव

(Madhwa Navami Festival)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में कर्नाटक के उडुप्पी जिले में **मध्व नवमी महोत्सव** मनाया गया।
- यह वार्षिक महोत्सव महान भारतीय दार्शनिक **श्री मध्वाचार्य** की बद्रीनाथ **यात्रा** के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, जहाँ वह अपने गुरु वेद व्यास से मिलने के लिए गए लेकिन कभी लौटे नहीं।

श्री मध्वाचार्य

- ये एक भारतीय दार्शनिक एवं **द्वैत (द्वैतवाद) दर्शन** के प्रतिपादक थे।
- इनका जन्म 1238 ई. में कर्नाटक के उडुप्पी जिले में हुआ था। इन्हें **आनन्दतीर्थ** या **पूर्णप्रज्ञ** के रूप में भी जाना जाता है।
- इनके अनुयायी, जिन्हें **मधवाओं** के रूप में जाना जाता है, इन्हें वायुदेव का अवतार मानते हैं।
- इनका मत **सार्वभौमिक मोक्ष** के परंपरागत हिन्दू विश्वास से पर्याप्त भिन्न था, जो यह मानता है कि सभी आत्माओं को अंततः मोक्ष प्राप्त होगा भले ही यह कई लाख पुनर्जन्म लेने के बाद हो।
- इन्होंने आत्माओं को 3 श्रेणियों में विभाजित किया, ये श्रेणियाँ हैं **मुक्ति योग्य** (मुक्ति की अर्हता प्राप्त आत्माएँ), **नित्य संसारिन** (अनन्त पुनर्जन्म के अधीन आत्माएँ) और **तमो योग्य** (ऐसी आत्माएँ जिन्हें अंततः नरक में भुगतना पड़ेगा)।
- इन्होंने अपने अनुयायियों के नियंत्रणाधीन सभी उपासना स्थलों में **देवदासी प्रणाली** को निषिद्ध कर दिया।

द्वैत दर्शन (द्वैतवाद)

- यह प्राचीन भारत के वेदांत दर्शन की एक शाखा है।
- यह घोषित करता है कि ईश्वर और आत्मा पृथक-पृथक सत्ताएँ हैं और आत्माओं को ईश्वर द्वारा नहीं **बनाया** गया है हालाँकि अपने अस्तित्व के लिए वे ईश्वर पर निर्भर हैं।
- यह शंकराचार्य के **अद्वैत दर्शन** के विपरीत है जो **एकात्मवाद (अद्वैतवाद)** में विश्वास करता है।

8.4. साहित्य में 2016 का नोबेल पुरस्कार

(Nobel Prize in Literature 2016)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- 2016 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार "महान अमेरिकी गीत परंपरा के अंतर्गत नए काव्य भाव के निर्माण के लिए" बॉब डीलेन को दिया गया है।
- वे इस पुरस्कार को प्राप्त करने वाले पहले गीतकार है।

बॉब डीलेन के कार्य के बारे में अधिक जानकारी

- 1941 में डुलुथ मिनेसोटा में, रॉबर्ट एलन ज़िम्मरमैन के रूप में जन्मे, डीलेन ने स्वयं हार्मोनिका, गिटार और पियानो बजाना सीखा।
- हारमोनिका और एकॉस्टिक गिटार से लैस डीलेन का सामना सामाजिक अन्याय, युद्ध और नस्लवाद से हुआ, शीघ्र ही वे नागरिक अधिकार आन्दोलन के प्रमुख सदस्य बन गए।

नोबेल शांति पुरस्कार 2016

- नोबेल शांति पुरस्कार 2016, कोलंबियन राष्ट्रपति जुआन मैनुअल सैंटोस को दिया गया है।
- नोबेल अकादमी ने कोलंबिया में 52 वर्ष तक चले गृह युद्ध को समाप्त करने के प्रयासों के लिए कोलंबियन राष्ट्रपति को यह सम्मान दिया।

8.5. राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव

(Rashtriya Sanskriti Mahotsav)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- संस्कृति मंत्रालय द्वारा दिल्ली में राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव-2016 का आयोजन किया गया।
- मंत्रालय के अंतर्गत सात क्षेत्रीय संस्कृति केंद्रों को दिल्ली के साथ ही विभिन्न शहरों में महोत्सव के आयोजन का कार्यभार सौंपा गया है।

यह क्या है?

- भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के सम्पन्न एवं विविध आयामों को प्रदर्शित करने के विचार से संस्कृति मंत्रालय द्वारा वर्ष 2015 में राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव की परिकल्पना की गई।
- महोत्सव में एक ही स्थान पर सभी कलाओं जैसे हस्तशिल्प, व्यंजन, चित्रकला, मूर्तिकला, लोक कलाओं, प्रलेखन और प्रदर्शन कलाओं- लोक, जनजातीय, शास्त्रीय और आधुनिक को प्रदर्शित किया गया।
- यह महोत्सव “एक भारत,श्रेष्ठ भारत” के नारे के साथ विभिन्न शहरों में मनाया जाएगा।
- शिल्प पर आधारित माल निर्माण की प्रक्रिया का प्रदर्शन मास्टर कारीगरों द्वारा किया जाएगा।
- राष्ट्रीय विरासत को हुई अपूरणीय क्षति की तरफ लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए फोटो प्रदर्शनियों का आयोजन हो रहा है। यह प्रदर्शनी "स्वच्छ भारत अभियान" का हिस्सा होगी।

8.6 राष्ट्रीय जनजातीय कार्निवल

[National Tribal Carnival]

- प्रथम राष्ट्रीय जनजातीय कार्निवल अक्टूबर 2016 में आयोजित किया गया।
- इस चार दिवसीय उत्सव का आयोजन आदिवासियों के बीच समावेशी भावना को बढ़ावा देने हेतु जनजातीय मामलों के मंत्रालय द्वारा किया गया।

8.7. जल्लीकट्टू

(Jallikattu)

- यह आयोजन सांड़ों की लड़ाई से जुड़ा है, इसे तमिलनाडु में मट्टू पोंगल के दिन पोंगल उत्सव के एक भाग के रूप में आयोजित किया जाता है।
- प्रतिभागी एक अखाड़े में सांड के कूबड़ को पकड़कर लटक जाते हैं और तब तक लटके रहने का प्रयास करते हैं जब तक कि सांड़ समापन रेखा पार न कर ले।
- यह मदुरै, तिरुचिरापल्ली, थेनी, पुडुकोट्टई और डिंडीगुल जिलों में लोकप्रिय है- इस क्षेत्र को जल्लीकट्टू बेल्ट के रूप में भी जाना जाता है।
- यह एक प्राचीन खेल है। संगम साहित्य (ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी – दूसरी शताब्दी) में इरु थाजूवुथल (Eru Thazhuvuthal) (सांढ़ का आलिंगन) के कई विस्तृत उल्लेख पाए गए हैं।

8.8. ओणम महोत्सव

(Onam Festival)

- यह त्यौहार मलियाली माह चिंगम (अगस्त-सितंबर) के दौरान आता है। यह केरल के कृषि अतीत की याद ताजा करता है और इसे एक शस्योत्सव (फसल की कटाई का उत्सव) माना जाता है। यह केरल का राजकीय त्यौहार भी है।
- महोत्सव को मनाने का कारण - यह त्यौहार भगवान विष्णु के वामन अवतार और पौराणिक राजा बलि की घर वापसी और उनके समृद्ध शासन की स्मृति में मनाया जाता है।
- राज्य भर के मंदिरों में पूजा की जाती है; सबरी माला, गुरुवयूर और थ्रिक्काकरा के पहाड़ी मंदिरों में भी पूजा की जाती है, जिन्हें राजा बलि की राजधानी माना जाता है।
- चावल के साथ केले के पत्ते पर पारंपरिक मिठाई "ओणम सद्य" परोसी जाती है। "पायसम" मिठाई के साथ विभिन्न प्रकार की करी भी होती है।
- वल्लम कली केरल में एक पारंपरिक नाव दौड़ है। यह डोंगी दौड़ का एक रूप है। यह मुख्य रूप से ओणम के दौरान आयोजित की जाती है।

8.9. वान्गाला महोत्सव मेघालय

(Wangala festival Meghalaya)

- यह गारो जनजाति का फसल की कटाई के बाद का त्यौहार है। यह नवंबर में कृषि वर्ष की समाप्ति के दौरान आयोजित किया जाता है।
- इसे सौ ढोलों का महोत्सव भी कहा जाता है।
- समारोह की शुरूआत में एक नगाड़ा, जो एक विशेष प्रकार का ढोल होता हैं, बजाया जाता है।
- पुरुष और महिला ढोल, भैंस के सींग की तुरहियों और बांस की बांसुरी के साथ नृत्य करते हैं।
- पुरुष धोती, आधे आस्तीन का जैकेट और पंख लगी पगड़ी पहनते हैं। महिलायें रेशम से बने रंगीन कपड़े, ब्लाउज और सिर पर पंख लगा एक कपड़ा लपेटती हैं।

8.10. नव वर्ष महोत्सव

(New Year Festivals)

- उगादि को कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में नव वर्ष दिवस के रूप में मनाया जाता है। उगादि नाम "युग आदि" से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'एक नए युग की शुरुआत'। यह हिंदू माह चैत्र के पहले दिन मनाया जाता है, जो वसंत ऋतु की शुरुआत बताता है।
- गुड़ी पड़वा को महाराष्ट्र में नव वर्ष दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह उगादि वाले दिन ही मनाया जाता है, अर्थात माह चैत्र के पहले दिन। इस दिन भगवान ब्रह्मा की पूजा की जाती है और ब्रह्मा की पताका 'गुड़ी' को हर घर में फहराया जाता है। इसे ब्रह्मध्वज भी कहा जाता है और यह रावण पर राम की विजय का प्रतीक है।
- विशु त्यौहार केरल में नव वर्ष दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह मलयालम महीने मेदम (मध्य अप्रैल) के पहले दिन मनाया जाता है।
- नवरोज़ फरवरदीन माह का पहला दिन होता है। फरवरदीन ईरानी सौर कैलेंडर का पहला माह होता है। पारसी कैलेंडर के फसली/बास्तानी संस्करण में, नवरोज़ हमेशा वसंत विषुव (अधिकतर 21 मार्च) का दिन होता है।

8.11. लोसर महोत्सव लद्दाख

(Losar festival ladakh)

- लोसर त्यौहार लद्दाख / तिब्बत में नववर्ष की शुरुआत के रूप में मनाया जाता है और यह इस क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार है।
- यह दिसंबर में आता है और लद्दाखी बौद्धजन घरेलू धार्मिक स्थलों में या गोम्पा में अपने देवताओं के समक्ष धार्मिक चढ़ावा चढ़ाते हैं।
- इस महोत्सव के दौरान पारंपरिक प्रदर्शन, सांस्कृतिक कार्यक्रम और प्राचीन रस्मों का प्रदर्शन किया जाता है।
- तेज़ संगीत और नृत्य के साथ एवं रिश्तेदारों के साथ भोजन करके उत्सव मनाया जाता है।

VISION IAS

8.12. सजिबू चेइराओबा समारोह मणिपुर

(SAJIBU CHEIRAOBA Festival Manipur)

- यह मणिपुरियों का नववर्ष है और मणिपुरी महीने – सजिबू - के पहले दिन मनाया जाता है। सजिबू मार्च या अप्रैल के महीने में आता है।
- समारोह से पहले मणिपुरी लोग अपने घरों की सफाई करते हैं और घरों और अन्य परिसर को सजाते हैं।
- इस दौरान मेइती देवताओं की पूजा की जाती है। उन्हें फूल, फल और व्यंजन चढ़ाये जाते हैं। पूरा परिवार पारंपरिक रूप से साथ में भोजन करता है और उसके बाद वे दोपहर में पास की छोटी पहाड़ियों (Hillocks) पर चढ़ते हैं।
- इस अवसर पर विवाहित महिलायें अपने माता-पिता और भाइयों को उपहार देती हैं।

8.13. मिजो के चप्चार कुट

(Chapchar Kut of the Mizos)

- चप्चार कुट का शाब्दिक अर्थ है – वह त्यौहार जो उस अवधि में मनाया जाता है जब बांस और पेड़ों को काट दिया जाता है और झूम कृषि हेतु उन्हें जलाने के लिए सूखने का इंतज़ार रहता है।
- यह झूम कटाई का अंत बताता है और दर्शाता है कि खेत बुवाई के लिए तैयार है। यह महोत्सव मार्च माह में 3 से 7 दिनों तक मनाया जाता है।
- चप्चार कुट त्यौहार 1450 -1600 ईसवी के बीच शुरू हुआ था।
- महोत्सव में पारंपरिक पोशाक की परेड होती है और समूहों द्वारा चेराव, चाय, छेइलम, सर्लाम्कई आदि नृत्य और संगीत के कार्यक्रम होते हैं।

8.14. नवकलेवर महोत्सव

(Nabakalebar festival)

- इस त्यौहार में जगन्नाथ मन्दिर, पुरी के चार देवताओं की लकड़ी के रूपों की प्रतीकात्मक बनावट तैयार की जाती है।
- नवकलेवर को पुरी के श्री जगन्नाथ मंदिर में एक सामयिक त्यौहार के रूप में मनाया जाता है। नब का मतलब नया होता है और कलेवर का मतलब शरीर होता है।
- यह जगन्नाथ पंथ में जगन्नाथ, बलभद्र, सुभद्रा और सुदर्शन की लकड़ी के रूपों का एक समयावधिक नवीनीकरण है।
- आत्मा या ब्रह्म एक उच्च तकनीकी और गुप्त विधि से पुरानी मूर्तियों से नए मूर्तिरूपी शरीरों में प्रवेश करते है।
- नवकलेवर त्यौहार 12 से 19 वर्ष के अंतराल में मनाया जाता है।
- इस त्यौहार के दौरान वार्षिक रथयात्रा को नवकलेवर रथ यात्रा कहा जाता है।

8.15. रम्मन

(RAMMAN)

- उत्तराखंड का रम्मन त्यौहार 'रामायण' पर आधारित है और इसकी झांकी नरसिंह देव भगवान पर आधारित होती है।
- इस त्यौहार को यूनेस्को द्वारा 2009 में विश्व विरासत घोषित किया गया है।
- झांकी की पृष्ठभूमि में हिमालय और भूमयाल भगवान का मंदिर दर्शाया जाता है और झांकी के मध्य में कलाकार उत्तराखंड का लोक संगीत यंत्र भंकोर बजाते हैं।
- रात में भूमयाल भगवान के मंदिर में मुखौटा पहन कर नृत्य किया जाता है। यह मुखौटे विभिन्न महाकाव्य, ऐतिहासिक और कल्पित पात्रों के होते हैं। मुखौटे दो प्रकार के होते हैं – "ध्यो पत्तर" और "ख्यालारी पत्तर"।

VISION IAS

8.16. अन्य त्योहार जो सुर्ख़ियों में रहे

(Other festivals in news)

- सिक्किम में बुद्ध जयंती को सागा दावा त्यौहार नाम से मनाया जाता है। यहाँ बुद्ध को सागा दावा भी कहा जाता है।
- नुआखाई त्यौहार ओडिशा में मनाया जाता है, इसमें चावल की पहली फसल की भेंट देवता को चढ़ाई जाती है। यह गणेश चतुर्थी के एक दिन बाद मनाया जाता है।
- सम्मक्का सरक्का जठरा या मेदरम जठरा देश में आदिवासियों का सबसे बड़ा धार्मिक समागम है। यह वर्ष में दो बार देवी के सम्मान में तेलंगाना राज्य में मनाया जाता है।

8.17.हॉर्नबिल महोत्सव

(Hornbill Festival)

- हॉर्नबिल महोत्सव को नागालैंड राज्य के पर्यटन विभाग और कला व संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित किया जाता है।
- इस महोत्सव को एक ही स्थान पर स्थित सभी नागा जनजातियों का एक सहयोगपूर्ण अनुष्ठान माना जाता है।
- इस महोत्सव का नाम हॉर्नबिल पक्षी के नाम पर रखा गया है जो कि नागालैंड का एक बेहद लोकप्रिय और पूजनीय पक्षी है।
- इसी दिन नागालैंड का स्थापना दिवस भी होता है।

8.18.ओडिशा-डोला जात्रा

(Odisha-Dola Jatra)

- डोला जात्रा या डोला मेलना या डोला महोत्सव भगवान कृष्ण की मूर्तियों के समामेलन का महोत्सव है।
- माना जाता है कि पूरे वर्ष भर भक्त देवी-देवताओं के दर्शन करने जाते हैं किन्तु फाल्गुन के महीने में देवी-देवता भक्तों से मिलने आते हैं।
- यह त्योहार फाल्गुन के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि से पूर्णिमा तक मनाया जाता है।
- विभिन्न गांवों एवं विभिन्न शाही भागवत घरों से भागवत देवी-देवता, डोला अर्थात् काष्ठनिर्मित विशेष रूप से अभिकल्पित मंदिर में मेलना-पडिया (मैदान) में आते हैं।
- इस समामेलन को सम्पूर्ण ओड़िशा में विभिन्न गांवों, शहरों में मनाया जाता है। ओडिशी और गोतिपुआ नर्तक भी विमान/डोला के सामने प्रदर्शन करते हैं।

8.19. भक्ति आंदोलन

(Bhakti Movement)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- भक्ति आंदोलन का आशय एक मध्यकालीन धार्मिक आंदोलन से है जिसमें परमेश्वर के प्रति एकनिष्ठ भक्ति पर जोर दिया गया।
- इसने 7वीं से 12वीं सदी के बीच दक्षिण भारत में जन्म लिया। तत्पश्चात इसका प्रसार उत्तर की ओर हुआ।
- इसने अलवार: वैष्णव संत और नयनार: शैव संत की कविताओं के माध्यम से लोकप्रियता हासिल की।
- भक्ति आंदोलन ने अलग-अलग नामों के माध्यम से एक ही ईश्वर या ईश्वर की एकरूपता का प्रचार किया।

- इसने भक्ति, गहन प्रेम और समर्पण की अवधारणा को प्रचारित किया।
- इसने अनुष्ठान, समारोह और अंध विश्वास की निंदा की।
- इसने धार्मिक मामलों के बारे में निर्णय लेने में उदारता का प्रचार किया।
- इसने जाति भेद को चुनौती दी।
- कबीर, गुरु नानक, मीराबाई, सूरदास और तुलसी दास, चैतन्य महाप्रभु आदि भक्ति आंदोलन के महान प्रतिनिधि हैं।

VISION IAS

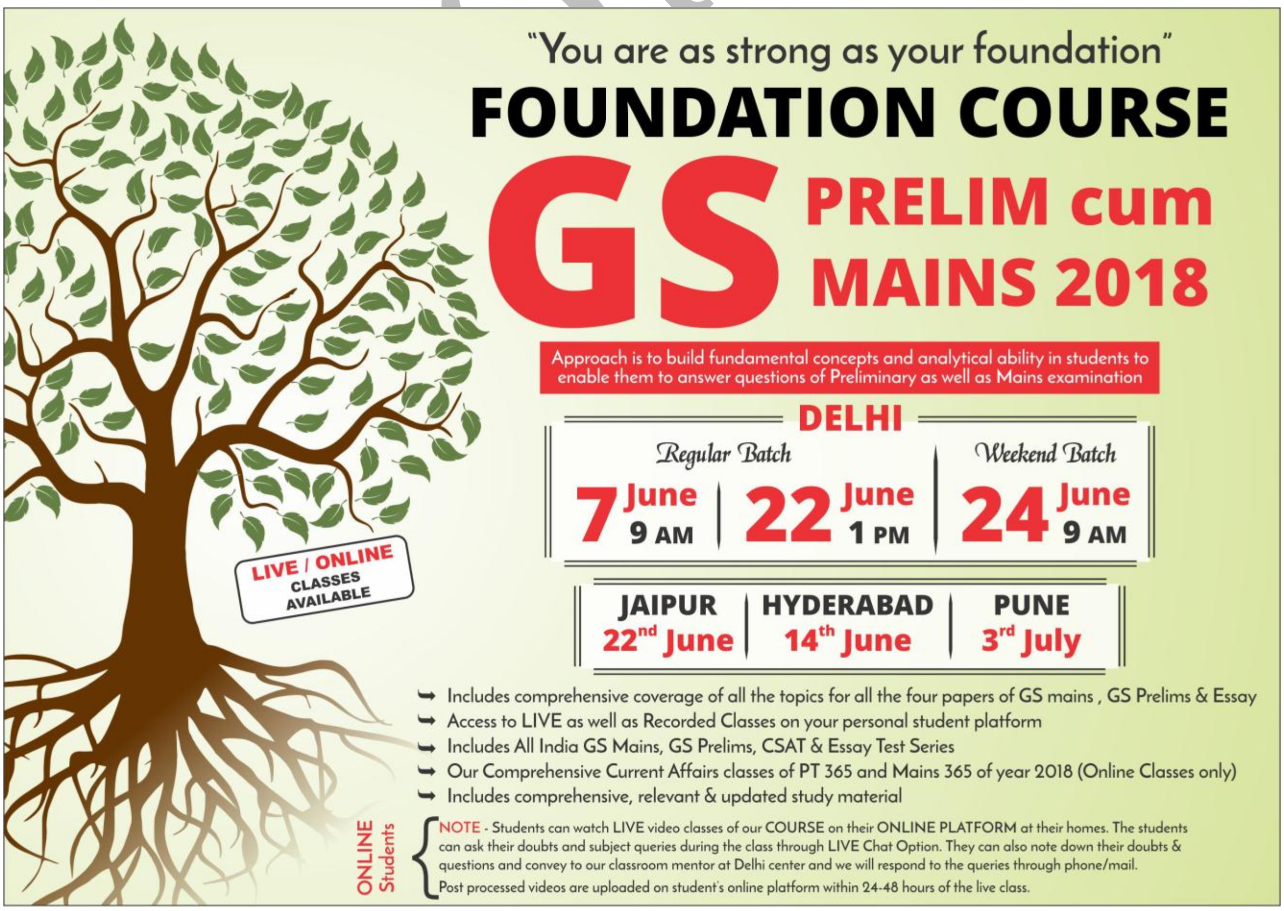

9. सरकारी पहल

(GOVERNMENT INITIATIVES)

9.1. राष्ट्रीय स्मारक तथा पुरावशेष मिशन

(National Mission on Monuments and Antiquities)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- राष्ट्रीय स्मारक तथा पुरावशेष मिशन के कमजोर कार्यान्वयन को हाल ही में हुई मूर्तियों की चोरी के कारणों में से एक माना जा रहा है।

पृष्ठभूमि

- **पुरावशेष तथा बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम, 1972** पुरावशेषों के पंजीकरण को अनिवार्य बनाता है।
- संस्कृति मंत्रालय ने भारत में (सार्वजनिक या निजी) पुरावशेषों का प्रलेखन करने के लिए **राष्ट्रीय स्मारक एवं पुरावशेष मिशन (2007)** (NMMA) प्रारंभ किया है।
- आरंभिक रूप से इसका अनुमोदन वर्ष 2007 से 2012 (ग्यारहवीं योजना) हेतु 5 वर्षों के लिए किया गया था। बारहवीं योजना में भी केंद्रीय योजना के रूप में इसे विस्तारित करने का प्रस्ताव किया गया था।
- वर्ष **2013 में स्मारकों तथा पुरावशेषों के परिरक्षण एवं संरक्षण** पर भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक (CAG) द्वारा किए गए निष्पादन लेखापरीक्षा में भारत की अधिग्रहण, प्रलेखन एवं संरक्षण प्रणालियों की दयनीय स्थिति पाई गयी।

NMMA के बारे में

- यह विरासत संबंधी मामलों, **विरासत स्मारकों एवं स्थलों के संरक्षण पर दिशा-निर्देशों का निर्धारण करता है**। इसके अतिरिक्त **विरासत संबंधी विधानों में उचित संशोधनों के लिए** परामर्श देता है।
- यह योजनाकारों, शोधकर्ताओं, सरकारों इत्यादि को जानकारी का प्रसार करने एवं उनके बेहतर प्रबंधन में सहायता करने के लिए **निर्मित विरासत एवं स्थलों पर उपयुक्त डेटाबेस का प्रलेखन (documentation) एवं निर्माण** करता है।
- यह निर्मित विरासत, स्थलों और पुरावशेषों के सांस्कृतिक पहलुओं पर जागरूकता को भी बढ़ावा देता है तथा लोगों को संवेदनशील बनाता है।
- यह संबंधित राज्य विभागों, स्थानीय निकायों, गैर सरकारी संगठनों, विश्वविद्यालयों, संग्रहालयों, स्थानीय समुदायों इत्यादि को विरासत के प्रबंधन हेतु प्रशिक्षित करता है ।इसके अतिरिक्त यह क्षमता निर्माण का कार्य भी करता है।
- यह स्मारकों एवं पुरावशेषों के संबंध में प्रकाशन एवं शोध में भी संलग्न है।
- यह निर्मित विरासत, स्थलों और पुरावशेषों के राष्ट्रीय थीमैटिक एटलस की रूपरेखा भी निर्मित करेगा।
- प्रलेखीकरण ASI एवं साथ ही आउटसोर्सिंग द्वारा उपलब्ध की गई एजेंसियों द्वारा भी किया जाएगा।

संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत अन्य मिशन

1. **राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन –** यह 2003 में आरम्भ किया गया था। इसका लक्ष्य भारत की पांडुलिपियों से संबंधित विरासत की पहचान, प्रलेखन तथा संरक्षण करना है । कार्यक्रम का उद्देश्य इनकी सहज उपलब्धता सुनिश्चित करना भी है।
2. **राष्ट्रीय पुस्तकालय मिशन –**

- इसका लक्ष्य *नेशनल वर्चुअल लाइब्रेरी ऑफ़ इंडिया* का निर्माण करना है।
- इसका लक्ष्य मॉडल पुस्तकालयों की स्थापना एवं पुस्तकालय पेशेवरों की क्षमता निर्माण करना भी है।
- राजा राम मोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन इसकी नोडल एजेंसी है।

केंद्रीय संरक्षित सूची में स्मारकों को शामिल करने के लिए निर्धारित मानदंड

- AMASR अधिनियम के अनुसार कोई भी मूर्तिकला, निर्माण, स्मारक, गुफा, शिलालेख, एकाश्म पत्थर आदि जो ऐतिहासिक, पुरातात्विक और कलात्मक महत्त्व के हैं तथा कम से कम 100 वर्षों से अस्तित्व में है उन्हें राष्ट्रीय महत्व का माना जाता है।
- ASI से प्रस्ताव प्राप्त किये जाते हैं जिनका मूल्यांकन किया जाता है और तत्पश्चात अनुमोदन के लिए केंद्र सरकार को भेजा जाता है।

राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण (NMA)

- AMASR (प्राचीन स्मारक और पुरातत्व स्थल एवं अवशेष) अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार, संस्कृति मंत्रालय ने स्मारकों और साइटों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए NMA की स्थापना की है।
- यह केंद्र द्वारा संरक्षित स्मारकों के आसपास के क्षेत्र को विनियमित करता है तथा इस क्षेत्र में किसी भी प्रकार की गतिविधियों पर प्रतिबंध लगता है उदाहरणार्थ निषिद्ध और विनियमित क्षेत्र में निर्माण संबंधी गतिविधियों के लिए इसकी अनुमति आवश्यक है।
- यह धरोहरों के निरीक्षण को कानूनी रूप से अनिवार्य बनाता है तथा इस संबंध में सार्वजनिक सुझावो के बाद आवश्यक व्यवस्था स्थापित करता है।
- यह स्मारकों के ग्रेडिंग और वर्गीकरण में भी संलग्न है।

9.2. अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की रक्षा

(Safeguarding the Intangible Cultural Heritage)

- संस्कृति मंत्रालय के द्वारा "अमूर्त विरासत और भारत की विविध सांस्कृतिक परंपराओं की सुरक्षा के लिए " शीर्षक से एक योजना तैयार की गयी है।
- जिसके माध्यम से विभिन्न संस्थाओ को पुनर्जीवित तथा समूहों और व्यक्तियों को उर्जावान बनाया जायेगा ताकि ये भारत की अमूर्त समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को सशक्त बनाने उनकी रक्षा करने और संरक्षण जैसी गतिविधियों / परियोजनाओं में शामिल होने के माध्यम से अपना योगदान दे सके ।
- योजना सामाजिक जीवन में मान्यता प्राप्त सभी अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों यथा भाषा के साथ ही मौखिक परंपरा और अभिव्यक्ति, प्रदर्शन कला, सामाजिक प्रथाओं, अनुष्ठान और उत्सव, प्रकृति और ब्रह्मांड से संबंधित ज्ञान और प्रथाएं तथा पारंपरिक शिल्प को कवर करेगी।

9.3 गांधी हेरिटेज साइट्स मिशन

(Gandhi Heritage Sites Mission)

- इस मिशन को 2013 में 5 साल की निश्चित अवधि के साथ आरम्भ किया गया था।
- इसका लक्ष्य गांधी जी के साथ जुड़ी मूर्त, साहित्यिक और दृश्यमान धरोहरों की रक्षा करना और उन्हें संरक्षित करना है।
- मिशन में संस्कृति मंत्रालय के तहत क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम और मध्य क्षेत्र) के माध्यम से राज्य भी शामिल हैं।

9.4 स्वच्छ भारत-स्वच्छ स्मारक

(Swachh Bharat-Swachh Smarak)

- इस परियोजना के अंतर्गत, सभी ASI संरक्षित ऐतिहासिक स्मारक और पुरातत्व स्थलों से 300 मीटर तक के क्षेत्र को पॉलिथीन फ्री जोन घोषित किया गया है।
- पर्यटन मंत्रालय द्वारा लांच किये गए 'स्वच्छ पर्यटन मोबाइल ऐप' में 75 अतिरिक्त आदर्श स्मारकों को शामिल किया गया है , इससे यह संख्या बढ़कर कुल 100 हो गयी है ।
- विश्व धरोहर स्थल "रानी की वाव (गुजरात)" को स्वच्छता मानदंडों जैसे शौचालय सुविधा, पॉलिथीन उपयोग आदि के आधार पर देश में सर्वाधिक स्वच्छ स्थल घोषित किया गया है।

9.5 केन्द्रीय संस्कृति सलाहकार बोर्ड

(Central Advisory Board on Culture)

- केन्द्रीय संस्कृति सलाहकार बोर्ड (CABC) का हाल ही में पुनर्गठन किया गया है।
- इसका उद्देश्य संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों से विचारों और रुचियों की भागीदारी के लिए एक मंच प्रदान करना है।
- इसके सदस्यों का कार्यकाल 3 वर्ष है
- यह देश भर में नई योजनाओं और मौजूदा मिशनों पर संस्कृति मंत्रालय को सलाह देगा।

VISION IAS

9.6. कलाकार पेंशन योजना और कल्याण कोष

(Artists Pension Scheme and Welfare Fund)

- कला और लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाला कोई भी व्यक्ति जिसकी आयु 60 वर्ष से अधिक तथा मासिक आय 4000 से कम हो वह इस योजना के लिए पात्र है।
- इसमें 1961 की योजना के मौजूदा लाभार्थियों के साथ ही नए कलाकारों और लेखकों को शामिल किया गया है।
- प्राप्तकर्ता की मृत्यु के मामले में, पति / पत्नी आजीवन लाभ के हकदार होंगे और आश्रित 21 वर्ष की आयु तक अथवा विवाह होने या रोजगार प्राप्त होने तक इसके लाभ का पात्र होगा।

9.7.साहित्य अकादमी

(Sahitya Academy)

- यह भारत में साहित्यिक कृतियों से संबंधित राष्ट्रीय अकादमी है जो साहित्य को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है। हालांकि इसे सरकार द्वारा स्थापित किया गया है किन्तु यह एक स्वायत्त संगठन के रूप में कार्य करती है।
- भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रगणित 22 भाषाओं के अलावा अंग्रेजी और राजस्थानी भाषाओं में सृजित साहित्य के संबंध में भी अकादमी के द्वारा संचालित कार्यक्रम लागू किया जा सकता है।
- साहित्य अकादमी ,साहित्य सृजन के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान करती है।

9.8. UNESCO का क्रिएटिव सिटी नेटवर्क

(UNESCO's Creative City Network)

- वर्ष 2004 में आरम्भ किये गए वर्तमान में 116 सदस्य शहरों को मिलाकर बने यूनेस्को के क्रिएटिव सिटी नेटवर्क के संचालन का उद्देश्य सांस्कृतिक विरासतों से संबंधित शहरों के साथ तथा उनके बीच अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना हैं। यह उन शहरों के सन्दर्भ में विशेष प्रासंगिक है जो टिकाऊ शहरी विकास, सामाजिक समावेशन और सांस्कृतिक जीवंतता के लिए उत्प्रेरक के रूप में आवश्यक रचनात्मकता का विकास करने तथा इससे संबंधी निवेश करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।
- वर्ष 2015 में स्वीकार किये गए एजेंडा 2030 में टिकाऊ शहरी विकास के लिए संस्कृति और रचनात्मकता को सतत विकास के दो मुख्य आधारों के रूप में रेखांकित किया गया है।
- यूनेस्को क्रिएटिव शहर नेटवर्क के अंतर्गत शहरों को सात रचनात्मक क्षेत्रों से संबद्ध होने के आधार पर शामिल किया जाता है जिसमें शिल्प और लोक कला, डिजाइन, फिल्म, पाक कलाएं, साहित्य, मीडिया कला और संगीत सम्मिलित हैं।
- जयपुर और वाराणसी हाल ही क्रमशः हस्तशिल्प एवं लोक कला तथा संगीत के शहरों के रूप में क्रिएटिव सिटी नेटवर्क में शामिल किये गए हैं।

9.9. भारतवाणी पोर्टल का शुभारंभ

(Bharatvani Portal Launched)

यह क्या है ?

- एक बहुभाषायी ज्ञान पोर्टल है।
- यह मानव संसाधन विकास मंत्रालय की परियोजना है जिसे लखनऊ से प्रारंभ किया गया है।
- यह केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान (Central Institute of Indian Languages -CIIL) मैसूर द्वारा क्रियान्वित किया जायेगा।

मुख्य विशेषताएँ

- यह बहुभाषा सीखने, सामग्री और प्रौद्योगिकी के लिए एकल बिन्दु स्रोत(single point source) बनने पर केन्द्रित होगा।
- यह एक समावेशी, संवादात्मक और सक्रिय मंच होगा।
- इसे सभी भारतीय लेखकों, भारत सरकार और गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा मल्टीमीडिया सामग्री के योगदान द्वारा दुनिया में सबसे बड़े भाषा पोर्टल के रूप में विकसित करने का प्रस्ताव है।
- इसमें एक मोबाइल एप्लिकेशन आधारित बहुभाषी शब्दकोश भी शामिल होगा।
- पोर्टल 22 अनुसूचित भाषाओं में शुरू किया गया है, और इसे बाद में 100 से अधिक भाषाओं तक विस्तृत किया जाएगा।

VISION IAS

9.10. ज्ञानपीठ पुरस्कार

(Jnanpith Award)

- राष्ट्रपति ने गुजराती साहित्यकार रघुवीर चौधरी को 2015 के ज्ञानपीठ पुरस्कार (51वां ज्ञानपीठ पुरस्कार) से सम्मानित किया।

पृष्ठभूमि

- भारतीय ज्ञानपीठ संगठन साहू जैन परिवार के साहू शांति प्रसाद जैन द्वारा 1944 में स्थापित किया गया था।
- इसकी स्थापना संस्कृत, प्राकृत, पाली और अपभ्रंश ग्रंथों के व्यवस्थित अनुसंधान और प्रकाशन का कार्य करने के लिए की गयी थी।
- इसका उद्देश्य धर्म, दर्शन, तर्क, नैतिकता, व्याकरण, ज्योतिष और काव्यशास्त्र जैसे विषयों को समाविष्ट करना है।
- ज्ञानपीठ पुरस्कार उन साहित्यकारों को मान्यता प्रदान करता है जो भारतीय संविधान की अनुसूची आठ में सूचीबद्ध 22 भारतीय भाषाओं में से किसी भी एक भाषा में अपनी रचनाएं करते हैं।
- नामांकन और पुरस्कार का निर्णय भारतीय ज्ञानपीठ फाउंडेशन द्वारा किया जाता है।

9.11. मैग्सेसे पुरस्कार

(Magsaysay award)

बेजवाड़ा विल्सन

- विल्सन मैला ढ़ोने की प्रथा के खिलाफ कार्यरत एक प्रसिद्ध प्रचारक तथा सफाई कर्मचारी आंदोलन के राष्ट्रीय संयोजक हैं।
- ये कर्नाटक में जन्में एक दलित कार्यकर्ता हैं तथा इन्हें मानव गरिमा के उन्नयन की दिशा में किये गए कार्यों के लिए सम्मानित किया गया है।
- एक रिपोर्ट के अनुसार, इनके प्रयासों की वजह से देश में कुल मैला ढ़ोने वालों की संख्या 15 लाख से कम होकर 2013 में 2 लाख हो गयी है।
- इन्हें "गरिमापूर्ण मानव जीवन के अपृथक्करणीय अधिकार को बढ़ावा देने" के लिए सम्मानित किया गया।

टी एम कृष्णा

- ये चेन्नई के एक कर्नाटक संगीत गायक हैं।
- इन्हें "संस्कृति में सामाजिक समग्रता" लाने के लिए "प्रख्यात नेतृत्व (एमिनेंट लीडरशिप)" श्रेणी के तहत सम्मानित किया गया।

मैग्सेसे पुरस्कार के बारे में

- रेमन मैग्सेसे पुरस्कार एक वार्षिक पुरस्कार है जिसे फिलीपींस के पूर्व राष्ट्रपति रेमन मैग्सेसे द्वारा अपनाए गए शासन में ईमानदारी, लोगों के लिए साहसी सेवा और लोकतांत्रिक समाज के भीतर व्यावहारिक आदर्शवाद जैसे मूल्यों के क्षेत्र में एक आदर्श के रूप में प्रदर्शन करने वालों को दिया जाता है।
- यह पुरस्कार अप्रैल 1957 में रॉकफेलर ब्रदर्स फंड के ट्रस्टी द्वारा फिलीपींस सरकार की सहमति से न्यूयॉर्क शहर में स्थापित किया गया था।

VISION IAS

10. पर्यटन और स्थल

(TOURISM AND PLACES)

10.1. पहला राष्ट्रीय पर्यटन सर्किट

(First National Tourist Circuit)

- पर्यटन मंत्रालय ने बौद्ध सर्किट को भारत के पहले ट्रांस-नेशनल टूरिज्म सर्किट के रूप में घोषित करने का निर्णय लिया है।

पृष्ठभूमि

- बौद्ध सर्किट का विकास स्वदेश दर्शन योजना का हिस्सा है, जिसकी 2014 में घोषणा की गयी थी। इसके तहत एकीकृत विषय (थीम) आधारित पर्यटन सर्किट विकसित किये जाएंगे।
- थीम के अंतर्गत धर्म, संस्कृति तथा विरासतों से संबंधित क्षेत्र विशेष की विशिष्ट एवं अद्वितीय विशेषताएं सम्मिलित हैं|
- इस योजना में उत्तर-पूर्व सर्किट, बौद्ध सर्किट, हिमालय सर्किट, तटीय सर्किट और कृष्ण सर्किट शामिल हैं|
- एक अलग घोषणा में सरकार ने भी देश में पर्यटन के विकास के लिए देश भर में 50 अतिरिक्त सर्किटों की घोषणा की।

बौद्ध सर्किट

- मंत्रालय द्वारा परिकल्पित बौद्ध सर्किट के नक्शे में बिहार से बोधगया, वैशाली, राजगीर, उत्तर प्रदेश से कुशीनगर, सारनाथ और श्रावस्ती और नेपाल से कपिलवस्तु और लुम्बिनी भी शामिल है।

बोध गया

- बिहार के गया जिले में अवस्थित यह बौद्धों के लिए चार सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों में से एक है। यह वह जगह है जहाँ बुद्ध को बोधि वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ।
- महाबोधि मंदिर परिसर को 2002 में यूनेस्को विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया।

वैशाली

- यह बिहार में अवस्थित एक जिला है जिसका नाम महाभारत में उल्लिखित मिथिला के प्राचीन शहर वैशाली नगर के नाम पर रखा गया। यह बौद्धों और जैनियों दोनों के लिए महत्वपूर्ण है।
- यह लिच्छवी राजवंश की राजधानी थी वज्जि महाजनपद के अंतर्गत गणतंत्र के सबसे पहले उदाहरणों में से एक माना जाता है।
- बुद्ध ने 483 ईसा पूर्व में अपनी मृत्यु से पहले अपना अंतिम उपदेश यहीं पर दिया था। 383 ईसा पूर्व में दूसरी बौद्ध परिषद यहीं आयोजित की गयी थी।
- यहाँ अवस्थित अशोक स्तम्भ सर्वाधिक संरक्षित अवस्था में है जिसके शीर्ष पर एशियाई शेर है।

राजगीर

- बिहार के नालंदा जिले में अवस्थित है, यह मगध साम्राज्य की पहली राजधानी थी। यह भी बौद्धों और जैनियों दोनों के लिए महत्वपूर्ण है।
- बुद्ध ने यहाँ अपने बारह वर्ष के निवास काल में कई उपदेश दिए और द्वितीय धम्म चक्र का प्रवर्तन भी यहीं से किया।
- प्रथम बौद्ध परिषद का आयोजन भी यहीं हुआ था।

कुशीनगर

- कुशीनगर उत्तर प्रदेश में अवस्थित है। यह माना जाता है कि यहीं पर बुद्ध को महापरिनिर्वाण की प्राप्ति हुई। यह एक अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध तीर्थस्थल है।

सारनाथ

- सारनाथ शहर उत्तर प्रदेश में गंगा और गोमती नदियों के संगम पर स्थित है।
- यह सारनाथ ही था जहाँ बुद्ध ने आत्मज्ञान प्राप्त करने के बाद पहली बार धम्म का उपदेश दिया था।

श्रावस्ती

- श्रावस्ती उत्तर प्रदेश में पश्चिमी राप्ती नदी पर स्थित है। श्रावस्ती का प्राचीन शहर कोशल महाजनपद की राजधानी थी।
- यह माना जाता है कि बुद्ध ने चौदह चातुर्मास (चार महीने की पवित्र अवधि) यहीं पर गुजारे थे।
- शहर में कई पुराने स्तूप, विहार और मंदिर बुद्ध के साथ अपने संबंध स्थापित करते हैं।

VISION IAS

कपिलवस्तु

- कपिलवस्तु दक्षिणी नेपाल में स्थित है। प्राचीन समय में कपिलवस्तु शाक्य राज्य की राजधानी थी जहां सिद्धार्थ 29 वर्ष की उम्र में महल छोड़ने से पहले अपने माता-पिता के साथ रहे थे।

लुम्बिनी

- लुम्बिनी नेपाल के रुपन्देही जिले में स्थित एक बौद्ध तीर्थ स्थल है।बौद्ध यह मानते हैं कि यहाँ रानी माया ने 563 ईसा पूर्व में गौतम सिद्धार्थ को जन्म दिया था।
- यह 1997 में यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया।

10.2. एशिया में सर्वश्रेष्ठ 25 संग्रहालयों में शामिल भारतीय संग्रहालय

(Indian Museums in Best 25 in Asia)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- ट्रिप एडवाइजर द्वारा किये गए एक सर्वेक्षण के अनुसार एशिया के 25 सर्वश्रेष्ठ संग्रहालयों में 5 भारतीय संग्रहालयों को शामिल किया गया है।
- इसी सर्वेक्षण में लेह के "हॉल ऑफ़ फेम" संग्रहालय को शीर्ष *मस्ट-विज़िट प्लेसेस* (must-visit places) की सूची में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है।

लेह का हॉल ऑफ़ फेम

- लेह एयरफील्ड के निकट हॉल ऑफ़ फेम का निर्माण भारत पाक युद्ध में शहीद हुए सैनिकों की स्मृति में किया गया था।
- इसका निर्माण भारतीय सेना द्वारा किया गया था और देखरेख भी भारतीय सेना द्वारा ही की जाती है।
- संग्रहालय में न केवल सैनिकों के सन्दर्भ में बल्कि युद्ध में प्रयुक्त विभिन्न हथियारों के बारे में भी जानकारी दी गयी है।

बागोर की हवेली

- बागोर की हवेली राजस्थान के उदयपुर में स्थित एक प्राचीन भवन (हवेली) है जिसे संग्रहालय में बदल दिया गया है।
- इसका निर्माण 18वीं सदी में मेवाड़ के प्रधान मंत्री अमीर चंद बडवा द्वारा किया गया था।
- संग्रहालय में मेवाड़ की संस्कृति का प्रदर्शन किया गया है। इसके आंतरिक भाग को शीशा और दर्पण का उपयोग कर सजाया गया है।
- यहाँ परंपरागत और आधुनिक कला का भी प्रदर्शन किया गया है।
- संग्रहालय में मेवाड़ में बनाये गए भित्तिचित्र भी दर्शाये गए हैं।
- राजपूतों के अद्वितीय प्रतीक जैसे गहने-जेवरात के डब्बे, डाइस गेम, हुक्का, पान के बक्से, हाथ पंखा, सुपारी तोड़ने वाला यंत्र (नट क्रेक्केर्स), गुलाब छिडकाव यंत्र भी यहाँ प्रदर्शित किये गए हैं।

सालार जंग संग्रहालय

- सालार जंग संग्रहालय भारत के तीन राष्ट्रीय संग्रहालयों में से एक है जो हैदराबाद में मूसी नदी के दक्षिणी तट पर दरुशिफा में स्थित है।
- संग्रहालय के संग्रह के स्रोत सालार जंग परिवार की संपत्ति है।
- संग्रहालय में जापान, चीन, बर्मा, भारत, नेपाल, फारस, मिस्र, यूरोप और उत्तरी अमेरिका से लायी गयी मूर्ति, पेंटिंग्स, नक्काशी, वस्त्र, पाण्डुलिपि, मिट्टी के बर्तन, धातु कलाकृति, कालीन, घड़ी और फर्नीचर का संग्रह है।
- कुछ महत्वपूर्ण भारतीय ऐतिहासिक संग्रह: राजा रवि वर्मा की चित्रकारी, औरंगजेब की तलवार और टीपू सुल्तान की आलमारी है।

विक्टोरिया मेमोरियल हॉल

- विक्टोरिया मेमोरियल हॉल महारानी विक्टोरिया की याद में 1906 और 1921 के बीच निर्मित एक विशाल संगमरमर का भवन है। वर्तमान में यह एक संग्रहालय है।
- इस भवन की डिज़ाइन रॉयल इंस्टिट्यूट ऑफ़ ब्रिटिश आर्किटेक्ट्स के अध्यक्ष विलियम एमर्सन द्वारा तैयार की गई थी।
- इस वास्तुकला की ताजमहल के साथ एक विलक्षण सादृश्यता है, हालांकि दोनों पूरी तरह एकसमान नहीं हैं।
- संग्रहालय में 25 गैलरियाँ हैं जिसमें रॉयल गैलरी, नेशनल लीडर्स गैलरी, पोर्ट्रेट गैलरी, सेंट्रल हॉल, मूर्तिकला गैलरी और द न्यूअर कलकत्ता गैलरी शामिल हैं।
- संग्रहालय में थॉमस डेनियल और उनके भतीजे विलियम डेनियल के कार्य का सबसे बड़ा एकल संग्रह है।
- इसके अलावा यहाँ दुर्लभ और पुरातात्विक पुस्तकों का संग्रह भी है।

जैसलमेर युद्ध संग्रहालय

- इस संग्रहालय का निर्माण और देखरेख भारतीय सेना द्वारा किया जाता है।

VISION IAS

- इस संग्रहालय का निर्माण 1965 के भारत-पाक युद्ध के युद्ध नायकों और लौंगेवाला की लड़ाई (1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान) में बलिदान होने वाले सैनिकों को श्रद्धांजलि देने के लिए किया गया है।
- संग्रहालय भारतीय सेना के गौरवशाली इतिहास को भी दर्शाता है।
- यह युद्ध प्रदर्शनीय वस्तुओं को भी प्रदर्शित करता है जिसमें 1965 और 1971 के युद्ध के दौरान कब्जा किये गए वाहन और उपकरण शामिल हैं।

10.3. बेट द्वारका दर्शन सर्किट

(Bet Dwarka Darshan Circuit)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- **शहरी विकास मंत्रालय** ने केंद्रीय योजना - राष्ट्रीय धरोहर शहर विकास और संवर्धन योजना (हृदय:HRIDAY) के अंतर्गत गुजरात में **6 किमी** लंबे **बेट द्वारका दर्शन सर्किट** के विकास का अनुमोदन कर दिया है।

बेट द्वारका दर्शन सर्किट

- यह सर्किट प्रसिद्ध **द्वारिकाधीश हवेली एवं हनुमान दांडी** को आपस में जोड़ेगा।
- इस प्रसार के साथ दो महत्वपूर्ण जल निकाय हैं: **रणछोड़ तालाब और शंकुधर झील**।
- इस परियोजना के अंतर्गत सम्पन्न किए जाने वाले विकास कार्यों में सम्मिलित हैं: सड़कों का विकास, वृक्षारोपण, बेंचों, विश्रामस्थलों इत्यादि की व्यवस्था करना।

राष्ट्रीय धरोहर शहर विकास और संवर्धन योजना (HRIDAY)

- यह विरासत शहरों के समग्र विकास पर ध्यान केन्द्रित करते हुए **शहरी विकास मंत्रालय द्वारा वर्ष 2015 में** लांच की गई केंद्रीय योजना है।
- इस योजना को **अजमेर, अमरावती, अमृतसर, बादामी, द्वारका, गया, कांचीपुरम, मथुरा, पुरी, वाराणसी, वेलंकन्नी और वारंगल आदि** 12 निर्धारित शहरों में कार्यान्वित किया गया है।
- इस योजना के तहत पहलों में जल आपूर्ति, स्वच्छता, जल निकासी, अपशिष्ट प्रबंधन, सड़कें, फुटपाथ, स्ट्रीट लाइट आदि का विकास शामिल है।

11. व्यक्तित्व और व्यक्ति

[PERSONALITIES AND PEOPLE]

11.1. कनक मूर्ति

(Kanaka Murthy)

- कनक मूर्ति एक कन्नड़ मूर्तिकार हैं जिन्हें कर्नाटक का सर्वोच्च मूर्तिकला पुरस्कार प्राप्त हुआ है।
- कनक मूर्ति देश की एकमात्र ऐसी महिला मूर्तिकार हैं जिनकी बनाई प्रतिमाओं की मंदिरों में पूजा की जाती है।
- उनकी मूर्तियों में चोल, होयसल और चालुक्य शैलियों की यथावत प्रतिकृतियाँ शामिल हैं।
- उनकी बनाई मूर्तियाँ कई विशिष्ट स्थानों पर लगाई गई हैं। उदाहरणार्थ विश्वेश्वरैया औद्योगिक संग्रहालय में राइट बंधुओं की प्रतिकृति।

11.2. चैतन्य महाप्रभु

[Chaitanya's Mahaprabhu]

संस्कृति मंत्रालय ने श्री चैतन्य महाप्रभु के वृंदावन में आने की 500 वीं वर्षगांठ पर क्रमशः 500 और 10 रुपये के संस्मरण सिक्के और प्रचलित सिक्के जारी किए हैं।

श्री चैतन्य महाप्रभु

- चैतन्य महाप्रभु एक प्रसिद्ध हिन्दू संत एवं समाज सुधारक थे। वे भक्ति योग के वैष्णव सम्प्रदाय के एक प्रतिष्ठित संरक्षक थे।
- उन्हें मध्ययुगीन भारत की जाति व्यवस्था और सामंती प्रथा की बुराइयों को खत्म करने का श्रेय दिया जाता है।
- उन्होंने भगवान कृष्ण की भक्ति का प्रचार किया तथा "हरे कृष्ण मंत्र" के जप को लोकप्रिय बनाया।
- वे भगवान कृष्ण की सर्वोत्कृष्ट लीलाओं से संबंधित खोये हुए पवित्र स्थानों का पता लगाने के उद्देश्य से वृंदावन आए।

11.3. राष्ट्रीय युवा दिवस

[National Youth Day]

सुर्खियों में क्यों?

- यह प्रत्येक वर्ष स्वामी विवेकानंद के जन्मदिन के उपलक्ष्य में 12 जनवरी को मनाया जाता है।
- स्वामी विवेकानंद के जन्मदिन को भारत सरकार ने सर्वप्रथम वर्ष 1984 में राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में घोषित किया।
- इस वर्ष के आयोजन की थीम "डिजिटल इंडिया के लिए युवा (Youth for Digital India)" थी।

स्वामी विवेकानंद के बारे में

- कलकत्ता में जन्मे स्वामी विवेकानंद रामकृष्ण परमहंस के प्रमुख शिष्य थे। इनके बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था।
- औपनिवेशिक भारत में राष्ट्रवाद की अवधारणा के लिए उनका योगदान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण था। उन्होंने अपने लेखन और भाषणों के माध्यम से देश के युवाओं को राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ने हेतु प्रेरित किया।
- राष्ट्रवाद की उनकी अवधारणा मानवतावाद और सार्वभौमिकता पर आधारित है। उन्हें विभिन्न धर्मों के मध्य मेलजोल तथा जागरूकता बढ़ाने तथा लोगों को आत्म-दूषित बंधनों और उससे उत्पन्न दुःखों से छुटकारा पाने की शिक्षा देने का श्रेय दिया जाता है।
- उन्होंने हिंदू जाति व्यवस्था की निंदा की और आध्यात्मिक विचारों के आधार पर एकता का प्रचार किया।
- उन्होंने पश्चिमी दुनिया में वेदांत और योग के भारतीय दर्शन का प्रचार किया।
- 1893 में शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद में अपने संबोधन के माध्यम से हिंदुत्व को विश्व पटल पर रखा।
- 1897 में, उन्होंने एक मानवीय संगठन के रूप में रामकृष्ण मिशन (मुख्यालय पश्चिम बंगाल के हावड़ा में बेलूर मठ में) की स्थापना की।
- उन्होंने दो पत्र प्रकाशित किए: अंग्रेजी में प्रबुद्ध भारत और बंगाली में उद्बोधन।

11.4. एम एस सुब्बुलक्ष्मी

(M S Subbalaxmi)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी के जन्मदिवस की 100 वीं वर्षगांठ पर एक आयोजन कर सुस्वरलक्ष्मी एकेडमी ऑफ क्लासिकल म्यूजिक एण्ड परफोर्मिंग ऑर्ट्स, बंगलोर ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

VISION IAS

एम एस सुब्बुलक्ष्मी के बारे में जानकारी

- 16 सितंबर 1916 को मदुरै शेनमुखावादिवु सुब्बुलक्ष्मी का जन्म हुआ। उन्हें कर्नाटक संगीत की महान गायिका के रूप में जाना जाता है। उनका निधन 11 दिसंबर 2004 को हुआ।
- वह भारत रत्न प्राप्त करने वाली प्रथम संगीतकार थीं, साथ ही रमन मैगसेसे पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली भारतीय संगीतकार भी थीं।
- उन्हें अपने कैरियर के दौरान कई पुरस्कार जैसे पद्म भूषण, पद्म विभूषण, भारत रत्न इत्यादि प्राप्त हुए।
- संयुक्त राष्ट्र ने भी उनके सम्मान में उनकी 100 वीं जयंती पर एक डाक टिकट जारी किया।

कर्नाटक संगीत क्या है?

- कर्नाटक संगीत को कर्नाटका संगीता या कर्नाटका संगीतम् के रूप में जाना जाता है। यह भारतीय शास्त्रीय संगीत की दो उप शैलियों में से एक है, जो हिन्दू परंपराओं से विकसित हुई है। दूसरी शैली हिन्दुस्तानी संगीत है।
- यह संगीत शैली मुख्यतः दक्षिण भारतीय राज्यों में प्रचलित है।
- कर्नाटक संगीत में गायन पर बहुत बल दिया जाता है। अधिकांश सुर जो वाद्ययंत्र पर भी बजाये जा सकते हैं उन्हें भी गाया जाता है।
- हिन्दुस्तानी संगीत की तरह कर्नाटक संगीत भी दो मुख्य तत्वों राग और ताल पर निर्भर है।
- कर्नाटक गायन कला प्रदर्शन में वायलिन, मृदंग, तम्बूरा, घटम्, कंजीरा, मोर्सिंग, वेणुबाँसुरी, वीणा, और चित्रवीणा इत्यादि वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

11.5. श्री रामानुज की 1000वीं जन्म शताब्दी

(1000th Birth Anniversary of Sri Ramanuja)

- मई में भारत में श्री रामानुज सहस्राब्दी मनाई गई। यह इनकी 1000वीं जयंती थी।

श्री रामानुज के बारे में

- 11वीं शताब्दी में तमिलनाडु में जन्मे श्री रामानुज मध्यकालीन भारत की भक्ति धारा के संत थे।
- वह अलवार से बहुत प्रभावित थे |
- उनके अनुसार विष्णु की गहन भक्ति मोक्ष प्राप्त करने का सबसे अच्छा मार्ग है।
- उन्होंने विशिष्टाद्वैत अर्थात विशिष्ट अद्वैतवाद का सिद्धांत प्रतिपादित किया। इस दर्शन के अनुसार आत्मा जब परमात्मा से मिलती है तब भी अपना अस्तित्व बनाये रखती है।
- रामानुज के सिद्दान्त ने भक्ति आन्दोलन को प्रेरित किया। यह इसके बाद उत्तर भारत तक फैल गया।

- विशिष्टाद्वैत का अर्थ है संशोधित अद्वैतवाद। इस दर्शन के अनुसार अंतिम वास्तविकता ब्रह्म (परमेश्वर) है और पदार्थ एवं आत्मा उनके गुण हैं।

11.6. महाश्वेता देवी

(Mahasweta Devi)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- महाश्वेता देवी का 28 जुलाई, 2016 को 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

परिचय

- महाश्वेता देवी का जन्म 1926 में ब्रिटिश भारत के ढाका में हुआ। वे स्वतंत्र भारत के प्रमुख लेखकों में से एक थीं।
- उन्हें **खेरिया सबर** नामक अत्यंत पिछड़े आदिवासी समुदाय के उत्थान के लिए किये गए सामाजिक कार्यों के लिए भी जाना जाता है।
- उन्हें **अरण्यर अधिकार** नामक उपन्यास के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार (बंगाली में), ज्ञानपीठ पुरस्कार जैसे विभिन्न साहित्यिक सम्मानों, रमन मैगसेसे पुरस्कार तथा भारतीय नागरिक पुरस्कार के रूप में पद्मश्री और पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था।
- उनकी प्रसिद्ध साहित्यिक कृतियों में से कुछ हैं: **हजार चुराशीर मा (हज़ार चौरासी की माँ), रुदाली और अरण्येर अधिकार**। हालांकि उन्होंने बंगाली में लिखा है, पर उनके कार्यों का अंग्रेजी में भी अनुवाद किया गया है।

11.7. तिरोत सिंग

(Tirot Sing)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- महान स्वतंत्रता सेनानी तिरोत सिंग के बलिदान की याद में मेघालय में समारोह आयोजित किया गया, जिन्हें 19वीं सदी में ब्रिटिश शासकों ने फांसी पर लटका दिया था।

तिरोत सिंग कौन थे?

- यू तिरोत सिंग 18वीं सदी के आरंभ में खासी लोगों के नेताओं में से एक थे।
- उन्होंने खासी पहाड़ियों पर कब्जा करने के ब्रिटिश प्रयास के विरूद्ध संघर्ष किया था।
- उनकी मृत्यु 17 जुलाई 1835 को हुई थी। उनके बलिदान की याद में मेघालय में यू तिरोत सिंग दिवस मनाया जाता है।

11.8. पंडित दीन दयाल उपाध्याय की जन्म शताब्दी

(Birth Centenary of Pandit Deen Dayal Upadhyay)

- पंडित दीन दयाल उपाध्याय एक भारतीय दार्शनिक, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, इतिहासकार, पत्रकार और राजनीति विज्ञानी थे।
- उनके नेतृत्व में जनसंघ ने पहली बार 1967 में आधे दर्जनों राज्यों में सत्ता प्राप्त की।
- दीनदयाल उपाध्याय "एकात्म मानववाद" के सिद्धांत में विश्वास रखते थे। यह विभिन्न संस्थाओं और जीवन के पहलुओं के बीच मतभेदों को स्वीकार करता है, लेकिन एक ही समय में उनमें अन्तर्निहित एकता/समानता की खोज करने की भी मांग करता है। यह भौतिक और आध्यात्मिक, व्यक्तिगत और सामूहिक का संश्लेषण है।
- उन्होंने योजना के विकेंद्रीकरण, सामाजिक और सांस्कृतिक विचारों में विविधता और ग्राम आधारित उद्योगों के विचार को प्रोत्साहित किया। उन्होंने कई पुस्तकें भी लिखीं, जिनमें सम्राट चन्द्रगुप्त, जगतगुरु शंकराचार्य और भारत में पंचवर्षीय योजनाओं पर एक विश्लेषण शामिल है।
- उन्हें अपने 'एकात्म मानववाद दर्शन' के लिए सर्वाधिक जाना जाता है।
- उन्होंने 'स्वदेश' नामक एक दैनिक,'पाञ्चजन्य' नामक एक साप्ताहिक तथा 'राष्ट्र धर्म' नाम से एक मासिक पत्रिका आरम्भ की थी।
- वह अन्त्योदय अर्थात समाज के अंतिम व्यक्ति की सेवा में विश्वास करते थे।

11.9. सरदार वल्लभ भाई पटेल के योगदान

(Contributions of Sardar Vallabhbhai Patel)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- केन्द्र सरकार द्वारा एक डिजिटल प्रदर्शनी "एकीकृत भारत: सरदार पटेल" को आरम्भ किया गया है।

महत्वपूर्ण योगदान

- वह कांग्रेस के एक प्रमुख सदस्य थे। उन्होंने महात्मा गांधी एवं जवाहर लाल नेहरू के साथ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- उन्होंने गुजरात के किसान आंदोलन की सफलता में एक अग्रणी भूमिका निभाई। वे खेड़ा (1918) और बारदौली (1928) सत्याग्रह में प्रमुख सत्याग्रही थे।
- वे 1931 में कांग्रेस के महत्वपूर्ण कराची सत्र के अध्यक्ष थे।
- उन्होंने स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय सिविल सेवा के विकास में अहम भूमिका निभाई। वे स्वभाव से एक प्रशासक थे। उन्होंने सिविल सेवकों में विश्वास जताया, जबकि अन्य लोग संशय में थे।
- उन्होंने भारत की 560 से अधिक रियासतों को एकीकृत करने में सहयोग किया।

11.10. पंचतीर्थ : डॉ. बी. आर. अम्बेडकर

(Panchteerth: B. R. Ambedkar)

- भारत सरकार डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के सम्मान में पांच स्थानों को "पंचतीर्थ" के रूप में विकसित करेगी।

VISION IAS

- पंचतीर्थ में शामिल किए जाएंगे- महू में स्थित अम्बेडकर का जन्मस्थान, लंदन में वह जगह जहां वह पढ़ाई के दौरान रुके थे, नागपुर स्थित 'दीक्षाभूमि', जहां उन्होंने शिक्षा ली थी, दिल्ली स्थित 'महापरिनिर्वाणस्थल', और मुंबई स्थित 'चैत्य भूमि'।

बी आर अम्बेडकर के बारे में

- डॉ. अम्बेडकर एक विधिवेत्ता, सामाजिक सुधारक और राजनीतिज्ञ थे। उन्हें 'भारतीय संविधान के जनक' के रूप में भी जाना जाता है।
- डॉ. अम्बेडकर को जवाहरलाल नेहरू के मंत्रिमंडल में भारत के प्रथम विधि मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया था। मरणोपरांत 1990 में उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। भारत रत्न भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है।
- अम्बेडकर ने इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी की स्थापना की।
- उनकी कुछ प्रसिद्ध पुस्तकों में शामिल हैं - 'द अन्टचेबल: हू आर दे एंड व्हाई दे हेव बिकम अन्टचेबल्स'; 'बुद्ध एंड हिज धम्मा'; 'द राइज एंड फॉल ऑफ़ हिन्दू वीमेन'; 'इमैन्सपैशन ऑफ़ अन्टचेबल्स'; 'द ईवोलूशन ऑफ़ प्रोविंशियल फाइनेंस इन ब्रिटिश इंडिया'; 'पाकिस्तान ऑर पार्टीशन ऑफ़ इंडिया'; ' थॉट्स ऑन लिंग्विस्टिक स्टेट्स' आदि।

11.11. तिरुवल्लुवर

(Thiruvalluvar)

- उत्तराखंड के मुख्यमंत्री ने हाल ही में हरिद्वार में तमिल कवि एवं दार्शनिक, तिरुवल्लुवर की प्रतिमा का अनावरण किया।

तिरुवल्लुवर के बारे में

- वल्लुवर जिन्हें तिरुवल्लुवर भी कहा जाता है, एक तमिल कवि-संत थे।
- उन्हें तमिल साहित्य में अपनी सुप्रसिद्ध नीति पर आधारित कृति थिरुकुरल अथवा कुरल (पवित्र दोहा) के लिए जाना जाता है।
- जैन एवं शैव दोनों सम्प्रदायों द्वारा इन्हें स्वयं से सम्बन्धित बताया जाता है।

11.12. राजाजी-सी. राजगोपालाचारी

(Rajaji-C. Rajagopalachari)

- वह एक वकील, स्वतंत्रता सेनानी, राजनीतिज्ञ और लेखक थे।
- राजाजी भारत के **अंतिम गवर्नर-जनरल थे।**
- उन्हें वर्ष **1954 में भारत रत्न** से सम्मानित किया गया था।
- राजाजी ने **1930 में तत्कालीन मद्रास प्रेसीडेंसी में नागापट्टीनम के निकट वेदारण्यम में** दांडी मार्च की तरह ही एक मार्च के आयोजन का नेतृत्त्व किया था।
- राजाजी महात्मा गांधी के समाचार पत्र, **यंग इंडिया** के संपादक भी थे।
- मद्रास प्रेसीडेंसी के प्रमुख के रूप में, 1952 में उन्होंने युद्ध के समय खाद्य नियंत्रण को समाप्त किया और 1963 में उन्होंने सोने पर नियंत्रण का विरोध इस आधार पर किया था कि इससे हजारों कारीगर बर्बाद हो जाएंगे।
- उन्होनें 1959 में **स्वतंत्र पार्टी** की स्थापना की। यह 1972 में राजाजी की मृत्यु तक देश में कांग्रेस के विरुद्ध प्रमुख विपक्षीय पार्टियों में से एक बनी रही।

11.13. गया प्रसाद कटियार

(Gaya Prasad Katiyar)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- संचार मंत्रालय के तहत डाक विभाग ने जगदीशपुर (उत्तरप्रदेश) में जन्मे स्वतंत्रता सेनानी गया प्रसाद कटियार के नाम पर एक विशेष डाक टिकट जारी किया है।

गया प्रसाद कटियार कौन थे?

- **गया प्रसाद कटियार** 1925 में हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन में शामिल हुए और चंद्रशेखर आज़ाद एवं भगत सिंह के साथ जुड़े।
- उन्होंने लाहौर षड्यंत्र में हिस्सा लिया था और वर्ष 1929 में उन्हें सहारनपुर से गिरफ्तार कर लिया गया था। उन्होंने अपने सह-कैदियों के साथ मिलकर लाहौर में भूख हड़ताल भी की।
- वे 1937 में वापस स्वदेश लौटे लेकिन उन्हें दोबारा गिरफ्तार कर अंडमान की सेल्युलर जेल भेज दिया गया जहां से उन्हें 1946 में रिहा किया गया।

VISION IAS

11.14. भारतविद पुरस्कार: प्रोफेसर यू लांग यू

(Indologist award: Prof. Yu Long Y)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रोफेसर **यू लांग यू को** द्वितीय भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् (ICCR) "उत्कृष्ट भारतविद" पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

भारतविद पुरस्कार के संबंध में

- यह भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् द्वारा स्थापित एक वार्षिक 'उत्कृष्ट भारतविद' पुरस्कार है।
- यह पुरस्कार विदेश में कार्यरत उस प्रख्यात भारतविद को दिया जाता है जिसने भारत के इतिहास, दर्शन, विचार, कला, संस्कृति, साहित्य, भाषा, सभ्यता, समाज आदि के अध्ययन/शोध/शिक्षण में अपना उत्कृष्ट योगदान दिया है।
- प्रथम पुरस्कार पिछले वर्ष जर्मनी के प्रोफेसर हेनरिच फ्रीहर वोन स्टीटेनक्रोन को दिया गया था।

ICCR के बारे में

- सरकार की यह स्वायत्त संस्था अन्य देशों और वहां के नागरिकों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान द्वारा बाह्य सांस्कृतिक संबंधों में संलग्न है।
- इसकी स्थापना स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने 9 अप्रैल 1950 में की थी।

11.15. ओग्येन त्रिनले दोरजी

(Urgyen Trinley Dorje)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- भारत सरकार ने 17वें ग्यालवांग करमापा ओग्येन त्रिनले दोरजी को अरुणाचल प्रदेश में सार्वजनिक सभा को संबोधित करने की अनुमति प्रदान की।
- केंद्र सरकार ने पिछले पांच वर्षों से उनकी यात्रा पर प्रतिबन्ध लगा रखा था।

कर्मा काग्यु संप्रदाय क्या है ?

- ग्यालवांग करमापा, तिब्बती बौद्ध धर्म के मुख्य चार सम्प्रदायों में से एक कर्मा काग्यू संप्रदाय के प्रमुख हैं।
- ये काग्यू संप्रदाय के अंतर्गत दूसरी सबसे बड़ी और निश्चित रूप से सबसे अनुभवी वंशावली है।
- यह संप्रदाय महायान बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा के अंतर्गत आता है।
- कर्मा काग्यू का केंद्रीय **शिक्षण महामुद्रा का सिद्धांत है जिसे 'ग्रेट सील' (great seal)** के रूप में जाना जाता है।
- यह सिद्धांत ध्यान क्रिया के 4 प्रधान चरणों पर केंद्रित है जो इस प्रकार हैं:
- मन की एकाग्रता का विकास।
- सभी प्रकार के वैचारिक विस्तार का अतिक्रमण।
- इस दृष्टिकोण का संवर्धन करना कि सभी घटनाएं 'सिंगल टेस्ट' या एक ही प्रकार की हैं।
- उस मार्ग का सुखानुभव करना जो ध्यान के किसी भी काल्पनिक कृत्यों से परे है।

तिब्बत में बौद्ध धर्म के प्रमुख चार स्कूल:

- **न्यिंगमापा :** यह तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्राचीनतम संप्रदाय (स्कूल) है। इसे पद्मसंभव और संतरक्षिता ने स्थापित किया था।
- **काग्युपा:** यह अनुभव पर आधारित ध्यान समेत एक मौखिक पारंपरिक प्रतिष्ठान है।
- **सक्यपा:** इसका अर्थ है 'ग्रे अर्थ(Grey Earth)'। यह पुराने समय की परंपराओं का अनुसरण करता है।
- **गेलुग्पा:** इसका अर्थ है 'पुण्य का मार्ग'। यह वास्तव में एक सुधारवादी आंदोलन था और इसे तर्क और बहस पर जोर देने के लिए जाना जाता है।

11.16. सावित्रीबाई फुले

(Savitribai Phule)

- इनका जन्म नायगाँव, महाराष्ट्र में 3 जनवरी, 1831 को समृद्ध और प्रभावशाली किसान परिवार में हुआ था।
- यद्यपि इनका विवाह केवल 9 वर्ष की आयु में ही ज्योतिराव फूले के साथ हो गया था लेकिन ये अध्ययन करने के लिए प्रतिबद्ध थीं और अपने युग की कुछ ही शिक्षित स्थानीय महिलाओं में से एक थीं।

- इस दम्पत्ति ने पुणे में 1848 में बालिकाओं के लिए भारत का पहला विद्यालय स्थापित किया, जब तत्कालीन समाज में स्त्री शिक्षा को निषिद्ध माना जाता था।
- दंपति ने गर्भवती बलात्कार पीड़िताओं के लिए **"बालहत्या प्रतिबंधक गृह"** नामक देखभाल केंद्र भी खोला।
- इन्होंने अपने समय में प्रचलित सामाजिक बुराइयों जैसे बाल विवाह, बाल विधवाओं, सतीप्रथा, अछूतों द्वारा अनुभव किए जाने वाले अनुचित व्यवहार और अपमान के विरुद्ध संघर्ष किया।
- इन्होंने 1897 में पुणे में गिल्टी प्लेग (bubonic plague) के पीड़ितों के लिए एक क्लिनिक खोला, लेकिन इसी वर्ष वह इस रोग का शिकार हो गईं।
- इनकी कविताओं की दो पुस्तकें मरणोपरांत प्रकाशित हुई थीं – **काव्य फुले** एवं **बावन काशी सुबोध रत्नाकर**।

11.17. गुरु गोबिन्द सिंह की 350 वीं जयंती

(350th Anniversary of Guru Gobind Singh)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में गुरु गोविन्द सिंह की 350 वीं जयंती मनाई गई थी।

गुरु गोबिन्द सिंह के संबंध में

- ये 10वें सिख गुरु थे। इनका जन्म बिहार में हुआ था।
- इन्होंने **लंगर (सामुदायिक रसोईघर), संगत और कीर्तन (सामूहिक प्रार्थना)** जैसी एकीकरणकारी भूमिका निभाने वाली सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से पूर्ववर्ती सिख गुरुओं की शिक्षाओं को आगे बढ़ाया।
- ये कवि और दार्शनिक थे, जिन्हें **'दशम ग्रन्थ' लेखन** का श्रेय दिया जाता है, जो भजन, दार्शनिक लेखन, आत्मकथा इत्यादि के संग्रह थे।
- इन्हें **गुरु ग्रन्थ साहिब/आदि ग्रन्थ का पुनः संकलन करने का श्रेय भी दिया जाता है,** जो सिख धर्म के अन्तिम एवं शाश्वत गुरु के रूप में पूजी जाती है।
- इन्होंने अन्याय से युद्ध करने अर्थात् सामाजिक बहिष्कार के विरुद्ध संघर्ष करने तथा औरंगजेब जैसे तानाशाहों के धार्मिक उत्पीड़न के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए, **खालसा (संत सैनिकों) नामक योद्धा समुदाय की स्थापना की।**
- इन्होंने **ज़फरनामा** नाम से प्रसिद्ध औरंगजेब को लिखे अपने पत्र में मुगलों द्वारा सिखों के प्रति किए गए दुष्कर्मों की गंभीरता का निरूपण किया। इन्होंने 1705 में मुक्तसर की लड़ाई में उससे युद्ध भी किया।
- **बहादुर शाह ज़फर द्वारा इन्हें हिन्द का पीर (भारत के संत) की उपाधि दी गई।**

खालसा के संबंध में: खालसा अनुयायियों के लिए **पांच 'क' धारण करना** अनिवार्य था–

- केश (लंबे बाल) – ईश्वर द्वारा अभिप्रेत रूप के प्रति स्वीकृति दर्शाने के रूप में बालों को नहीं कटाना।
- कंघा – स्वच्छता का प्रतीक।
- कड़ा (इस्पात का कंकण) – खालसा को आत्म संयम का बारम्बार स्मरण दिलाने के लिए।
- कच्छा (घुटने तक लम्बे शॉट्र्स) – युद्ध में जाने हेतु सदैव तैयार रहने के लिए।
- कृपाण (तलवार) – स्वयं की एवं कमजोर वर्ग की रक्षा करने के लिए।

11.18. अंडमान जेल में वीर सावरकर की पट्टिका

(Veer Savarkar's plaque at Andaman jail)

- सरकार ने अंडमान निकोबार की प्रसिद्द सेलुलर जेल, जहाँ विनायक दामोदर सावरकर को अंग्रेजों द्वारा कैद किया गया था, के स्वतंत्रता सेनानी स्मारक पर उनके नाम की पट्टिका पुनः स्थापित करने का निर्णय लिया है।
- सावरकर को ही हिंदुत्व शब्द के प्रतिपादन का श्रेय दिया जाता है।
- वह एक स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक, लेखक, वक्ता और एक देशभक्त थे। उन्हें स्वातंत्र्यवीर कहा जाता था।
- वह एक भारतीय राष्ट्रवादी थे और साथ ही हिंदू महासभा नामक हिंदू राष्ट्रवादी संगठन के अग्रणी नेताओं में से एक थे।
- सावरकर ने 1905 में भारत में अभिनव भारत (मेजिनी के यंग इटली के समान) नामक अपना गुप्त क्रांतिकारी संगठन आरम्भ किया था।
- इन्होंने प्रसिद्ध पुस्तक 'भारत का स्वतंत्रता संग्राम 1857' की रचना की।

VISION IAS

11.19. रानी गैडिंल्यू

(Rani Gaidinliu)

- रानी गैडिंल्यू मणिपुर से भारत की पहली महिला स्वतंत्रता सेनानी थीं।
- वह हेराका धार्मिक आन्दोलन की एक राजनीतिक और आध्यात्मिक नेता थीं। हेराका आन्दोलन सविनय अवज्ञा आन्दोलन से प्रभावित था।
- सशस्त्र प्रतिरोध के माध्यम से, उन्होंने शीघ्र ही एक धार्मिक-स्वदेशी विद्रोह को एक क्रांतिकारी आंदोलन में रूपांतरित कर दिया।
- उनका राजनीतिक संघर्ष सत्याग्रह, अहिंसा, आत्मनिर्भरता के गांधीवादी सिद्धांतों पर आधारित था।
- उन्होंने मणिपुर क्षेत्र में गांधी जी के संदेश के प्रसार द्वारा भारत के व्यापक स्वतंत्रता आंदोलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी ।
- 1932 में 16 वर्ष की उम्र में में उन्हें गिरफ्तार कर ब्रिटिश भारत सरकार द्वारा आजीवन कारावास की सजा सुनाई गयी।
- **रानी उपाधि:** 1937 में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने उनसे शिलांग जेल में मुलाकात की और उनकी रिहाई की बात को आगे बढ़ाने का वचन दिया। इस दौरान नेहरु ने उन्हें रानी की उपाधि दी और तदुपरांत रानी गैडिंल्यू के नाम से उन्होंने स्थानीय लोकप्रियता हासिल की।
- 1947 में भारत की आजादी के बाद उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया और मृत्युपर्यंत वह लोगों के उत्थान के लिए कार्य करती रहीं।